अप्रैल 2024 से जून 2024
वर्ष 10 अंक 2 मूल्य : 50 रूपये

त्रैमासिक पत्रिका

साहित्य सरोज

RNI N0-UPHIN/2017/74520, ISSN N0-2548-0843(Print)

अश्क ठहरें भी तो कैसे?

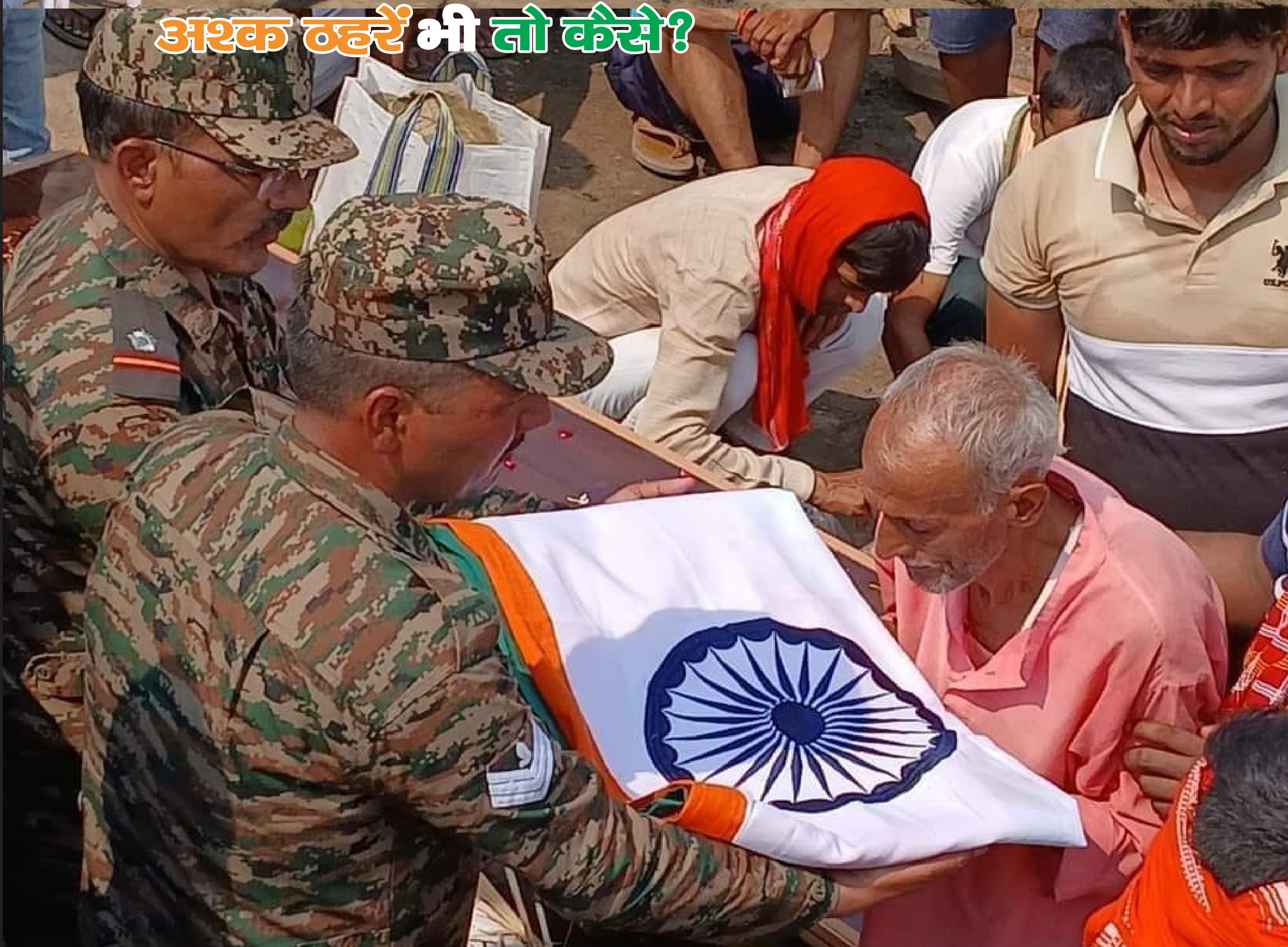

आ गया आपके लिए
स्वरोजगार का शानदार अवसर

कम पूँजी में घर से करें रोजगार, हम हैं आपके साथ

बाबा बाजार

www.bababazarindia.com

एक छत के नीचे

पूजन सामाग्री एवं गृहउद्योग वस्तु

सिनियर सिटिजन एडं ओल्ड होम केयर

सी0सी0टी0वी0कैमरा एवं वेबसाइट

शार्ट–फिल्म एवं विज्ञापन

पत्रकारिता एवं पर्यटन

प्रकाशन व प्रिटिंग

फिटनेस

www.bababazarindia.com

त्रैमासिक पत्रिका
साहित्य सरोज

वर्ष–10 अंक –2

माह अप्रैल 2024 से जून 2024

RNI No- UPHIN/2017/74520

ISSN: 2584-0843 (Print)

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

कार्यवाहक संपादक -: अखंड प्रताप सिंह

प्रधान कार्यालय -: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

पिन 232327 (उ0प्र0) मो0 9451647845

प्रधान कार्यालय प्रभारी - प्रशांत सिंह गहमर, गाजीपुर
विधिक सलाहाकार-श्री अशोक कुमार सिंह, गहमर, गाजीपुर
तकनीकि संपादक- राजीव यादव, नोएडा सक्टेर **59**

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट-:
https://www.sarojsahitya.page
https://sahityasaroj.com/

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

प्रति अंक –50 रूपये मात्र

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर
डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र –गूगल ईमेज द्वारा।

लेखकों एवं रचनाकारों से अनुरोध है कि प्रकाशन हेतु अपनी लेख/कविता/कहानी भेजते समय अपनी एक फोटो, पूरा पता एवं मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें, संभव हो तो अपने विषय वस्तु पर एक चित्र भी संलंगन करें।

पत्रिका प्रतिनिधि बनें सम्पर्क करें 9451647845

इस अंक में

लेख

सतेन्द्र कुमार पाठक बिहार 03
प्रबुद्ध घोष 06
ओम जी मिश्रा 08
नवीन कुमार जैन 12
चंद्रेश कुमार छतलानी 20
सुनील कुमार 22
रामभोले शर्मा 24
मनोज कुमार सिंह 25
नीलम नारंग 27
अर्णव खरे 29
डॉ शीला शर्मा 30
डॉ पूजा गुप्ता 31
हेंमत चौकियाल 33
सीमा रानी 37

काव्य जगत

कान्ति शुक्ला 03
रेनुका सिहं 07
कुमकुम काव्याकृति 26
रेखा दुबे 32
नीता चतुर्वेदी 35
अमित पाठक 40

कहानी

अलका गुप्ता 05
अशोक कुमार शर्मा 15
संतोश शर्मा शान 17
डॉ ज्योति मिश्रा 18
नवनीता पाडेंय 19
डॉ रेनू सिंह 23
डा अपूर्वा अवस्थी 41

किरण बाला की सम्मानित कहानी 36
सम्मानित लघुकथाएं मंजू सक्सेना, रंजना माथुर, रेणु गुप्ता, सुषमा सिन्हा 39

पत्रिका कहिन

साहित्य सरोज पत्रिका के वर्ष 10 अंक 2 में आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है। आशा है कि विगत अकों की तरह यह अंक भी आपको पंसद आयेगा। माह अप्रैल में चैतीय रामनवमी में साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा माँ कामाख्या धाम पर भक्तों के लिए आप सब के आर्थिक सहयोग से सेवा शिविर लगाया गया। जिसमें लाखों भक्तों ने आपकी सेवा का लाभ उठाया। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने अपने मिशन 400 पार में बुरी तरह पराजय पा कर भी देश में एनडीए की सरकार बनाई।

देश के युवाओं के भविष्य एवं मानव जीवन से खिलवाड़ करते हुए देश में एक बार फिर बेइमानी और पेपर लीक की गाज नीट जैसी परीक्षा में गिरी और युवाओं के साथ घिनौना मज़ाक हुआ। जिस पर सरकार की चुप्पी युवाओं में उसके प्रति नफरत का भाव पैदा कर रही है। भारत सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान काश्मीर में उग्रवादी हमला हुआ। यह हमला कैसे हुआ? किसकी गलती थी, यह पता नहीं चल पाया। पुलगामा की तरह इस हमले का भी सच देश के सामने नहीं आ पायेगा।

जून महीने में दिवसों का बोलबाला रहा। पर्यावरण दिवस, योग दिवस के साथ-साथ गंगा दशहरा पर ऑनलाइन/ऑफलाइन खूब कार्यक्रम हुए। जून जाते-जाते कप्तान रोहित शर्मा के द्वारा आस्ट्रेलिया की दुर्गत कर सेमीफाइनल में पहुँचा। आस्ट्रेलिया के खिलाफ रोहित शर्मा की पारी कोई नहीं भूल सकता। जब रोहित ने अपना अर्धशतक यनि 50 रन बनाये तो उस समय टीम का स्कोर 52 रन था। यानि कुल स्कोर 52 रन में 50 रन रोहित के। इंग्लैड़ पर लगान वसूल करने वाली जीत के साथ भारत फाइनल में पहुँचा। फाइनल मैंच में विराट कोहली की पारी ने राहुल द्रविड़ को भी पीछे छोड़ दिया। लेकिन कहते है न कि भाग्य भी बहादुरों का साथ देता है। एक समय 30 गेंद पर 30 रन की जरूरत और 7 विवेक हाथ में रखने वाला दक्षिण अफ्रीका बुमरा की बालिंग एवं सूर्य कुमार के कैच से मुकाबला 20-20 का सिरमौर भारत को बनाया। इस प्रकार अप्रैल से माह 2024 विशेष रहा। इस वर्ष इन महीनों में भारी गर्मी का विशेष प्रभाव रहा। सबने बरसात में आक्सीजन देने वाले पौधे लगाने की कसम खाई है। देखीये कसम कहाँ तक पूरी होती है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में पैसे लेकर सम्मान देने की दुकानों भारी बढ़ोतरी हुई। आप इन दुकान से बड़े आराम से सम्मान खरीद कर बड़े साहित्यकार बन सकते हैं। लेकिन पत्रिका ने ऐसे सम्मान खरीदने एवं बेचने वालों के खिलाफ एक मुहिम चला दिया है, ताकि साहित्य के नवप्रवेशी का भविष्य जिन्दा रहे। साहित्य सरोज की वेबसाइट पर ऐसे सम्मान विक्रेताओं एवं खरीदारों के खिलाफ एक मुहिम चलायेगी। हम साहित्य के इस भ्रष्टाचार को रोक पाये या न रोक पाये लेकिन इसके खिलाफ मुहिम चला कर अपनी प्रोफाइल में लम्बे लम्बे सम्मान लिख कर वास्तविक साहित्यकारों को जलील करने वाले साहित्यकार एवं संस्था जनता के सामने तो आयें।

साहित्य सरोज पत्रिका प्रसिद्ध उपन्यासकार गोपालराम गहमरी के नाम पर गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला मंच भारत के प्रत्येक शहर में स्थापित करने, फिटनेस, अभिनय, कला, स्वरोजगार से लोगों को जोड़ने एवं अपने प्रचार-प्रसार के लिए देश के 100 शहर में पहुँचेगी। हमें आशा है कि आप अपने शहर में हमारा सहयोग करेगें।

आपको बताते हुए हर्ष हो रहा है कि जुलाई माह से पत्रिका अपनी वेबसाइट पर सात दिन सात रंग नामक स्थाई स्तंम्भ शुरू कर रही है। इसमें आपको विभिन्न स्तंम्भ पढ़ने को मिलेगें, जो ज्ञानवर्धन के साथ-साथ आपका मनोरंजन भी करेगें। इसके लिए आप सादर आमंत्रित हैं।

साहित्य सरोज

"पहला सुख निरोगी काया"
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

दिव्य ज्ञान की प्राप्ति है योग

मानवीय गुणों में चतुर्दिक विकास का माध्यम योग है ।भगगवन शिव को योग का पिता कहा जाता है । भक्ति योग , कर्मयोग और ज्ञान योग से मानवीय शक्ति का चतुर्दिक विकास का माध्यम योग है ।

पुरातन काल से योग करने वाले पुरुष को योगी और महिला को योगनी कहा जाता है । योग ज्ञान से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है । अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस प्रति वर्ष 21 जून जो वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है मनाया जाता है। योग मनुष्य को दीर्घायु बनाता है। प्रथम बार योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल के लिए भारत के प्रधानमन्त्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी नें 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में विचार प्रगट किया था।

योग, ध्यान, सामूहिक मन्थन, विचार - विमर्श, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक का मंथन योग है । भारत की प्राचीन परम्परा का अमूल्य उपहार योग दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक और इंसान तथा प्रकृति के बीच सामंजस्य , विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला , स्वास्थ्य और भलाई के लिए समग्र दृष्टिकोण को प्रदान करने वाला है। संयुक्त राष्ट्र के 11 दिसंबर 2014 को विश्व योग दिवस का पारित प्रस्ताव के अनुसार विश्व के 177 देशों के सदस्यों द्वारा 21 जून 2015 को "अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस" को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली है। भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की अपील के बाद 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव को अमेरिका द्वारा मंजूरी दी थी ।

लिस्बन, पुर्तगाल के योग संघ, आर्ट ऑफ़ लिविंग फ़ाउण्डेशन और योग विश्वविद्यालय, बेंगलूर के द्वारा आयोजित किया गया। योग गुरु अमृत सूर्यानन्द के अनुसार विश्व योग दिवस का विचार 10 साल पहले आया था । भारत की ओर से योग गुरु एवं श्री श्री रवि शंकर के नेतृत्व में विश्व योग दिवस के रूप में 21 जून को संयुक्त राष्ट्र और यूनेस्को द्वारा घोषित करने के लिए हस्ताक्षर किए गए थे । विज्ञान सम्मेलन में श्री श्री रवि शंकर, संस्थापक, आर्ट आफ़ लिविंग आदि चुन चुन गिरि मठ के श्री स्वामी बाल गंगाधरनाथ, स्वामी पर्मात्मानन्द, हिन्दू धर्म आचार्य सभा के महासचिव बीकेएस अयंगर, राममणि आयंगर मेमोरियल योग संस्थान, पुणे स्वामी रामदेव, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार, डा० नागेन्द्र, विवेकानन्द योग विश्वविद्यालय, बंगलुरू, जगत गुरु अमृत सूर्यानन्द महाराज, पुर्तगाली योग परिसंघ के अध्यक्ष,अवधूत गुरु दिलीपजी महाराज, विश्व योग समुदाय, सुबोध तिवारी, कैवल्यधाम योग संस्थान के अध्यक्ष, डा डी०आर का तकेयन, कानून-मानव जिम्मेदारियों व कारपोरेट मामलों के सलाहकार

और डा0 रमेश बिजलानी, श्री अरबिन्दो आश्रम, नई दिल्ली शामिल थे ।

प्रधानमन्त्री मोदी के प्रस्ताव का नेपाल के प्रधान मंत्री सुशील कोइराला , संयुक्त राज्य अमेरिका सहित 177 से अधिक देशों, कनाडा, चीन और मिस्र आदि ने समर्थन किया है। ”अभी तक हुए किसी भी संयुक्त राष्ट्र महासभा के संकल्प के लिए यह सह प्रायोजकों की सबसे अधिक संख्या है। 11 दिसम्बर 2014 को 193 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्वसम्मति से 'योग के अन्तरराष्ट्रीय दिवस' मनाने 21 जून को स्वीकृति दी गयी थी ।

भारत में पहले अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 2015 को विश्व योग दिवस को यादगार बनाने और पूरे विश्व को योग के प्रति जागरूक करने के लिए 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के सफल होने के साथ विश्व रिकार्ड कायम कर लिए थे । प्राचीन काल से सनातन धर्म के महर्षियों ,साधु - संतों द्वारा योग को अपनाया जाता रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता में योग को प्रदर्शित करती हुई मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि योग 10,000 वर्ष पूर्व से किया जा रहा है। मुनि, साधु प्रायः परमात्मा प्राप्ति के लिए हठयोग किया करते थे।

सतेन्द्र कुमार पाठक
कालपी, औरंगाबाद

ग़ज़ल

प्यार का नूर जा-ब-जा समझे ।
आग को ओस की रिदा समझे ।

ख़ार कितने चुभा दिए तूने
हम तुझे फूल की क़बा समझे ।

रात भारी रही सदा हम पर
चाँद को हम हंस बला समझे ।

किस क़दर ढूँढ़ते फिरे मंज़िल
कौन अपना ये जख़्मे-पा समझे ।

वो न उमड़ी न ही बरसती थी
हम जिसे सावनी घटा समझे ।

दौर ऐसा कि हम अँधेरे में
आह को चीखती सदा समझे ।

पोंछ ली आँख से नमी अपनी
दोस्त की बद्दुआ दुआ समझे ।

पार होना नहीं रहा मुमकिन
कागजी नाव नाखुदा समझे ।

छोड़कर चल दिया हमें तनहा
ज़िंदगी है कड़ी सजा समझे।

कान्ति शुक्ला
भोपाल, प्रधान संपादिका
साहित्य सरोज

आज़ादी

प्रतिदिन सुबह-शाम रोशन और उसका जर्मन शेफर्ड, "अरे कुत्ता नहीं बोल सकते भाई, कुछ पर्टीकुलर सोसाइटीज में इंसान को कुत्ता बोल सकते हैं, परन्तु पालतू कुत्तों को कुत्ता बोलना अपराध माना जाता है" जिसका नाम प्रिंशु था, बड़ी शान से दोनों,सुबह शाम सैर पर निकलते। प्रिंशु मोहल्ले के दूसरे कुत्तों को चिढ़ाता हुआ सा ,बड़ी अकड़ से, शान से महंगी सी चैन से बंधा रोशन के इशारों का पालन करता हुआ चलता ।एक दिन उसने देखा कि दो कुत्ते एक दूसरे के साथ खेल रहे थे। प्रिंशु को अक्सर वह दोनों एक दूसरे के साथ खेलते कूदते मिलते। उनको देखकर प्रिंशु के अन्दर स्वाभाविक इच्छा जागृत हो गई। अब उसका भी मन होता कि वह भी उनके साथ खूब खेले कूदे । एक बार उसने कोशिश भी की। परंतु उसको रोशन की जोरदार डांट पड़ी कि उसे इन आवारा कुत्तों से दूर रहना चाहिए ,तो वह शांत हो गया ।

प्रतिदिन उसका मन उन मोहल्ले के कुत्तों के साथ स्वच्छंदता से भागने दौड़ने का मन करता था। फिर एक दिन तो प्रिंशु ने अपनी लगाम को रोशन के हाथ से लगभग छूट ही गया था ।परंतु उसको इसकी बहुत बड़ी सजा मिली ।उसका सैर पर आना-जाना बंद कर दिया गया ।मोहल्ले का एक दूसरा कुत्ता जिसका नाम शेरू था , जो अक्सर प्रिंशु के ठाठ- बाट देख कर अपनी किस्मत पर दुःखी होता था। परन्तु अगले ही पल वह अपने दिमाग़ को वहां से हटाकर ,दूसरे कुत्ते कालू के साथ उछलने - कूदने लगता । अब, जब दो-तीन दिन उसे प्रिंशु दिखाई नहीं दिया तो अनायास ही शेरू को उसकी चिंता हुई। बेशक उन दोनों की कभी बात नहीं हुई थी ,लेकिन थे तो दोनों एक जैसे ही, भाई- भाई।जब शेरू से रहा नहीं गया तो अगले दिन रोशन का पीछा करते-करते शेरू उसके घर तक पहुंच गया ।

वहां उसने देखा कि प्रिंशु एक छोटे से , मगर बहुत सुंदर से बगीचे में बूढ़ी दादी के पास उदास सा बैठा था। उसकी चमक खो सी गई थी । दादी उसको कुछ खिलाने, पिलाने की नाकाम कोशिश कर रहीं थीं। उसने जैसे ही शेरू को देखा उसकी बांछें खिल गईं। वह दौड़ कर बड़े से लोहे के दरवाज़े के पास आ गया । क्योंकि दरवाज़ा बन्द था, तो उसकी जाली में से ही दोनों ने बातचीत की।"क्या हुआ दिख नहीं रहे आजकल तुम ठीक तो हो न"शेरू ने बड़ी आत्मीयता से पूछा । प्रिंशु को लगा, जैसे आज पहली बार किसी अपने ने उसका हाल पूछा हो । वह सुनकर भावुक हो गया , और आंखें भर आईं । अपने को सम्हालते हुए प्रिंशु बोला"बोला दोस्त मैं तुम्हारे साथ खेलना कूदना मस्ती करना चाहता हूं ।मेरा दम घुटने लगा है अब यहां, ये स्वर्ग भी अब नरक जैसा लगता है। तभी शेरू बोला "अरे तुम यह क्या कह रहे हो, तुम तो कितने किस्मत वाले हो जो इतना ध्यान रखने वाले मालिक , इतना एशो आराम, गर्मी लगे तो ऐ .सी, ठंड लगे तो हीटर, भूख लगे तो मनचाहा भोजन, कहीं जाना हो तो बड़ी सी गाड़ी, ध्यान रखने के लिए नौकर चाकर। फिर भी तुम दुःखी हो ?एक हम हैं, सारा दिन यहां से वहां बस दौड़ते रहते हैं। भूखे हैं ,प्यासे हैं कोई पूछने वाला नहीं ।कोई दे देता है तो खा लेते हैं ।वहीं सड़कों पर ऐसे ही ज़िंदगी बिता देते हैं।"

दोस्त कुछ भी हो, लेकिन तुम अपनी ज़िंदगी के खुद मालिक हो, और मेरा मालिक कोई और है। सोने में लिपटी गुलामी की लंबी जिंदगी से अच्छा है, खुले आसमान के नीचे एक छोटा सा बिंदास जीवन। तुम्हें इस स्वतंत्रता की कीमत का एहसास नहीं इसकी कीमत तो मुझ जैसे गुलाम से ही पूछो " प्रिंशु के यह शब्द शेरू के दिल के आर पार हो गए। अब तक उसे प्रिंशु के भाग्य से जलन हो रही थी लेकिन आज वह अपने भाग्य पर इतरा रहा था । आज उसे अपनी आज़ादी पर गर्व हो रहा था।लेकिन इसके साथ ही प्रिंशु के लिए बहुत दुःखी भी था।उस दिन के बाद शेरू, कालू और उनके अनेक मित्र प्रिंशु के घर के सामने खेलते कूदते और मौका पाकर प्रिंशु भी मौके पर चौका मार लेता।

अलका गुप्ता
नई दिल्ली
89204 25146

लिथोग्राफी कार्यशाला

इंडियन नेशनल फोरम ऑफ आर्ट एंड कल्चर (INFAC –एनएफएसी), 2005 में स्थापित एक सार्वजनिक ट्रस्ट, भारत में कलात्मक प्रचार और सांस्कृतिक संवर्धन का एक प्रतीक रहा है। जैसे ही वे अपने १९ वें वर्ष को समाप्त कर रहे हैं और अपने २०वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, INFAC ने पूरे जून और जुलाई 2024 में जश्न मनाने वाले कार्यक्रमों की एक श्रृंखला की योजना बनाई है। ये उत्सव पूरे देश में दृश्य और प्रदर्शन कला को बढ़ावा देने के लिए INFAC की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। हालाँकि INFAC कोलकाता, पश्चिम बंगाल में स्थित है, वे अखिल भारतीय आधार पर काम करते हैं।समारोह का उद्घाटन करने के लिए, INFAC प्रसिद्ध स्टूडियो 'लिथोस ग्राफीन' में लिथोग्राफी प्रिंटमेकिंग पर एक कार्यशाला की मेजबानी कर रहा है, जिसका अर्थ है 'मैं पत्थर पर लिखता हूं।' यह कार्यक्रम समकालीन प्रिंटमेकिंग कलाकार बिनीता बंद्योपाध्याय द्वारा संचालित किया जाएगा। झारखंड में ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन में सहायक प्रोफेसर बिनीता ने कला भवन, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल से ग्राफिक्स और प्रिंटमेकिंग में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। बिनीता बंद्योपाध्याय प्रतिभागियों को लिथोग्राफिक प्रिंटमेकिंग के विस्तृत चरणों के माध्यम से नेतृत्व करेंगी और सिखाएंगी, एक कला जो एक पत्थर को जटिल प्रिंट के लिए एक माध्यम में बदल देती है। इस प्रक्रिया में शामिल हैं, पत्थर तैयार करना (पत्थर को पीसना, दानेदार बनाना और फ्रेम बनाना) ड्राइंग (पत्थर पर सीधे कलाकृति का उल्टा रूप बनाना), कई उपचारों के साथ-साथ आवश्यक कदम जैसे स्याही लगाना, प्रूफिंग करना आदि। अंतिम निष्पादन.भारतीय कला इतिहास में लिथोग्राफी का विशिष्ट स्थान है। जबकि टाइपोग्राफी ने विश्व स्तर पर गति प्राप्त की, लिथोग्राफी भारत में एक पसंदीदा तकनीक बन गई, जो आज दुनिया भर में सबसे बड़े प्रिंट बाजारों में से एक है। प्रारंभ में कला को पुनः प्रस्तुत करने का एक साधन, लिथोग्राफी एक महत्वपूर्ण कला रूप में विकसित हुई है, जो एक कला माध्यम के रूप में प्रिंट के क्षितिज का विस्तार करने में टाइपोग्राफी, स्क्रीन प्रिंटिंग, इंटैग्लियो और त्रिगुण आयाम (त्रिमात्रिक)प्रिंटिंग के साथ-साथ बैठती है।

समय के साथ, लिथोग्राफी एक पुनरुत्पादन विधि से कला के समकालीन माध्यम में परिपक्व हो गई है, जिससे संग्राहकों और पारखी लोगों की रुचि बढ़ गई है। हालाँकि, पारंपरिक अभ्यास को प्लेट-लिथोग्राफी से चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो एक अधिक उपयोगकर्ता-अनुकूल विकल्प है। इसकी सुविधा के बावजूद, बिनीता बंद्योपाध्याय सहित कई पारंपरिक लिथोग्राफी कलाकार, पारंपरिक लिथोग्राफी की समृद्ध विरासत और प्रामाणिकता को महत्व देते हुए, इस बदलाव का विरोध करते

हैं।INFAC के ट्रस्टी, जयंत खान ने अपने दिवंगत संस्थापक, तापस गण चौधरी के दृष्टिकोण का सम्मान करते हुए, कला को बढ़ावा देने के लिए दो दशकों तक संगठन के समर्पण पर जोर दिया। खान ने दृश्य कलाकारों की प्रतिभा को पोषित करने और कला को सभी के लिए सुलभ बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। लिथोग्राफी कार्यशाला उनके उत्सव कार्यक्रमों की शुरुआत का प्रतीक है।प्छथ।ब् की सालगिरह का जश्न कलाकारों के शिविर के साथ जारी रहेगा, जो समकालीन कला और संस्कृति के लिए उनके दृढ़ समर्थन को प्रदर्शित करेगा। पिछले दो दशकों में, INFAC के प्रयासों ने कला समुदाय में रचनात्मकता और सांस्कृतिक प्रशंसा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।जैसे ही INFAC अपने २०वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, उनकी पहल भारत के जीवंत कलात्मक परिदृश्य को और समृद्ध करने का वादा करती है। बिनीता बंद्योपाध्याय की लिथोग्राफी कार्यशाला न केवल माध्यम के ऐतिहासिक महत्व का सम्मान करती है बल्कि समकालीन कला में इसकी निरंतर प्रासंगिकता भी सुनिश्चित करती है।

प्रबुद्धो घोष

पूना, महाराष्ट्र

98227 50256

रिश्ते

ये नाते ये रिश्ते
ये सम्बन्ध ये फरिश्ते
कुछ असली
कुछ नकली

ये मोह के रिश्ते
कुछ तोड़ के रिश्ते
कुछ जोड़ के रिश्ते
कुछ सोच के रिश्ते

कुछ स्वर्ग से आते
कुछ हम बनाते
कुछ खून के रिश्ते
कुछ बनाये हुए रिश्ते

पालना सबको पड़ता है
संजोना सबको होता है
खाद पानी यानी प्यार दुलार
डालना होता है

स्नेह की बारिश से
सींचना होता है
समय रूपी खाद
डालना होता है

स्वार्थ का मोह
छोड़ना होता है
दूसरों का भी कुछ
सोचना होता है
फिर देखो रिश्ते
कैसे निखरते है
सबके साथ से
कैसे संवरते है

रेनुका सिंह

लखनऊ,

प्र०सं० साहित्य सरोज

विजय शंकर मिश्र : व्यक्तित्व भी कृतित्व भी

भारतीय पौराणिक प्रज्ञा को आधुनिक संदर्भों में समाजोपयोगी रूप में प्रस्तुत करनेवाले,तटस्थ समीक्षक , लेखक, कालजयी लेखनी के माध्यम से एक भारत-श्रेष्ठ भारत,अखंड भारत-अतुल्य भारत,विश्वगुरु भारत - स्वर्ण विहग भारत के महान गायक कविप्रवर विजय शंकर मिश्र 'भास्कर' का जन्म पाँच जुलाई उन्नीस सौ पचपन ई.को आदिगंगा गोमती के उत्तरी तट से दस किमी दूरी पर जनपद सुलतानपुर के ग्राम समुदा पत्रालय गौराटिकरी तहसील कादीपुर विकास खंड करौंदीकला में स्व.सुखपत्ती देवी एवं स्व. पंडित राम अकबाल मिश्र के पुत्र के रूप में हुआ था।

संस्कार संपन्न परिवार से बालक विजय शंकर को श्रेष्ठ संस्कार मिले। पिताश्री भागवतनिष्ठ पंडित थे और माता स्वधर्म पालिका गृहिणी।पूर्णमासी को सत्यनारायण व्रतकथा सुनती थीं और ब्राह्मणों को भोजन कराकर ही आहार ग्रहण करती थीं।आपने निकटस्थ विद्यालयों से बी.एस.सी.तक शिक्षा प्राप्त की। बागवानी,कविता पाठ और रामलीला देखना आपकी अभिरुचि रही। आपने बंगाल जाकर बिरला कहलेज आफ साइंस एंड एजूकेशन कोलकाता से बी.एड्.का प्रशिक्षण प्राप्त किया और लगभग सात वर्षों तक बंगाल के हावड़ा जनपद स्थित सेंट एलहएशिएस स्कूल में गणित-विज्ञान शिक्षक के रूप में सेवा प्रदान किया।तदुपरांत रामयश रामनिधि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मझगवाँ सुलतानपुर (उ.प्र.) में बत्तीस वर्षों तक सेवा पूर्ण करके सेवानिवृत्त हुए।बीच-बीच में अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद से हिंदी और संस्कृत में परास्नातक उपाधि भी प्राप्त की।विज्ञान का विद्यार्थी और शिक्षक होने के बावजूद कवि ने प्राचीन भारतीय साहित्य का गहन मनन-चिंतन कर हिंदी साहित्य को संस्कृतिपरक अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रदान किया है।

सनातन भारतीय संस्कृति के मंडन में कवि का मन रमता है और श्रेष्ठ भारत के गौरवगान में कवि का प्राण जीवंत हो उठता है।प्रकृति पग-पग पर उसकी काव्य-संगिनी बन जाती है और भारत के संस्कृति पुरुष श्री राम और उनके दासों की झलक कवि की कृतियों में रूपायित होती रहती है।कवि का मिलनसार स्वभाव उसे विरासत में मिला है।एक बार जो संपर्क में आया वह सदा-सर्वदा के लिए इनका हो जाता है।ये गुणज्ञजनों का खुलकर समादर करते हैं,अपनी विनम्रता से सबको वशीभूत कर लेते हैं।कवि ने शांतिकुंज हरिद्वार की नवसृजन परंपरा से प्रेरित होकर ग्रामांचल में दो शिक्षण संस्थाओं की स्थापना भी किया है।

कवि अखिलविश्व गायत्री परिवार का सदस्य है और उसकी प्रथम काव्यरचना 'श्री गुरु चालीसा' है जो गायत्री परिवार के अधिष्ठाता पं.श्रीराम शर्मा 'आचार्य' को समर्पित है।कवि अपनी काव्यप्रतिभा को गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य' जी की ही कृपा मानता है।

सेवानिवृत्ति के पूर्व कवि की लेखनी 'श्री गुरु चालीसा, श्री राम चालीसा और गोपाल चालीसा तक ही सीमित रही।विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वह स्वागत-गीत और भाषण एकांकी इत्यादि के लेखन तक ही सीमित रहा।सेवानिवृत्ति के बाद उसके गुरु ने उसे गुरुतर कार्य प्रदान किया और वह प्रबंधकाव्य के सृजन की ओर अग्रसर हो गया।उसने स्तोत्र काव्य के रूप में अवधी भाषा में 'हरिः शरणम्' और 'जोहारी तोहैं बजरंगी' की रचना की।'जोहारी तोहैं बजरंगी' स्तोत्र काव्य पर उसे राष्ट्रकवि पं.वंशीधर शुक्ल स्मारक एवं साहित्य प्रकाशन समिति लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) द्वारा 'अवधी वारिधि' उपाधि प्रदान की गई।

इसी बीच कोरोना काल आ गया।इस कालखंड में उसने अपनी कोठरी को साधनाकक्ष बना लिया और गाउँ हमार देस हमार,जीवन बोध,कोरोना कालम् जैसे लघुसंग्रह लिखे।वनदेवी,विप्रवरेण्य सुदामा, रुक्मिणी मंगल,राघव चरित,युग ऋषि,बलि उत्सर्ग,रामदूत जैसे चरित्र प्रधान खण्डकाव्य कोरोना काल में ही सृजित हुए।उन्होंने पंचकन्याओं अहिल्या, मंदोदरी, तारा, कुंती और द्रौपदी पर सक्षम लेखनी चलाई और यशोदा के मातृत्व की प्रतिष्ठा में लघुकाव्य की रचना की।भारतीय संस्कृति में चिरस्मरणीय अष्ट चिरंजीवियों अश्वत्थामा, बलि,व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, वेदव्यास तथा परशुराम को अपने सृजन से प्राणवंत किया साथ ही साथ देहदानी दधीचि को भी महिमामंडित किया।भरत चरित, देवरहा बाबा,रुक्मिणी मंगल और उद्धवगीता की भी रचना हुई।पौराणिक देवता आदिपूज्य गणेश पर भी सुंदर खण्डकाव्य सृजित किया।इसमें गणेश की बाललीला और उनके अद्भुत पराक्रम का सरस वर्णन हुआ है।कवि में प्रबंधकाव्य सृजन की विलक्षण क्षमता के दर्शन होते हैं।रणधीर सुमित्रानंदन,स्कंद-विजय, विजयपथ,भए प्रगट कृपाला और

शकुंतला ऐसे ही मनोहर और मनमुग्धकारी सृजन हैं।लगता है कि कवि को कालिदास बहुत प्रिय हैं।जहाँ विजयपथ में रघुवंशम् की कुछ कथाएँ हैं तो वहीं वाल्मीकीय रामायण के प्रसंग श्री राम के विजयपथ में बड़ी निपुणता के साथ समाहित हो गए हैं।कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तल पर आधारित शकुंतला, कुमारसंभव पर आधारित स्कंदविजय और मेघदूत पर आधारित यक्षप्रिया बहुप्रशंसित और आदरित ग्रंथ हैं।भए प्रगट कृपाला में श्रीरामजन्मभूमि की पाँच सौ वर्षों की संघर्ष गाथा है और मंदिर निर्माण तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है।इसमें श्री राम की वंशावली और उनके प्रमुख पूर्वजों का यशोगान भी हुआ है।भए प्रगट कृपाला को अनेकानेक प्रतिष्ठित संस्थाओं ने सम्मानित किया है।आचार्य अकादमी चुलियाणा हरियाणा द्वारा भए प्रगट कृपाला को वर्ष २०२३ में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।कवि की सभी रचनाएँ अनेक साहित्यकारों,भक्तों और संतों द्वारा प्रशंसित हुई हैं।

राष्ट्रीय पत्रिका चेतनता के सितंबर २०२० में शकुंतला की समीक्षा करते हुए महामहोपाध्याय प्रो.जयप्रकाश नारायण द्विवेदी 'विद्यावाचस्पति' अपने समीक्षात्मक आलेख 'लोकोपादेय कृति शकुंतला' के सारांश में लिखते हैं कि,"निष्कर्षतः निस्संकोचभावेन यह कहा जा सकता है कि रामकथा की परंपरा में लगभग तीन सौ रामायणों के बावजूद रामचरितमानस को जो गौरव प्राप्त है; अभिज्ञानशाकुन्तलं के ऊपर शताधिक ग्रंथों के रचे जाने के बावजूद भास्कर द्वारा प्रणीत 'शकुंतला' को वही गौरव प्राप्त होना चाहिए जो काल की अव्यवहित अपरिच्छिन्न गति के साथ सज्जनों की मैत्री एवं पूर्वाह्न में सर्वजनहिताय समुदीयमान भगवान भुवन भास्कर की तेजस्विता को नित्य प्राप्त होती है।

राष्ट्रीय पत्रिका चेतनता अंक ११-१२ ईसवी सन् २०२२ में डॉ.गोरखनाथ मिश्र 'उत्कृष्ट श्लाघ्य रचना -स्कन्द विजय' शीर्षक के अंतर्गत पृष्ठ १६७ पर लिखते हैं,"शब्दों का चयन संदर्भानुकूल है।भाषा प्रांजल है,मँजी हुई शैली है और कवि की सृजनात्मक कल्पना में काव्यात्मक परिपक्वता है।डॉ. विद्यानंद ब्रह्मचारी,संस्थापकाध्यक्ष रामायण प्रचार समिति खगड़िया (बिहार) 'राघव चरित' को रमणीय रचना मानते हुए अपना अभिमत देते हैं कि," सुकवि भास्कर जी द्वारा 'राघव चरित' काव्य बहुत कारगर है।इनके अंतःकरण में कविता रचने की शक्ति विद्यमान है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण राघव चरित काव्यग्रंथ पाठकों के अक्षों के समक्ष उपस्थित है।इनकी कविता में सरसता और मोहकता कूट-कूटकर भरी है।

'केरलज्योति' मासिक पत्रिका के मुख्य संपादक प्रो.डी. तंकप्पन नायर 'युगऋषि' पर अपना अभिमत प्रदान करते हुए लिखते हैं,"भारतीय संस्कृति की सनातन विचारधारा 'विश्व एक परिवार' तथा 'सभी सुखी सभी रोगरहित हों' के प्रबल समर्थक श्री विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' जी द्वारा प्रणीत एक लघु किंतु गरिमामय काव्य है 'युगऋषि'।काव्य का नाम सार्थक करनेवाली यह रचना गुरुवर आचार्य श्रीराम शर्मा का जीवनचरित है और उनको सहयोग देनेवाली उनकी धर्मपत्नी की कीर्तिगाथा भी है।दोनों के उदात्त जीवन की प्रेरणादायक तेजोमय झाँकी प्रस्तुत काव्य में मिलती है।"

अधिवक्ता मधु.बी.मंत्री,केरल हिंदी प्रचार सभा तिरुवनंतपचरम् लिखते हैं कि मुख्य संपादक प्रो.डी. तंकप्पन नायर के सौजन्य से मुझको पं. विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' द्वारा रचित प्रेरणादायक काव्य पढ़ने का अवसर मिला। इस लघु काव्य के पन्नों से गुजरकर मैंने स्वयं धन्यता का अनुभव किया क्योंकि इसमें उन्होंने युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्माजी के जीवन वृत्तांत काव्यरूप में लोकहित को दृष्टि में रखते हुए किया है।इसमें दो राय नहीं है कि उपासना के मार्ग में उन्नति पाने के लिए सद्गुरु के मार्गदर्शन अत्यंत अपेक्षित हैं।विजयशंकर मिश्र जी को अर्जित पुण्यों के कारण ही उनको अपने परम गुरु श्रीराम शर्मा के शिष्य होने का सौभाग्य मिला है।डॉ.अवधेश चंसौलिया 'रुक्मिणी मंगल' खण्डकाव्य को प्रेम का अद्भुत रूप मानते हैं और इसकी समीक्षा के उपरांत लिखते हैं,"भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टिकोण से समीक्ष्य खण्डकाव्य बेजोड़ है, इसमें कोई संदेह नहीं।भावपक्ष एवं कलापक्ष का ऐसा अद्भुत संयोजन कम ही देखने को मिलता है।यह काव्य श्रद्धा, प्रेम, त्याग और समर्पण का स्रोत है।चिरकुमारी कुंती पर प्रो.कांतिकुमार तिवारी,पूर्व प्राचार्य-पूर्व कुलसचिव डह.हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.) ने अपना अभिमत इस प्रकार दिया है,

"विद्वान कवि ने प्रस्तुत खण्डकाव्य में सुख दुख की गहराइयों को झाँका है।उनकी कसौटी, प्रामाणिकता तथा उपादेयता को निर्दिष्ट किया है।सुख दुख की जोड़ी है,ये सिक्के के दो पहलू हैं,सबके जीवन में यह चक्र चलते रहता है।महाकवि भास नाटक स्वप्न वासवदत्ता में कहते हैं,'कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाचंद्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।'दुःख में धीरज, सुख में उद्विग्नता से बचने का संदेश कविभूषण ने माता कुंती की चरित्रगाथा से दिया है।"

'भए प्रगट कृपाला' के विषय में अपनी सम्मति प्रदान करते हुए साहित्यभूषण डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ' लिखते हैं कि यह महाकाव्य रामजन्मभूमि विषयक लम्बे संघर्ष से लेकर मंदिर निर्माण तक की यात्रा का एक प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज ही बन गया है। कृतिकार की प्रभु श्रीराम के प्रति प्रगाढ़ और अखण्ड निष्ठा के कारण कथावस्तु के संगठन में किंचित् बिखराव और यत्र-तत्र दुहराव भी झलकता है,परंतु समग्र प्रभाव की दृष्टि से वह नगण्य है। कवि का अवधी और खड़ीबोली पर अखण्ड अधिकार है,उसमें यथास्थान उर्दू,अँग्रेजी आदि के प्रचलित शब्दों का खुलकर व्यवहार हुआ है।मात्रिक तथा वर्णिक छंदों का साधिकार सहज प्रवाही प्रसाद,ओज एवं माधुर्य गुण समन्वित शैली में सफल निर्वाह हुआ है।परधानी की भूमिका में श्री रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध' (कोलकाता) का स्वस्ति-वचन उल्लेखनीय है।उसके कुछ अंश निम्नलिखित हैं,

"परधानी' श्री विजय शंकर मिश्र 'भास्कर' जी की नवीनतम काव्य-कृति है।मिश्र जी उर्वर प्रतिभा के कवि हैं।अब तक उनकी उनचास पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'परधानी' उनकी पचासवीं प्रकाशित पुस्तक है।भारतीय काव्यशास्त्रियों के अनुसार एक कवि में दर्शन और वर्णन के गुण होने चाहिए।मिश्र जी में ये दोनों गुण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।'परधानी' के बहाने कवि ने गाँवों के बदलते परिवेश, स्वभाव, चरित्र, मनोवृत्ति, स्वार्थ और प्रवृत्ति आदि पर भी पैनी दृष्टि डाला है।आज भोले समझे जानेवाले ग्रामीणों के सोच-विचार का क्या स्तर रह गया है, उनमें स्वार्थ की प्रवृत्ति कितनी गहरी हुई है;आदि के वर्णन में कवि के मन की पीड़ा भी व्यंजित है।छोटे-मोटे स्वार्थ की सिद्धि के लिए आज ग्रामवासियों में नाते- रिश्तों का कोई मूल्य नहीं रह गया है।मानवीय मूल्यों का यह क्षरण भयानक है।कहना न होगा कि रचनाकार मिश्र जी कटाक्ष और व्यंग्य करने की कला में निष्णात हैं।उनकी भाषा चुलबुली,चुहलभरी, मनोरंजक एवं विषय और पात्र के अनुकूल है।ध्वन्यात्मक शब्दों, अलंकारों, मुहावरों और कहावतों से समृद्ध है।"

व्यंग्य काव्य परधानी पर डॉ.रामप्यारे प्रजापति का अभिमत है कि,"कवि ने अवधी भाषा के साथ व्यंग्यात्मक और चुटीली काव्यशैली का प्रयोग करके काव्य को जीवंत कर दिया है।शब्दों का सुंदर संगुंफन,आंचलिक वेधक शब्दावली, तर्क पर तर्क,चुनाव प्रचार का घिनौना परिदृश्य, हार की जीत से भाषा प्राणवान हो गई है।लोकगीत, चैता, आल्हा आदि विधाओं के समावेश से काव्य में रसानुभूति स्वतः बढ़ गई है।कुल मिलाकर भास्कर जी एक सधे-मजे गाँव की रीति-नीति के पारंगत लेखक और कवि हैं।लगता है वे इस कुव्यवस्था के परिवर्तन के लिए प्राणपण से लालायित हैं।'परधानी' शासन और प्रशासन की आँख खोलने का दस्तावेज है।"

डॉ ओंकार नाथ द्विवेदी,संपादक अभिदेशक पत्रिका,सुल्तानपुर ने परधानी कृति पर अपना अभिमत निम्नवत् प्रदान किया है, "महाकवि विजय शंकर मिश्र भास्कर जी की प्रस्तुत कृति 'परधानी' चुनाव पर केन्द्रित हास्य व्यंग की शैली में पाठकों के अन्तर्मन को खूब गुदगुदाती है ,साथ ही विसंगतियों, मानसिक विकृतियों और चुनावी साजिशों के चक्रव्यूह का पर्दाफाश भी करती है।लोकोक्तियों की पीठिका पर इस कृति की विषयवस्तु का चित्रण सहज स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया गया है।भाषा,भाव और छान्दिक कसाव के निकष पर प्रस्तुत कृति का प्रभाव अपनी वेधक क्षमता के कारण अन्यतम प्रतीत होता है।"

साहित्यभूषण डॉ.सुशीलकुमार पाण्डेय 'साहित्येंदु' ने कवि की रचनाओं का समीक्षण करवाया है और उनके अनुसार,"भास्कर की रचना में भावभंगिमा की विविधता,भाषा की सहजता-सरलता और शैली की यथावसर समुचित प्रवाहमयता साहित्य संसार का अक्षय कोश है।उनकी पौराणिक पृष्ठभूमि की रचनाओं में वर्तमान युगबोध कालसापेक्ष रूप से परिलक्षित होता है।भास्कर की कविता काव्यशास्त्रीय मान्यताओं की पृष्ठभूमि में मानसरंजिनी और मानवशास्त्रीय दृष्टि से संजीवनी है।

खंडकाव्य-स्कंदविजय की समीक्षा में इंदौर की प्रखर कवयित्री वर्षा अग्निहोत्री का मंतव्य है कि 'स्कन्द विजय' खंडकाव्य कुमार कार्तिकेय द्वारा तारकासुर पर विजय प्राप्त करने के कथानक पर केंद्रित है जो कि महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'कुमार संभव' का हिंदी भाव पद्य रूपांतर है जिसकी भाषा अत्यंत सरल,सरस एवं सुरुचिपूर्ण है।कविकुल दीपक 'भास्कर' जी काव्य प्रतिभा के धनी हैं।हिंदी और संस्कृत भाषा पर उनकी समान पकड़ है।अभी तक उनकी लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा वे अभी भी निरंतर लेखन कार्य में संलग्न एवं सक्रिय हैं।उनकी काव्य कृतियों से उनकी धर्मनिष्ठा एवं राष्ट्र भक्ति की भावना परिलक्षित होती है।भास्कर विरचित लगभग सभी कृतियों पर देश भर के विद्वानों की सारगर्भित सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं।

उ.प्र.हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा सन् २०२१ में श्री

विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' को 'साहित्यभूषण सम्मान' देकर अलंकृत किया गया है।इसके अलावा भास्कर जी एक तटस्थ समीक्षक हैं और आपकी तलस्पर्शी समीक्षा समादर की पात्र है।आपने सुलतानपुर के अभिदेशक पत्रिका के संपादक डह्. ओंकारनाथ द्विवेदी रचित अप्रतिम ब्रजभाषा काव्य 'ब्रजविलास' की और श्रीनारायण लाल 'श्रीश' रचित खण्डकाव्य 'अतुल्य शास्त्री जी' एवं कलाधर कृष्ण शतक की,सुलतानपुर के ही श्री हनुमान प्रसाद सिंह 'अभिषेक' विरचित श्रीमद्भगवद्गीता के उत्कृष्ट अवधी पद्यानुवाद 'श्री गीता' की,कौण्डिन्य सेवा समिति कादीपुर, सुलतानपुर के संस्थापक साहित्यभूषण डॉ.सुशीलकुमार पाण्डेय 'साहित्येंदु' रचित भारतीय संस्कृति की जीवनी विद्या के दर्पण 'योग तत्व चिंतन',शब्द कहे आकाश,महाकाव्य कौण्डिन्य एवं अगस्त्य तथा लखनऊ के रससिद्ध महाकवि साहित्यभूषण डह्. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' के अनुपम स्तोत्र काव्य हनुमत हुंकार,धर्मरथी,छंद लहरी 'क्रांतिवीर भगत सिंह' एवं कोमल हृदय का राग गानेवाले गीतकार प्रो.विश्वंभरनाथ शुक्ल के 'शब्दों की तरणी लहरों पर' एवं 'वंदे भारत मातरम्' और डॉ. अर्जुन पाण्डेय के अवधी कहानी संग्रह 'जब जागै तबै सबेरा' की समीक्षा किया है और साथ ही साथ कोलकाता के प्रख्यात साहित्यकार श्री रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध' प्रणीत महाकाव्य 'राष्ट्र पुरुष नेताजी सुभाषचंद्र बोस',और नेत्रभंग खण्डकाव्य एवं खुदीराम बोस सेंट्रल कह्लेज-कोलकाता की हिंदी विभागाध्यक्ष डह्.शुभ्रा उपाध्याय की कृति -'समानांतर चलती एक लड़की' की,देवरिया की सशक्त कवयित्री सुनीता सिंह 'सरोवर' की कृति 'श्रेष्ठ सनातन संस्कृति के निर्माण में संतों का योगदान' जैसी श्रेष्ठ रचनाओं की श्लाघ्य समीक्षा किया है। आप साहित्यसृजन में निरंतर लगे हुए हैं।आपकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं और साहित्य पटलों पर प्रकाशित होती रहती हैं।आप लघुकथा,लघुनाटिका और कहानी लेखन में भी प्रवीण हैं।आपके आलेख और संस्मरण मन को मुग्ध कर देते हैं।सोनार बाँग्ला संस्मरण आपके बंगाल प्रवास का जीवंत दस्तावेज है और ग्रामांचल आपके बचपन के ग्रामीण परिवेश का चित्र उपस्थित करता है।

आपकी रचनाएँ पाठकों को हर्षविभोर करती हैं और उनमें भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की महक भरी रहती है।श्री राम पर चालीसा से आरंभ करके आपने आठ पुस्तकों की रचना की है।अब तक आपके सात साझा संकलन भी प्रकाशित हो चुके हैं।भास्कर जी की प्रतिभा बहुआयामी है,उनके चिंतन का परिसर व्यापक है और उनके हृदय में अध्ययन की असीमित प्यास है।

भास्कर जी को मिले अनेक स्तरीय सम्मानों में राष्ट्रकवि पं.वंशीधर शुक्ल स्मारक एवं साहित्य प्रकाशन समिति लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) द्वारा 'अवधी वारिधि' उपाधि, कौण्डिन्य साहित्य सेवा समिति कादीपुर द्वारा 'सरस्वती भूषण सम्मान',सुंदरम् साहित्य संस्थान लखनऊ द्वारा 'सुंदरम् साहित्य रत्न' सम्मान,उ.प्र.हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा वर्ष २०२१में 'साहित्यभूषण सम्मान',शांति फाउंडेशन गोण्डा (उ. प्र.) द्वारा नेशनल पीस अवार्ड,ज्ञानमंदिर मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान) द्वारा 'काव्य कल्पतरु' मानद सम्मानोपाधि, अखिल भा.हिंदी सा.सम्मेलन गाजियाबाद द्वारा श्री हरप्रसाद भार्गव सम्मान,कादंबरी अलंकरण समारोह जबलपुर द्वारा स्व.विमला दुबे सम्मान उल्लेखनीय हैं।

मेरी व्यक्तिगत सम्मति में वरेण्य साहित्यकार श्री विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं।उनकी कृतियाँ भारतीय संस्कृति की सौरभ से सुवासित हैं जिनमें लोक-जीवन के सुख-दुख का यथार्थ ध्वनित है और साथ ही समग्र मानवता की उत्तरोत्तर प्रगति के मांगलिक सूत्र भी संग्रथित हैं।राष्ट्रीय चेतना के ऊँचे स्वर से निनादित उनकी रचनाएँ युग-युग तक भावी पीढ़ियों के लिए अनवरत प्रेरणादायक बनी रहेंगी।अंततः कविवर डा.शितिकंठ के स्वर में स्वर मिलाकर यह कहना अनुपयुक्त न.होगा किः

"वाणी महाकवि भास्कर की, शुभदा प्रतिभान्वित मार्दव है।
सार्थक शब्द - विधान विभूषित ,बिम्ब प्रभाव-स्वरा रव है।
गुण औरअलंकृति है सहजा,ध्वनि संग रसामृत का स्रव है।
आदर्श-सनी शुचिता मुदिता,नरता-शुभकार सुधार्णव है।।

ओम जी मिश्र अभिनव
उपसंपादक साहित्य सरोज
लखनऊ

बेलगाम सोशल मीडिया व्युत्क्रमानुपाती शिक्षकों की आदर्श छवि, सुरक्षा और गोपनीयता

सोशल मीडिया पर आए दिन शिक्षकों के कंटेंट चर्चा में बने रहते हैं। किन्हीं पोस्ट्स पर तो उनके रचनात्मक शिक्षण कौशल व अनूठे प्रयोग की प्रशंसा की जाती है व किन्हीं पोस्ट्स पर उनके अनापेक्षित आचरण की आलोचना भी होती है। हाल ही में कुछ मीडिया रिपोर्ट्र्स में कुछ शिक्षिकाओं पर विद्यार्थियों से जबरन रील पर लाइक, कॉमेंट्स कराने, रील में विद्यार्थियों की निजता का ध्यान न रखने, सोशल मीडिया की लत के कारण अध्यापन में अरुचि व अश्लील गानों पर डांस के आरोप लगे हैं।

आज के सोशल मीडिया युग में शैक्षिक क्षेत्र में तस्वीर बदली है जिसके सकरात्मक व नकारात्मक दोनों पहलू उभरे हैं। ०८ अक्टूबर २०२३ को प्रकाशित टाइम्स ऑफ इंडिया के एक समाचार लेख में बताया गया कि "कई अभिभावकों ने अपने बच्चों को यूपी के अमरोहा के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में भेजना बंद कर दिया है, क्योंकि उनका आरोप है कि चार महिला शिक्षक छात्रों को उनके सोशल मीडिया वीडियो को लाइक और सब्सक्राइब करने के लिए मजबूर कर रही थीं।" यह स्कूल पिछले कुछ दशकों से बिजनौर जिले के खुंगावली क्षेत्र में चल रहा है।

२० मार्च २०२४ को प्रकाशित इंडियन एक्सप्रेस के एक समाचार लेख में बताया गया कि "छात्रों के साथ 'कजरा-रे' पर डांस करने वाली शिक्षिका का वायरल वीडियो ऑनलाइन बहस को जन्म देता है। वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित किया जा रहा है, जिससे उपयोगकर्ताओं के बीच बहस शुरू हो गई है। इंटरनेट के एक वर्ग ने वीडियो का आनंद लिया, जबकि अन्य ने कक्षा में आइटम नंबर पर नृत्य करने के लिए शिक्षिका की आलोचना की।"

०७ नवंबर २०२३ को प्रकाशित हिंदुस्तान टाइम्स के एक समाचार लेख में बताया गया कि एक शिक्षिका ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया जिसमें बताया गया कि उसने एक छात्र के साथ कैसे व्यवहार किया जब उसने उसकी ऑनलाइन कक्षा के दौरान यौन रूप से अश्लील टिप्पणी की। उसने दूसरों के लिए प्रोत्साहन का एक नोट भी जोड़ा और कहा "प्रिय महिला शिक्षकों, तंग मत होइए।" ये हालिया मीडिया रिपोर्ट एक शिक्षक की आदर्श छवि के लिए बदलते रुझान दिखाती हैं।

इन मीडिया रिपोर्टों के बावजूद, ऐसे कई शिक्षक हैं जो छात्रों को शिक्षित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही गरीब और दूरदराज के क्षेत्रों के छात्रों की मदद कर रहे हैं।

२३ नवंबर २०२२ को प्रकाशित द इंडियन एक्सप्रेस के एक समाचार लेख में बताया गया कि बिहार के शिक्षक की मजेदार शिक्षण पद्धति ने ऑनलाइन प्रशंसा अर्जित की। सोशल मीडिया पर साझा की गई एक क्लिप में बिहार के बांका की एक शिक्षिका अपने छात्रों के साथ खेलती और बातचीत करती दिखाई दे रही है।

२६ अगस्त २०२३ को प्रकाशित टाइम्स ऑफ इंडिया के एक समाचार लेख में बताया गया कि शिक्षक का "गुड टच और बैड टच' पर रचनात्मक पाठ सोशल मीडिया पर वायरल हो गया"। इंस्टाग्राम पर 'टीचर इन क्लासरूम स्ले आउटसाइड', 'डेट ए टीचर यू विल नेवर कंप्लेन', 'टीचर एंड मॉडल' जैसे रील्स ट्रेंड कि भी भरमार है। अभिभावकों, विद्यार्थियों, सहकर्मियों तक उपलब्ध ऐंसे सार्वजनिक वीडियोज कंटेंट शिक्षकों की छवि और तालमेल प्रभावित कर सकते हैं।हालाँकि शिक्षकों/शिक्षिकाओं का निजी जीवन, उनकी अभिरुचि, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी एक पहलू है लेकिन दूसरा पहलू यह भी है शिक्षक समाज को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं ऐंसे में उन्हें सामाजिक मूल्यों की आचार संहिता का ध्यान रखना भी आवश्यक हो जाता है।

महाभारत के आदि पर्व में गुरु भक्त आरुणि के प्रसंग से लेकर सावित्री बाई फुले, गिजुभाई बधेका आदि शिक्षकों का समर्पण समाज में शिक्षक पेशे की गरिमा को दर्शाता है। शिक्षण एक बहुत ही सम्मानित पेशा है जिसके लिए समर्पण, जुनून और निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है। बच्चों के दिमाग को ढालने और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने में शिक्षक बेहद महत्वपूर्ण हैं। वे अपनी विशेषज्ञता और ज्ञान से अपने विद्यार्थियों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। चाणक्य का कथन है "शिक्षक कभी भी साधारण नहीं हो सकता प्रलय और निर्माण दोनों उसकी गोद में पलते हैं।"

ऐंसे में समाज निर्माता शिक्षक अपने पेशेवर मूल्यों, बदलते परिदृश्य में अपने निजी और पेशेवर जीवन के सार्वजनिक प्रभावों को लेकर कितने सजग हैं; शिक्षकों के सोशल मीडिया प्रयोग व उनके निजी सोशल मीडिया कंटेंट की सहकर्मियों, अभिभावकों व विद्यार्थियों तक पहुँच के प्रभाव पर शिक्षकों के परिप्रेक्ष्य को जानना महत्वपूर्ण हो जाता है।

सागर तहसील, मध्यप्रदेश के विद्यालयीन शिक्षकों के प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित इस शोध में ६३ प्रतिशत शिक्षकों ने माना की अध्ययन अध्यापन हेतु सोशल मीडिया का प्रयोग विद्यार्थियों की अधिगम गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ाता है । ५३ प्रतिशत शिक्षकों ने माना की निजी सोशल मीडिया एकाउंट पर पेशेवर पहचान उजागर नहीं करनी चाहिए। लगभग ६८ प्रतिशत शिक्षकों ने माना कि वे अपने सहकर्मियों के सोशल मीडिया एकाउंट पर प्रकाशित अध्ययन अध्यापन सामग्री, शिक्षण विधि से सीखते हैं व प्रेरणा लेते हैं । ७७ प्रतिशत शिक्षकों ने माना कि सोशल मीडिया पर शिक्षक की निजी जिंदगी को सहकर्मियों के साथ साझा करने से उनके बीच के तालमेल पर असर पड़ सकता है ।

निजी जीवन की गतिविधियों के आधार पर सहकर्मियों के बर्ताव, आपकी छवि के प्रति धारणा में सकारात्मक एवं नकारात्मक किसी भी रूप में परिवर्तन हो सकते हैं। ८६ प्रतिशत शिक्षकों ने माना कि सोशल मीडिया पर अश्लील भाव भंगिमा, कृत्य, गानों, वह्इस आदि के साथ ट्रेंड फह्लो करते हुए वीडियो बनाने से शिक्षकों की आदर्श छवि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है । ३१ प्रतिशत शिक्षकों ने माना वो कक्षा के दौरान की गतिविधियाँ किसी रूप में सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं जिनमें से ३५ प्रतिशत शिक्षकों ने माना वो संबंधित व्यक्ति/ विद्यार्थी/ अभिभावक से अनुमति नहीं लेते हैं । गैर अनुमति साझाकरण चिंता का विषय है। ४० प्रतिशत शिक्षक, विद्यार्थियों की प्रगति सोशल मीडिया पर साझा करते हैं । ६६ प्रतिशत शिक्षकों ने माना विद्यार्थियों की प्रतिभा को सोशल मीडिया पर शेयर करने से उन्हें वैश्विक मंच मिल सकता है। ६५ प्रतिशत शिक्षकों ने माना विद्यार्थियों के लिए सुलभ सोशल मीडिया पर शिक्षक के निजी जीवन को विद्यार्थियों से साझा करने से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है । हालाँकि ३५ प्रतिशत शिक्षकों की चिंता इस आशय से भी है कि इन गतिविधियों का नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है ।

सोशल मीडिया सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की जानकारी और राय साझा करने का केंद्र बन गया है। हालांकि इसके अपने फायदे हैं, लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तथ्य-जांच और विनियमन की कमी ने शैक्षणिक संसाधनों सहित गलत सूचनाओं के प्रसार को बढ़ावा दिया है। शिक्षक विद्यार्थियों के मूल्यों और धारणा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और झूठी या पक्षपाती जानकारी के प्रसार से विद्यार्थियों के नैतिक विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। सोशल मीडिया तक लगातार पहुंच के साथ, शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत और पेशेवर व्यक्तित्व के बीच अलगाव बनाए रखना चुनौतीपूर्ण लग सकता है। इससे गोपनीयता भंग की घटनाएँ और विद्यार्थियों और उनके परिवारों के साथ तालमेल में गड़बड़ी संभावित है। एक और चिंता सोशल मीडिया प्लेटफह्र्म पर विनियमन और नियंत्रण की कमी है। यह उन्हें अनुचित सामग्री और साइबरबुलिंग के संपर्क में ला सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, ऑनलाइन उपस्थिति बनाए रखने का दबाव और नकारात्मक प्रतिक्रिया का डर भी शिक्षकों में तनाव और कार्यभार में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है।

सोशल मीडिया के लिए सामग्री तैयार करने और लगातार अपडेट रहने आवश्यकता शिक्षकों के समय और ऊर्जा को क्षीण कर सकती है जो वे पाठ योजना निर्माण और निर्देशन में लगा सकते हैं।

सोशल मीडिया त्वरित संतुष्टि की संस्कृति को भी बढ़ावा देता है, जहां उपयोगकर्ता लगातार लाइक और शेयर के माध्यम से स्वीकरण की तलाश में रहते हैं। यह शिक्षकों को मूल्यवान और सटीक जानकारी प्रदान करने के बजाय जुड़ाव बढ़ाने वाली सामग्री बनाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करके शिक्षण मूल्यों को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया मेट्रिक्स की प्रतिस्पर्धी प्रकृति शीर्ष पर पहुंचने की दौड़ को जन्म दे सकती है, जहां शिक्षक प्रासंगिक बने रहने और फह्लोअर्स हासिल करने के लिए साहित्यिक चोरी या पुरानी और गलत जानकारी का उपयोग करने जैसी अनैतिक प्रथाओं का सहारा ले सकते हैं। सोशल मीडिया पर एक और मुद्दा गुणवत्ता नियंत्रण की कमी है।

सूचना तक पहुंच और साझा करने में आसानी के साथ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा की जाने वाली शैक्षिक सामग्री की वैधता और विश्वसनीयता के बारे में चिंता बढ़ रही है। कई शिक्षकों के पास, उचित प्रशिक्षण या मार्गदर्शन के बिना, सोशल मीडिया पर मौजूद जानकारी की विश्वसनीयता और सटीकता का मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक कौशल नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप पक्षपातपूर्ण या गलत जानकारी का अनजाने में साझाकरण हो सकता है। इन मुद्दों को हल करने के संभावित समाधान हैं - शिक्षकों के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।इसमें शिक्षकों को सोशल मीडिया पर साझा की गई जानकारी की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करने के तरीके के बारे में शिक्षित करना और उन्हें अपने छात्रों के साथ कोई भी सामग्री साझा करने से पहले तथ्य-जांच करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है।

यह न केवल शिक्षकों के बीच आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ावा देगा बल्कि गलत सूचना के प्रसार को रोकने में भी मदद करेगा। इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में मूल्यों और नैतिकता को पढ़ाने के महत्व को उजागर करने के लिए जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है। इन अभियानों को शिक्षकों और छात्रों दोनों पर लक्षित किया जा सकता है, जो उनके शिक्षण में नैतिक मानकों को बनाए रखने में शिक्षकों की जिम्मेदारियों पर जोर देते हैं। इस तरह की पहल जिम्मेदार सोशल मीडिया उपयोग की अवधारणा और समाज पर इसके प्रभाव को भी बढ़ावा दे सकती है। इसके अलावा, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को भी शैक्षिक सामग्री के लिए सख्त नीतियों और नियमों को लागू करके जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इसमें तथ्य-जांच तंत्र, विश्वसनीय स्रोतों को बढ़ावा देना और उन खातों को दंडित करना शामिल हो सकता है जो गलत या पक्षपाती जानकारी को बढ़ावा देते हैं।

ये उपाय न केवल सटीक और गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री को बढ़ावा देने में मदद करेंगे, बल्कि शिक्षकों को भ्रामक या अनैतिक सामग्री साझा करने के लिए जवाबदेह भी बनाएंगे।शिक्षकों को युवा दिमाग का संवर्धक माना जाता है। शिक्षकों को सोशल मीडिया पर जो कुछ भी पोस्ट करना है, उसके प्रति सतर्क और सावधान रहना चाहिए, क्योंकि उनकी ऑनलाइन उपस्थिति छात्रों, अभिभावकों और स्कूल प्रशासकों द्वारा आसानी से देखी जा सकती है। शिक्षकों के लिए पेशेवर लहजे को बनाए रखना और किसी भी विवाद से बचने के लिए विवादास्पद विषयों से बचना आवश्यक है।

अन्य उपायों में विद्यार्थियों, अभिभावकों और सहकर्मियों की शिक्षकों के निजी सोशल मीडिया एकाउंट तक पहुँच को सीमित किया जाना, सार्वजनिक रूप से सोशल मीडिया पर सामग्री प्रसारित करते हुए सामाजिक - सांस्कृतिक मानकों का ध्यान रखना, निजी सोशल मीडिया अकाउंट पर पेशेवर पहचान प्रदर्शित न करना शामिल हैं।

डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण, जागरूकता अभियान और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सख्त नियमों जैसे उपायों को लागू करके, हम समस्याओं को कम करने की दिशा में काम कर सकते हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह की शिक्षा में जिम्मेदारी से सोशल मीडिया के इस्तेमाल को बढ़ावा देना और ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सटीकता के मूल्यों को बनाए रखना आवश्यक है।

नवीन कुमार जैन
एम. ए. द्भभूगोलऋ,
बनारस्र लहदू विश्वविद्यालय
बड़ामलहरा, जिला- छतरपुर, म. प्र.

जय माँ कामाख्या आपकी समस्त मनोकामना पूर्ण करें
गहमर, गाजीपुर, उ0प्र0 से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका
साहित्य सरोज
सीखने-सिखाने का मंच
RNI No. UPHIN/2017/74520,
ISSN *2587-0843

यदि आपकी रूची
कविता लेख-आलेख ,शोध-पत्र मनोरंजक एवं जासूसी कहानी लेखन, सभ्यता-संस्कृति पर आधारित लेख, संस्मरण या यात्रावृतांत लेखन में है तो लिख कर हमें लिख कर मेल या वाटस्एप करें।

यदि आपकी
रैंप वाक (फैंशन शो) मॉडलिंग, एंकरिंग शार्ट-फिल्मों में अभिनय कहानी/ समाचार वाचन में रूची है और कैरियर बनाना है या काम करना तो आप वाटस्एप करें

प्रतिनिधि या प्रभारी बनना चाहें तो संम्पर्क करें

-ःहमारे प्रमुख आयोजन-ः
प्रत्येक 02 अप्रैल को महिला उत्थान दिवस पर आयोजन
9 वर्ष से प्रत्येक वर्ष दिसम्बर में गोपाल राम गहमरी साहित्य व कला महोत्सव एवं सम्मान समारोह गहमर में

हमारी वेबसाइटें
https://sahityasaroj.com/
https://sahityasaroj.com/

अखंड प्रताप सिंह
"अखंड गहमरी"
प्रकाशक साहित्य सरोज

ई-मेल sarojsahitya55@gmail.com मो0 व वाट0 9451647845
यदि आपके अंदर कोई प्रतिभा है, संसाधन/मार्गदर्शन के आभाव में प्रदर्शन नहीं कर पायें तो बताईये हम आपकी पूरी मदद करेंगें
यदि आप की आवाज अच्छी है और गहमर से youtube चैनल के लिए कहानी वाचन करना चाहते हैं तो सम्पर्क करें
ग्रामीण क्षेत्र में बाल व महिला उत्थान, रोजगार व प्रतिभा प्रदर्शन

क्या यही प्यार है

एक प्रश्न बार-बार बेचैन किये जा रहा है कि ऐसा क्यों हुआ ? और फिर वह सुरसा के मुँह की तरह फैलता ही जाता है या फिर कोढ़ की तरह सारे तन गलाये डाल रहा है। उफ़्फ़ जैसे पोर-पोर गल-गल कर गिरी पड़ रही है। समझ में नहीं आता कि यह कैसे हो गया ? सौभाग्यशालिनी निशीथ की शीतलता में भी मानो सारे शरीर में फफोले पड़ गये। मैं ज़ोर से चीख पड़ता हूँ- ”नहीं, तू नहीं है मेरी वो। मैं तुझसे घृणा करता हूँ। तू मुझे पसंद नहीं है। तू वह नहीं, है जिसे मैं चाहता हूँ। ठहर जा, वहीं रुक जा, आगे मैं नहीं बढ़ने दूँगा। जरा अपनी सूरत तो देखो , भद्दे होंठ, बेतुकी नाक और रंगदृ जैसे कोयले की खदान से पैदा हुई हो।हाँ, डरता हूँ, केवल तुम्हारी आँखों से। डरता हूँ, तुम्हारे भावों से। इनको फेर लो। मैं इनको भी लौटा दूँगा। मेरे हृदय में जो बस चुकी है, वह तुम नहीं हो। बस, चली जाओ। मेरे घर में मत घुसो। उसमें केवल उसी साम्राज्ञी का अधिकार है।

मेरा रोम-रोम उसी की मुस्कान से सिक्त है। वही मेरा जीवन उत्स है। फिर क्यों आती हो ? नीर भरी सतृष्ण आँखों से तुम कटाक्ष तो नहीं करती, परंतु भावों के प्रचंड वेग से तुम क्यों मुझे बहा ले जाना चाहती हो ? यह रवि तुम्हारा नहीं है। नहीं, उस साम्राज्ञी के दुर्ग की प्राचीर यूँ न ढहेगी। लेकिन, आह ! क्यों विग्रह में कंप हो उठता है ? स्वर क्यों क्षीण होता जाता है ? क्यों ? और, मैं और बेचैन होता जाता हूँ। अब तो साल होने को है, जब से तुम्हारे सामने के मकान में आया हूँ। एक तो पढ़ाई के आवेग में इन भावों से अछूता ही रहा हूँ, दूसरे वह जो गहरे पानी में भी चमकती सी दिखाई दी है, वह जो अनंत अन्धकार में भी नितांत पास कल्पित रही है, उसने कब सोचने का मौका दिया है ? देखता आया हूँ- तुम्हारी जीवनी को, दिनचर्या को और सब कुछ भूलती हुई सी अपलक निहारती आँखों को। प्रारम्भ में कितना चमक लिये, पर धीरे-धीरे आँखें नम होती। उनकी पुकार हमेशा लौटती रही हैं-जमीन बुहारती तुम तक। मानता हूँ- तुमने कभी तो श्रंगार नहीं किया। कभी कुरूपता नहीं छिपायी। कभी इठलाई नहीं- लहराई नहीं। तुम्हारी आँखों ने भी तो कभी इशारों का सहारा नहीं लिया। निर्निमेष, निहारती, उपेक्षा से किंचित विचलित न होती सी। बस, यहीं मैं बेचैन हो उठता हूँ। देवराज सा भयभीत हो उठता हूँ। पर, अपने आसन के लिए नहीं, अपनी उस कल्पित साम्राज्ञी के आसन के हिलते देखकर। तुम्हारी आँखों के दो बिन्दु विशाल भुजाओं से बढ़कर उसे पकड़कर घसीटने से लगते हैं। पर, मैं हमेशा उसकी मदद करता हूँ। उन बढ़ती भुजाओं को वापस कर देता हूँ।

इस एक साल के सामने सत्रह वर्षों की सारी कल्पना प्रतिरोध में खड़ी हो जाती है। बचपन से अब तक, बनाते-बनाते बहुत ही अकाट्य एवं अभेद्य बना दिया है उसको। नानी की मधुर कहानी हो या दादी की, माँ की लोरियाँ हों या पिता का दुलार, बाबा की गोद हो या फिर धूल की क्रीड़ा; सभी से सीखा है, सुना है और बसा लिया है उसको। उसके लिए दस-दस मकर संक्रांतियों का पुण्य बटोरा है हमने। तीन-तीन बजे प्रभात काल में ठंडे पोखर में डुबकी लगाई है हमने। मोहन की गोपियों की, नल की दमयंती की, जायसी की पद्मावती की कहानी सुनी है हमने। उनसे न्यून तो नहीं होगी दृ मेरे हृदय साम्राज्य की मालिका ! श्रंगार के धुरंधर पंडितों की रूप विरुदावलियों ने खूब संवारा है उसे- नख से लेकर शिख तक। पूर्ण कर दिया है उसे। वह जो है- वही तो है मेरी साम्राज्ञी। जिसके एक-एक कंप, एक-एक धड़कन का मैं भक्त बन गया हूँ, उपासक बन गया हूँ। जिसके समर्पण से मैं गर्वित हो जाता हूँ। वह जो कविवृन्द की आराध्य है। चाहें वह गौर वर्ण गोरी हो या श्याम वर्ण श्यामली; वह जो सर्वांग सुंदरतम है जिसका मैं स्वयं कल्पित पूज्यदेव हूँ। वह जो अभी तक यथार्थ के धरातल पर नहीं उतरी। जो अभी तक स्वप्न लोक या कल्पना लोक की राजकुमारी है, कब आयेगी ? जब यह प्रश्न उठा तो- माँ की बातें- नानी के किस्से- ‘जब तू पढ़कर बड़ा होकर राजा बाबू बन जायेगा तो वह राजकुमारी रानी बन कर तेरे जीवन में आ जायेगी।’ और फिर कोई प्रश्न, कोई रिक्तता न रह पाती। आशा- ‘नहीं-नहीं, जरा यह पढ़ाई पूरी कर लूँ२’यही संकल्प बनकर सब प्रश्नों को क्षितिज पार खदेड़ आती है।

मानता हूँ कि तुमने कभी भी शब्दों का सहारा नहीं लिया। लेकिन कभी नहीं लगा कि तुमने क्या नहीं कहा है ? जो कुछ भी तुमने कहा है मैंने कानों से तो नहीं सुना है परंतु वह मेरे हृदय में घुस कर मथ-मथ कर गूँजता है। यही स्थिति, यही त्रिकोण व्यथित कर देता है मुझे। कंप होता है,

भय होता है। लाख कोशिश करता हूँ कि तुम्हारी आँखों, तुम्हारी भावनाओं के अथाह सागर से बाहर आऊँ, परंतु उसका ज्वार मुझे झुका देता है, बहा देता है और मैं हाथ पैर पटक-पटक कर पकड़ता हूँ, बाहर आने की कोशिश करता हूँ। परंतु- न जाने कहाँ का फेन आकर स्निग्ध कर जाता है मुझे, और मैं अपने आपसे चीख पड़ता हूँ। कहीं कोई नहीं है जिसे पुकारूँ मैं ? अपने लिए नहीं दृ उसके लिए चीखता हूँ। अब तक उसके पहरे पर निशि-वासर जागता खड़ा रहा हूँ। मैंने अभी उसको जगाया नहीं है। उसको देखता रहा हूँ। वह सो रही है। डरता हूँ- जब वह जागेगी, तब कहीं मेरे भावों को जान कहीं खिन्न न हो जाय। अनायास ही उसकी आँखें खुल गयीं तो ? अस्तु, इस भय से मैंने सारे द्वार बंद कर रखे हैं। किसी को भी अंदर नहीं आने दूँगा। वातायन बंद करने को भी जी चाहता है परंतु डरता हूँ दृ कि कहीं वह नाराज़ न हो जाये ? हाय री किस्मत ! आँखें फोड़ लूँ तो कोई भी झोंका न आ सकेगा। लेकिन कल वह जब जागेगी औए देखेगी कि झरोझे बंद हैं तो आहत होगी। किसे दिखाएगी- अपना मलयज रूपमाल्य ? किन्तु आह! यह कौन सा चुपके-चुपके से झोंका आया ? मेरे पैर उखड़ रहे हैं। बार-बार उसी घृणा का सहारा लेता हूँ। क्यों ? समझ नहीं पाता। मुझमें घृणा का तो कहीं किंचित स्थान न था, फिर क्यों ? क्यों मैं घृणा करता हूँ ? क्या अपनी इच्छाओं दृ अपनी कल्पना कि रक्षा में ? जानता हूँ- समझता हूँ कि यह अमानवीय है। लेकिन, अब डरने लगा हूँ। घृणा काम नहीं करती। वह हारने लगी है। दुबक कर पता नहीं किस दुर्गम कानन में शरण लेती है जाकर। एक अज्ञात भय विग्रह पाने लगता है।

मैं ज़ोर-ज़ोर से चीखता हूँ- क्या संबंध है तुमसे ? कुछ भी तो नहीं। कुछ भी चाहत नहीं है तुमसे।फिर तुम्हारा मौन ! आह !! क्या चैन न लेने देगा ?अंदर न जाने कब से यह संघर्ष छिड़ गया है- जिसको कभी नहीं देखा, उसके लिए मैं तुम्हारी भावनाओं का मूल्य नहीं समझता। फूलों को देखता हूँ, तो उसका स्मित मुख सचित्र हो उठता है। मोतियों में उसकी दंतावली नज़र आने लगती है। मृग नैन में उसके कजरारे नयन चंचल हो उठते हैं। घटाओं में उसकी अलकावली याद हो आती है। अब बोलो- क्या तुम यह हो ? यदि नहीं, तो बंद कर दो अपना यह स्थिर मूक अवलोकन। तुम कब टूटोगी ? तुम्हारे धैर्य से मैं अधीर हो जाता हूँ। क्या तुम्हारे मन में कभी निराशा नहीं पनपती ? उफ़्फ़ ! नारियों का विश्वास ? परमात्मा भी अपने विधान बादल देता है। सोचता हूँ- कहीं मैं टूट न जाऊँ ? पर नहीं, इतना सहज नहीं है। यह सब मैं तुमसे प्रतिदिन कहता हूँ- निशब्द। मैं खुद कहाँ तुमसे कभी बोला। कभी चाहा ही नहीं जिसे, फिर किस हेतु ? कभी भी तो ऐसी कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी कि शब्द सम्प्रेषण होता। तुम्हारे परिवार से भी तो मैंने कभी कोई संपर्क या संबंध रखा। मेरे हृदय के किसी भी ठौर तुम्हारा ठिकाना नहीं। मैं सोचता हूँ- सिवाय उसके, कुछ भी नहीं है। पर, वहीं फुसफुसाहट सी होती है दृ'कहीं कुछ है२ कुछ है२'और मैं बस दुर्बल सा चीखकर रह जाता हूँ- 'नहीं है-नहीं है-नहीं है।'

मैं नहीं जानता कि तुम्हारी दिनचर्या मेरे कॉलेज जाने के बाद कैसे होती है ? यह जो तुम्हारे घर के बाहर नीम का पेड़ है, जिसके पत्ते दिन-रात गिरते ही रहते हैं, जिनकी वजह से, मैं तुम्हें बस सुबह-शाम झाड़ू लगाते ही देख पाता हूँ। बस उतनी देर की तुम्हारी अपलक दृष्टि मेरा शेष काल में भी पीछा नहीं छोड़ती है। छाया सी मेरे अंतस से चिपक सी गयी है। क्या तुम्हारी आँखों- तुम्हारे भावों से ही मेरा पराभव हो जायगा ?कल तुम दिखाई नहीं दी थीं। राहत मिली थी। कोई भी बेचैनी नहीं हुई थी मुझे। पर, दिल कुछ अनमना सा हो गया है- किसी ज्वर के प्रारब्ध के सदृश। आज का दिन भी गुजर जाने को है, और-आज तो पाँचवाँ दिन है तुम नहीं दिखीं। मन व्याकुल हो उठा है। अब दिन तो पूर्ववत कट जाते हैं,परंतु रातें अप्रत्याशित होने लगी हैं। स्वप्न आने लगे हैं तुम्हारे।तुम दुबली हो गयी हो। फिर भी धीरे-धीरे चल कर आती हो और मेरे पास आकर खड़ी हो जाती हो और क्षीण स्वरों से कहती हो-"देखिये, माना कि तुम मेरे नहीं हो, लेकिन मैं तो तुम्हारी हूँ। तुम्हारे बिना मैं अस्तित्वहीन हूँ। किरन हूँ न।"फिर मेरे चुप से दुखी हो कहती हो-"मुझसे बोलिए तो, मुझसे बात तो कीजिये। क्या इतना अधिकार भी नहीं दोगे कि कम से कम तुम्हारी कुशलक्षेम ही पूंछ सकूँ ? बोलो- मुझसे बोलेंगे न ? बात तो करेंगे न

मुझसे ? बोलो२ बोलो२“बस, स्वप्न टूट जाता है और तुम्हारे वाक्य सारे आकाश में सिसकते से गूँजते हैं।

मेरा हृदय मथने लगता है। लेकिन उसमें कोई रत्न नहीं निकलता है। तुम्हारी आवाज़ ही निकलती है।उससे। जिसमें तुम्हारी आँखों के आँसू नहीं भरे थे। भरा था जिसमें उस अद्वतीय सुंदरी का रूप रस। एक परिवर्तन होता है दृ घड़े में नीचे से मानो छेद हो गया है और रूप रस टपकने लगा है। घट जो धीरे-धीरे खाली हो रहा है- भावना के मेघ घिर आए हैं और वे बरस रहे हैं। घट भरा जा रहा है और मैं किसी से पूंछ बैठता हूँ-‘किरन कहाँ है? दिखती नहीं ?’ उत्तर सुनता हूँ- ‘बीमार है।’ आह ! मन क्यों मसोस उठा है ? हृदय क्यों चोटिल हुआ ? और मैं क्यों अनायास ही किधर चला जा रहा हूँ ? न पूर्व सोचा है, किधर जाना है ? कदम उठ गए हैं, बढ़े जा रहे हैं। हृदय क्यों किसी को मूक मंत्रणा दे रहा है कि काश ! वे राह में आ जातीं और मैं मीठे मृदुल स्वरों में कहता- ‘सुनिए, जरा हट जाइये२’ परंतु फिर क्षितिज के किसी छोर से कोई हाँफता सा आता और कहता ‘क्या? तो अभी भी तुम उसे अपनी राह से हटाना चाहते हो ? क्यों ?’ मैं धीरे से कहता- ‘मैंने उसे अपनी राह में लाना ही कब चाहा? मैं उसे नहीं चाहता।’वह शांत मन से मेरे चेहरे पर आँखें गड़ा कर पूंछता- ‘क्या सच?’और मैं उत्तर न दे पाता। क्यों ? समझ नहीं पाता।

और तभी अपने को मंदिर के गर्भ गृह में खड़ा पाता हूँ। भगवान कि प्रतिमा के आगे हाथ जोड़े भर्राए गले से कहता हूँ दृ ‘उसे ठीक कर दो प्रभु ! २ उसे २’यहाँ तक कैसे आ गया ? जान ही नहीं पाया। क्यों और किस लिए ? अब कोई बेचैनी नहीं है, पर हृदय में दर्द उठ रहा है, क्यों और किस लिए ? क्या दया, हमदर्दी या यही प्यार है ?

अशोक कुमार शर्मा
सारंगपुरा
जयपुर(राजस्थान)

लघुकथा बोझ

हमारे द्वारा बनाए विडियो के वायरल हो कर चर्चा का विषय बन जाने से हम तीनों दोस्त बहुत खुश थे हम बैठे गप्पे हांक रहे थे। क्या यार! बेहतरीन फिल्म शूट किया है तूने तो..। तभी मैंने देखा आज अखबार की सुर्खियों में भी यही खबर थी (ओवर लोडेड ट्रक के पलटने से बाईक सवार की मौत) मुझे ध्यान आया जब हम बाईक पे चलते चलते उस बुरी तरह से डगमगाते ओवर लोडेड ट्रक का विडियो बना रहे थे उसी के बराबर से एक बाईक भी गुजर रही थी। ” ओह.. ”। तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया ’ मेरे दोस्त ने खोला तो लगभग ४०-४५ वर्षीया महिला बिना कुछ बोले कमरे में दाखिल हुई और सीधे मेरे सामने आ कर खड़ी हो गई जिनकी आंखे सूजी हुई बाल बिखरे और चेहरा उदास था उसने कुछ देर मुझे एकटक देखने के बाद मेज पर रखे अखबार में छपी फोटो देख कर रो पडीं। मैंने पूछा क्या हुआ आंटी आप कौन हैं ?
बस उसने इतना कहा और वापस चली गई ” ये बेटा था मेरा ”

मै सन्न रह गया मानो किसी ने मेरी छाती पर हथौड़ा मार दिया हो काश..! उस समय विडियो बनाने से पहले ट्रक के बराबर में चल रहे उस शख्स को आगाह कर देता तो..ओह...

मै शिथिलता से खड़ा खड़ा उस वायरल वीडियो की वाहवाही देख कर अनजाने अपराध के बोझ तले दबा जा रहा था

संतोष शर्मा ” शान”
हाथरस उत्तर प्रदेश

दिल बोल उठा

हरी नाम का एक वृद्ध व्यक्ति था। वह बहुत गरीब था। वह अपनी गुजर-बसर भीख मांग कर करता था ताकि उसे रात भर सड़क पर ना सोना पड़े। एक सुबह, उसने हमेशा की तरह अपनी चटाई बिछाई, भीख माँगने के लिए अपना प्याला रखा और माँगने के लिए याचना करने लगा। आस-पास बहुत सारे अह्ऑफिस थे, तो कई सारे लोग वहाँ से हर रोज गुजरते थे। लेकिन उस दिन, कोई भी हरी की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। उसे लगा आज कुछ नहीं मिल सकेगा और वह उदास महसूस करने लगा। पर उसे नहीं पता था कि उस दिन उसकी किस्मत बदलने वाली है। कुछ ही देर में वहाँ से एक युवती गुज़री। उसने मुस्कुराकर हरी का अभिवादन किया व उसके प्याले में २०० रूपये डाल दिए। वह चौंक गया! यह पहली बार था जब किसी ने उसे इतने पैसे भीख में दिए थे। हरी ने आभार व्यक्त करते हुए उस युवती से उसका नाम पूछा। युवती ने मुस्कुराकर अपना नाम "सारा" बताया। हरी बड़ा ही खुश होकर उत्साह से उसे बताने लगा, "मुझे आज रात सड़क पर नहीं सोना पड़ेगा! धन्यवाद, आपकी वजह से आज रात मैं चैन से सो सकता हूँ।" फिर उसने पूछा, "आपने मुझे इतने पैसे क्यों दिए? "सारा ने बड़े ही प्यार से उस वृद्ध व्यक्ति को कहा, "मेरा यह मानना है कि "जो हम करते हैं वह प्रकृति हमें वापस ज़रूर देती है।" जैसा हम बोएंगे, वैसा फल मिलेगा।" दोनों ने कुछ समय बातचीत की, और फिर सारा का लंच ब्रेक खत्म होने के कारण उसे जाना पड़ा। उसने हरी को आगे के लिए शुभकामनाएँ देकर अलविदा कहा।

थोड़े समय में हरी को लगा कि उसे पैसे गिनकर देखना चाहिए, शायद एक दिन के लिए पर्याप्त राशि इकट्ठी हो गई हो। उसने पैसे गिनना शुरू किया तो उसे प्याले में कुछ चमकता हुआ नजर आया। वहाँ एक अंगूठी पड़ी देख वह हैरान रह गया, और सोचने लगा कि यह अंगूठी यहाँ कैसे पहुँची।फिर उसे लगा कि प्याले में पैसे डालते समय सारा के हाथ से अंगूठी उसी में गिर गई होगी। वह तुरंत सारा को ढूँढने के लिए जुट गया । गलियों में इधर-उधर ढूँढता, आस-पास के ऑफिस में पूछता। लेकिन वह उसे कहीं नहीं मिली और वह तलाश करते-करते थक गया।अचानक उसके मन में लालच जाग उठी। उसने सोचा, अगर वह अंगूठी बेच दे, तो उसे कई महीनों तक सड़क पर नहीं सोना पड़ेगा।

यही सोचते हुए वह एक सुनार की दुकान पहुँच गया, और अंगूठी बेचने के लिए दुकानदार से उसकी कीमत पूछी। सुनार ने उसे ४०००० अंगूठी की कीमत बताई और जिसे सुनकर हरी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। यह उसके लिए बहुत बड़ी रकम थी! सुनार के प्रस्ताव को सुनकर, हरी पैसे लेकर कुछ महीने आराम में बिताने के लिए ललचाने लगा। वह अनेक सुविधाओं की कल्पना करने लगा, और हर रात चैन से सोने की संभावना ने उसे बहुत लुभाया। लेकिन अचानक उसे सारा के शब्द याद आ गए ।

उसे मानो एक झटका सा लगा। सारा के वह शब्द उसे वापस वर्तमान में ले आए और उसकी गलती का एहसास कराया। और उसने अंगूठी नहीं बेचने का फैसला किया व फिर से सारा की खोज में लग गया। वह आस-पास के सभी कार्यालयों में जाकर पूछने लगा। तभी उसे याद आया कि सारा ने पिछली गली में काम करने की बात कही थी। वह उस गली में गया और हर एक अह्ऑफिस में जाकर पूछा। इस तरह वह उस गली के अंतिम ऑफिस में पहुँचा, और पूछा, "क्या सारा यहाँ काम करती है?" और आखिर उसे वह मिल गई। सारा उसे वहाँ देखकर बहुत हैरान हुई और बोली, "बताइए, मैं आपकी कैसे मदद कर सकती हूँ।" हरी ने तुरंत उसकी अंगूठी निकाली और कहा, "मुझे लगता है यह आपकी है। शायद पैसे डालते समय यह आपके हाथ से गिरकर मेरे प्याले में आ गई थी।"उस अंगूठी को देखते ही सारा की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने कहा, "मैं वास्तव में आभारी हूँ कि आप इसे वापस लाए। आप नहीं जानते कि यह मेरे लिए कितनी मायने रखती है! मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ।" पर उसके मन में एक सवाल आया जो वह पूछे बिना रह न सकी। "अगर आप चाहते तो आप अंगूठी बेच कर बहुत पैसा कमा सकते थे। आपने इसे वापस क्यों किया," उसने उत्सुकतावश पूछा।यह बात सुनकर हरी ने कहा,"आपने इतनी उदारता से मेरी मदद की, मैं कम से कम इतना तो कर ही सकता हूँ। और वैसे भी, एक बुद्धिमान महिला ने

मुझे कभी कहा था, ’“जो हम करते हैं वह प्रकृति हमें वापस जरूर देती है।“

उस वृद्ध व्यक्ति की यह बात सुनकर सारा का हृदय गदगद हो गया और उसे दिल से शुक्रिया करते हुए सारा ने कहा, ”आप जानते हैं, यह मेरी शादी की अंगूठी है। मैं आपका एहसान कभी नहीं भूलूंगी।“हरी ने अंगूठी लौटा दी और चला गया। उसके जाने के बाद, सारा के सहकर्मी ने ‘गो फंड मी’ नामक वेबसाइट के माध्यम से बूढ़े व्यक्ति की मदद करने का सुझाव दिया। वह वहाँ अपनी कहानी साझा कर सकती थी, और लोगों से हरी के लिए पैसे दान करने का अनुरोध कर सकती थी।इस पर सारा ने खुशी जताते हुए कहा, ”मैं जरूर यह काम करूँगी और मुझे यकीन है कि लोग यह कहानी पसंद करेंगे।“ उसने हरी के लिए ‘गो फंड मी’ पर एक क्राउडफंडिंग पेज शुरू किया, और वह वायरल हो गया।

यह कहानी अनेकों लोगों तक पहुँच गई कि कैसे सारा की अंगूठी खो गई थी और हैरी ने उसे वापस लौटया। लोगों ने दान करना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में, सारा ने दान के रूप में १६०००० एकत्र कर लिए। फिर वह हरी को खोजने निकल पड़ी। हरी उसे उसी स्थान पर मिला जहाँ वे पहली बार मिले थे। जब सारा ने उसे एक थैला दिया, हरी ने सोचा कि वह उसकी मदद करने के लिए कुछ चीजें लाई है, और उसने अपना आभार प्रकट किया। लेकिन जब उसने बैग खोला और पैसे देखे तो वह अवाक रह गया। उसने सारा से पूछा, ”आप मुझे इतने पैसे क्यों दे रही हैं?“

सारा ने मुस्कराते हुए कहा, ”यह आपकी ईमानदारी का पुरस्कार है। यह आपकी कमाई है। फिर उसने उसे खुशी-खुशी समझाया कैसे लोगो ने उसकी ईमानदारी और दयालुता को सराहा, और ळवथ्नदकडम के माध्यम से १६०००० की राशि का दान दिया। और अब उन्हें रास्ते पर रात बितानी नहीं पड़ेगी। इन पैसों से वह अपना खुद का घर खरीद सकते हैं। यह सुनकर वह वृद्ध व्यक्ति खुशी से झूम उठा। उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलक आए और उसने सारा को खूब आशीर्वाद दिया। सारा भी हृदय में खुशी और आँखों में आँसू लिए, हरी से अलविदा कह कर चली गई। उसके जाने के बाद, हरी ने देखा कि बैग में एक कागज का टुकड़ा भी था, जिस पर लिखा था, ”जो हम करते हैं वह प्रकृति हमें वापस जरूर देती है। हमारे कार्यों का हमेशा हमारे पास वापस आने का यह एक तरीका होता है।“ ”हृदय हमेशा सच बोलता है और सही मार्गदर्शन करता है लेकिन लालच और अहंकार हमें भटका देते हैं।“

डॉ. ज्योति मिश्रा
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
9827924340

लघु कथा तपन का अंतर

जैसे ही लाइट गई बच्चो बड़ो मे हहाकार सा मच गया, हाय गर्मी है गर्मी है सब बच्चे चिल्लाने लगे अरे जल्दी इन्वर्टर चालू करिए पंखे की हवा में कुछ राहत तो मिली पर बच्चे थे की पापा अब इन्वर्टर नही जनरेटर लीजिए अब गर्मी ज्यादा हो गई है। हां भाई लेंगे ,तुम लोग तो एसी कूलर के ऐसे आदि हो गए कि बस हमारे जमाने में तो ऐसा कुछ नही था...... बस बस पापा अब आप फिर से शुरू मत होइए अपने जमाने की कहानी लेकर बच्चो ने कहा।

मम्मी प्लीज अभी तो बर्फ होगी आप कोल्ड कॉफी ही बना दीजिए। हां हां बनाती हूं अभी। तभी दरवाजे पर घंटी बजी देखा तो कामवाली की छोटी बेटी पसीने से तरबतर खड़ी थी।जा जल्दी पहले आंगन झाड़ पोंछ दे फिर अंदर आना। जी आंटी जी अभी कर देती हूं। ये सारे बर्तन भी उठा ले जा बाहर। जी मैं ले जाती हूं। तपन का अंतर स्पष्ट झलकने लगा था।

नवनीता पांडेय
विदिशा, मध्य प्रदेश

भारत में सुरक्षित पर्यावरण के लिए चुनौतियां और समाधान

परिचय-हमारा देश भारत, अपने विशाल और विविध परिदृश्य के साथ, अनेक पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या देश के प्राकृतिक संसाधनों को भी प्रभावित करती है, जिससे प्रदूषण, वनों की कटाई और जैव विविधता की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इन चुनौतियों का समाधान करना भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

भारत में प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियां

वायु प्रदूषण : भारत में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर पहुँच गया है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में। इसके प्रमुख स्रोतों में वाहनों से निकलने वाला उत्सर्जन, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण गतिविधियाँ और बायोमास व जीवाश्म ईंधन का जलना सम्मिलित हैं। वायु प्रदूषण गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न करता है, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियाँ, हृदय संबंधी बीमारियाँ और समय से पहले मृत्यु तक हो सकती है।

२. जल प्रदूषण और कमी : भारत में जल संसाधन औद्योगिक अपशिष्टों, कृषि अपवाह और घरेलू कचरे से होने वाले प्रदूषण के कारण गंभीर स्थिति में हैं। कई नदियाँ और झीलें अत्यधिक प्रदूषित हैं, जिससे पेयजल असुरक्षित हो गया है और जलीय जीवन को नुकसान पहुँच रहा है। इसके अतिरिक्त, भूजल का अत्यधिक दोहन और अपर्याप्त जल प्रबंधन तंत्र के कारण जल की कमी होती जा रही है, जिससे कृषि और पेयजल आपूर्ति प्रभावित हो रही है।

३. वनों की कटाई और आवासः कृषि, शहरी विस्तार और बुनियादी ढांचे के विकास हेतु वनों की कटाई के कारण जैव विविधता का नुकसान होता है और पारिस्थितिकी तंत्र में व्यवधान होता है। इससे न केवल वन्यजीवों को खतरा होता है, बल्कि स्थानीय समुदायों पर भी असर पड़ता है जो अपनी आजीविका के लिए जंगलों पर निर्भर हैं।

४. अपशिष्ट प्रबंधन : भारत अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन बुनियादी ढांचे से जूझ रहा है, जिसके कारण ठोस कचरे का अनुचित निपटान होता है। कचरे को खुले में फेंकना और जलाना वायु और मृदा प्रदूषण में योगदान देता है, जबकि अनुपचारित औद्योगिक और इलेक्ट्रहनिक कचरा गंभीर स्वास्थ्य खतरे पैदा करता है।

५. जलवायु परिवर्तनःभारत जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जिसमें परिवर्तित मौसम पैटर्न और समुद्र का बढ़ता स्तर सम्मिलित हैं। ये परिवर्तन कृषि, जल संसाधनों और तटीय समुदायों को प्रभावित करते हैं, जिससे महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक चुनौतियां सामने आती हैं।

पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान

१. वायु गुणवत्ता विनियमन को मजबूत करना : वायु प्रदूषण से निपटने के लिए, भारत को वाहनों और उद्योगों के लिए धुआँ उत्सर्जन के कड़े मानकों को लागू करने की आवश्यकता है। स्वच्छ ईंधन, इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देने से वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी आ सकती है। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक परिवहन अवसंरचना को बढ़ाने से निजी वाहनों पर निर्भरता कम हो सकती है।

२. जल प्रबंधन में सुधार : प्रभावी जल प्रबंधन के लिए प्रदूषण नियंत्रण, कुशल जल उपयोग और जल निकायों के कायाकल्प सहित बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। औद्योगिक अपशिष्टों हेतु कड़े नियम लागू करना, जैविक खेती के तरीकों को बढ़ावा देना और अपशिष्ट जल उपचार सुविधाओं में निवेश करना जल प्रदूषण को कम करने में सहायता कर सकता है। वर्षा

जल संचयन और पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों की बहाली से जल की कमी को कम किया जा सकता है।

३. वृक्षारोपण और वन संरक्षण को बढ़ावा देनाः वृक्षारोपण और मौजूदा वनों की सुरक्षा जैव विविधता को संरक्षित करने और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। वन संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना, स्थायी भूमि-उपयोग के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना और अवैध कटाई के खिलाफ कड़े कानून लागू करना भारत के हरित आवरण को संरक्षित करने में मदद कर सकता है।

४. अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों को बढ़ाना : अपशिष्ट संकट को दूर करने के लिए मजबूत अपशिष्ट प्रबंधन अवसंरचना विकसित करना आवश्यक है। इसमें कुशल पुनर्चक्रण प्रणाली स्थापित करना, स्रोत पर अपशिष्ट पृथक्करण को बढ़ावा देना और आधुनिक अपशिष्ट उपचार सुविधाएँ स्थापित करना शामिल है। अपशिष्ट में कमी, पुनरुपयोग और पुनर्चक्रण के महत्व पर जन जागरूकता अभियान भी बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन में योगदान दे सकते हैं।

५. जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होनाःजलवायु परिवर्तन की अनुकूलता हेतु शमन और अनुकूलन दोनों रणनीतियाँ आवश्यक हैं। नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, ऊर्जा दक्षता में सुधार करना और सुरक्षित कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम कर सकता है। प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को मजबूत करना, जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे में निवेश करना और कमजोर समुदायों का समर्थन करना जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद कर सकता है।

निष्कर्ष : भारत में पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार, उद्योगों और जनता की ओर से व्यापक और समन्वित प्रयास की आवश्यकता है। प्रभावी नीतियों को लागू करके, सुरक्षित पद्धतियों को बढ़ावा देकर और जागरूकता बढ़ाकर, भारत इन चुनौतियों से निपट सकता है और एक स्वस्थ और अधिक सुरक्षित भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। बेहतर पर्यावरण एक सामूहिक दायित्व है, और महत्वपूर्ण परिवर्तन में छोटे से छोटा कदम मायने रखता है।

सन्दर्भः

1. जी. आर.& योगेश (2023).आँगनवाड़ियों में पर्यावरण जागरूकता. अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व (5), 69-74.
2. मुरलीधर, -चन्द्रिका. (2023). पर्यावरण शिक्षाः एक उभरता हुआ ज्ञानक्षेत्र. अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, (5), 6-10.
3. शुक्ला, अनुराधा, भानुमती, स., मुकुंद, लक्ष्मी, ३ -नेहा. (2013). हमारा पर्यावरण-हरित रंग पर्यावरण के संग.
4. कु0 नैना शुक्ला. (2016). पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण जागरूकता. ।cademic Social Research-(P),(E) ISSN- 2456-2645, Impact Factor: 6-209 Peer-Reviewed, International Refereed Journal, 2(4).
5. रजक &राजकुमार. (2023). पर्यावरण जागरूकता के लिए रंगमंच का उपयोग. अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, (5), 43-45.
6. सेल्वम, सलाई, के.&शंकर. (2023). शैक्षिक विषयों के साथ पर्यावरण जागरूकता को जोड़ना. अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, (5), 46-50.
07. वन्दना,&कल्पना. (2023). छोटी उम्र के विद्यार्थियों के लिए पर्यावरण शिक्षाः उड़ान स्कूल का अनुभव. अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, (5), 65-68.
08. त्रिपाठी &नेहा. (2024). आमुख कथा 'पर्यावरण करेंसी'में निवेशः आने वाले कल के लिए सुरक्षित विकल्प.
09. नृप &नृपेंद्र अभिषेक. (2024). तबाही का नया स्वरूप है पर्यावरण संकट.
10. त्रिपाठी&जनमेजय मणि. (2024). आमुख कथा पर्यावरण चेतना से पृथ्वी को संधारणीय बनाना संभव.
11. श्रीवास्त्री, &श्वेता. (2024). स्वास्थ्य और पर्यावरण पर भारीः -कचरा.
12 डॉ. विनी शर्मा. (2023). पर्यावरण शिक्षा. Redshine Archive, 1.
13 Singh, P- K- (2016)- समर्थ भारत- Diamond Pocket Books Pvt Ltd-
14 Prahalad, C- K-] & Prahalad, C- K- (2005)- The Fortune at the Bottom of the Pyramid- Wharton School Pub-
15 Ahmad, S- T- (2024)- Vikasit Bharat Nirman- Chunautiyan Evam Sambhavanaen- Booksclinic Publishing-

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
writerchandresh@gmail.com

पैसे देकर खरीद रहे हैं सम्मान साहित्यकार

कई दिनों से मेरे मन में एक प्रश्न उठ रहा था जो आज आप सभी के समक्ष रख रहा हूं और आप सभी के विचार जानना चाहता हूं।जैसा कि आप सभी देखते हैं कि इन दिनों फेसबुक पर साहित्यिक मंचों का अम्बार सा लगा हुआ है। मातृभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा साहित्य साधना के उद्देश्य से स्थापित इन फेसबुक पटलों पर आए दिन कोई न कोई लेखन प्रतियोगिता आयोजित होती रहती है। दैनिक लेखन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ अवसर विशेष पर आयोजित होने वाली लेखन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के सम्मान पत्र देकर इन मंचों द्वारा आकर्षित किया जाता है। विशेषकर नवोदित रचनाकारों का फेसबुक पटलों से मिलने वाले सम्मानपत्रों के प्रति अच्छा खासा लगाव देखने को मिलता है। दो-चार फेसबुक साहित्यिक मंचों से श्रेष्ठ कवि/कवित्री का सम्मानपत्र पाकर वे अपने आपको किसी राष्ट्रीय कवि से कम नहीं समझते हैं। फेसबुक साहित्यिक पटलों द्वारा दैनिक लेखन प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को न केवल सम्मान पत्र दिया जाता है बल्कि समय-समय पर पटल द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले शुल्क आधारित साझा संग्रहों में भी शामिल किया जाता है।वर्तमान में सैकड़ों फेसबुक साहित्यिक मंच सक्रिय हैं जिनसे हजारों-लाखों की संख्या में रचनाकार जुड़े हुए हैं। प्रारंभ में इन फेसबुक साहित्यिक पटलों द्वारा मात्र लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थी फिर बाद में इन मंचों द्वारा अहनलाइन कवि सम्मेलनों का आयोजन भी किया जाने लगा।

कोरोना काल के दौरान फेसबुक मंचों द्वारा शुरू हुआ आनलाइन लेखन व कवि सम्मेलनों का यह कारवां अब बहुत आगे निकल आया है। अब इन पटलों द्वारा एक नया ट्रेड शुरू किया गया है वो है पटल के सक्रिय रचनाकारों का शुल्क आधारित साझा संग्रह प्रकाशन एवं शुल्क आधारित सम्मान पत्र प्रदान किया जाना। बहुत से फेसबुक पटलों द्वारा समय-समय पर विषय आधारित रचनाएं आमंत्रित की जाती हैं और फिर इनमें से रचनाओं का चयन शुल्क आधारित साझा संग्रह एवं सम्मान पत्र के लिए किया जाता है। हर नवोदित रचनाकार का सपना होता है कि उसकी रचनाएं किसी पुस्तक में प्रकाशित हों और उसे समाज में सम्मान मिले।अपने इस सपने को साकार करने के लिए नवोदित रचनाकार अच्छी खासी कीमत अदा करने को भी तैयार रहते हैं। शुल्क देकर मिलने वाले श्रेष्ठ कवि-कवित्री, श्रेष्ठ शब्दशिल्पी, साहित्य साधक, साहित्य शिरोमणि, कलम के सिपाही, कलम के जादूगर आदि सम्मान पत्र पाकर नवोदित रचनाकार फूले नही समाते। पैसे देकर खरीदे गए इन सम्मान पत्रों को पाकर उन्हें लगता है कि वो देश के नामी-गिरामी रचनाकारों की श्रेणी में शामिल हो गए। बहुत से फेसबुक पटल संचालक नवोदित रचनाकारों की इस लालसा का नाजायज फायदा उठाते हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार के सम्मान पत्रों का प्रलोभन देकर शुल्क आधारित साझा संग्रहों में सह रचनाकार बनाकर आर्थिक लाभ कमाते हैं।कुछ फेसबुक पटल संचालकों ने तो साहित्य सेवा के नाम पर शुरू किए इस कार्य को पूर्णतः व्यवसाय में परिवर्तित कर दिया है।

ऐसे मंच संचालकों का एक मात्र उद्देश्य साहित्य साधना की आंड़ में धन कमाना है।फ़ेसबुक पटलों पर आए दिन कोई न कोई शुल्क आधारित साझा संग्रह प्रकाशन तथा शुल्क आधारित सम्मान समारोह में प्रतिभागिता के विज्ञापन इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। एक दौर था जब रचनाओं के प्रकाशन से पूर्व संपादकीय टीम द्वारा रचनाओं को अच्छी तरह जांचा-परखा जाता था रचनाओं में अपेक्षित सुधार किया जाता था तब कहीं जाकर रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती थी।पर आज विभिन्न फेसबुक पटल संचालकों द्वारा जो साझा संग्रह प्रकाशित किए जाते हैं उनमें आपकी रचनाओं पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। आपकी रचना चाहे जैसी भी हो आप शुल्क देकर किसी भी साझा संग्रह में शामिल होकर श्रेष्ठ कवि/कवित्री का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। साथियों आज हमें विचार करना होगा कि पैसों से मिलने वाले इन सम्मान पत्रों की हमारे समाज में क्या कोई उपायदेता है। क्या इन सम्मान पत्रों की तुलना राज्य अथवा राष्ट्र स्तरीय साहित्यिक संस्थाओं से मिलने वाले उन सम्मान पत्रों से की जा सकती है जो किसी रचनाकार को उसकी श्रेष्ठ रचनाओं या कृतियों के मूल्यांकनोपरांत उसे प्रदान की जाती है।पैसे से खरीदे गए सम्मान पत्रों से आप अपनी फेसबुकवाल या घर की दीवारों को तो सजा सकते हैं परंतु इन सम्मान पत्रों की बदौलत समाज में वह मान-सम्मान कभी नहीं प्राप्त कर सकते जो किसी रचनाकार को उसकी श्रेष्ठ रचनाओं/कृतियों के लिए राज्य या राष्ट्र स्तरीय साहित्यिक संस्थाओं द्वारा प्रदान किया जाता है।

सुनील कुमार
बहराइच
6388172360

पुनर्वास

कन्याकुमारी के रामकृष्ण आश्रम से ४ बजे सुबह ही निकल सूर्योदय -दर्शन कर,वही से हम विवेकानंद रहक के लिये स्टीमर से चल पड़े।सागर का नीला विस्तृत आकाश,उठती -गिरती लहरें। अचानक सामने की सीट पर डॉ दास । बार- बार मेरी नजरें वही पहुँच टटोलने लगती, बिल्कुल वैसा ही रूप-रंग,वैसी ही कद -काठी।बस चेहरे पर तैर रही उदासी के बीच उम्र का विस्तार। फिर भी डायरेक्टर के पद का तेज । डॉ दास यहाँ कैसे? वो तो फैजाबाद के कुमारगंज ,कृषि-संस्थान के डायरेक्टर पद से रिटायर हुए थे। मैं भी तो थी, उनकी विदाई -समारोह में।बाद में भी मुलाकात होती रही थी । मृदुभाषी, मिलनसार,विनम्र व्यक्तित्व ।दोनो बेटियां भोपाल में ही थी ।बेटा-बहू साथ में कानपुर में थे। लग तो डॉ दास ही रहें हैं। इन्ही उधेड़बुन में हम विवेकानंद रॉक पहुच गये,और सब उतर कर इधर-उधर बिखर गुम हो गये।

लौटते- लौटते ३ बज चुके थे ।रूम में थोड़ी देर आराम कर हम फिर निकल पड़े आश्रम घूमने । सामने से फिर वही शख्सियत ।बिल्कुल करीब पहुंच मैंने कहा,डॉ दास ? ,ओ! ओ! मृणालिनी! तुम? यहाँ कैसे सर ? पहले आओ, आओ मेरे साथ, अगले ही पल हम उनके कमरे में थे। तख्त पर बिस्तर लगा था,कुसी ,मेज ,कुछ किताबें । उन्होंने सहायक से चाय मंगाई । मेरी आँखों मे तैर रहे प्रश्न जस के तस थे।

उन्होंने स्वयं ही बताना शुरू किया, रिटायरमेन्ट के बाद कुछ महीने बाद ही मैडम को कैंसर पता चला ,लास्ट स्टेज थी ।मैं पूरे समय अस्पताल और घर के बीच घूमता,उनकी सेवा में लगा रहता ।बहू ने जीना मुहाल कर दिया था। रोज लड़ती उलाहने देती। एक दिन उन दोनों ने सामान लादा और कहीं अलग रहने चले गए।

कभी पलट कर माँ को देखने तक नही आये। मैडम आखिरी समय तक बहुत हिम्मत से हालात से जूझती रही ,मेरा हौसला बढ़ाती रही। एक रोज मुझसे वचन लिया कि मैं उनके शरीर को बेटे -बहु को छूने नही दूंगा। उसके दो रोज बाद ही वह चल बसी । मैं टूटा हुआ ,बेजार ,बेटे को खबर दू या,न दूँ जाने दो,क्रुद्ध हो कह गई है। थी तो मां ही। मैंने बेटे को खबर की।। दोनो आये। सारे कर्मकांड के बाद एक दिन बेटे ने कहा पापा, आप अकेले कैसे रहियेगा? मैं क्या कहता? अगले ही दिन वो और बहू सामान सहित आ गया। मैं भी तसल्ली में था, चलो जब भी जागे तभी सबेरा।

कुछ दिनों बाद ही एक रोज बेटा आकर खड़ा हो गया ।बोला पापा! मुझे बिजनेस डालना है, पैसों की जरूरत है। कितने चाहिए? जितने हो सके। जानते ही है दस - बारह लाख से नीचे कोई छोटा सा बिजनेस भी शुरू नही किया जा सकता। मुझे रात भर सोचने विचारने में बीता। बच्चा तो अपना ही है, मरे-जिये इसी का तो है । यही विचार लिए मैने अगली सुबह चेक उसे थमा दिया। कुछ दिन सब ठीक रहा। खाना खाते समय एक दिन बेटे ने कहा-पापा! घर के पेपर कहाँ हैं? निकाल दीजिए ।

जब तक जीवित हूँ घर के पेपर नही दूंगा ,उसके बाद सब तुम्हारा,मैंने भी साफ- साफ कह दिया।मेरा खाना बंद कर दिया उन्होंने। मैं अपना भोजन खुद बनाने लगा । दिन भर बहू मुझ पर चीखती ,गालियां देती, बेटा कुछ सुनने को तैयार नही था। उसकी भी सहमति थी ।

एक रात बहू जोर- जोर से चिल्लाने लगी -अरे ये बुड्ढा सठिया गया है, मेरे कमरे में घुसता है।' मैं सन्न इतना बड़ा लांक्षन। एक बार लगा मैं चक्कर खा कर गिर जाऊंगा । किसे -किसे सफाई दूँगा, कमरे में कुछ देर को बिलख पड़ा. उठा , बैग में कपड़े डाले, सारे पेपर्स डाले और निकल पड़ा। कहाँ जाऊ क्या करूँ?बेटियों के घर! नही। आँसू बह रहे थे।स्टेशन पहुँचा सामने ट्रेन खड़ी थी बैठ गया उसमें।

अगली दूसरी शाम मैं कन्याकुमारी में था।स्टेशन के सामने ही आश्रम की बस खड़ी थीं,उसमें बैठ गया। बस तभी से यही आश्रम में हूँ। यही मेरा घर,यही मेरा परिवार -बोलते डॉ दास हाँफने लगे थे। आश्रम ने एग्रीकल्चर विभाग की जिम्मेदारी सौंप दी है।मैंने भी उसी में खुद को खपा दिया है। कैसा घर ,कैसा परिवार, हमने अपने स्वरूप को , अपना परिचय अब जाना है ।जीवन सचमुच कितना बड़ा भरम है। हम कितने सच्चे होने का दावा करते हैं, मगर हजारों हजार झूठ से बिंधे रहते हैं। कुछ चाह कर कुछ अनचाहे, अनजाने ।' मृणालिनी!'मैंने मैडम का वचन तोड़ा ,बेटे के मोह में उसी का दंड भोग रहा हूँ,'गहरी सांस ले रहे थे डॉ दास।एक चुप्पी पसर गई थी । सहायक ने चाय लेकर आ गया था ।

डा रेनू सिंह
गौतमबुद्ध नगर,
मो0 8506914478

विश यू अनहैप्पी पर्यावरणम

पर्यावरण को अशुद्ध रहना ही चाहिए अन्यथा कई प्रकार की अन्य समस्याएं उत्पन्न हो जाएँगी। मसलन पानी बेचने वालों ,डॉक्टरों , पाँच रुपये की दवा के पत्ते पर पचास प्रिंट करके बेचने वाली दवा कंपनियों, बीड़ी- सिगरेट बनाने,बेचने और पीने वालों का क्या होगा? निर्धारित रेट की रकम मिलने के बाद बाग या जंगल के दिन- दहाड़े मर्डर होने पर अपनी आँखें बंद रखने वाले रेंजर ,फारेस्टर और दरोगाजी का क्या होगा? धरती माता के स्वास्थ्य को उत्तमम बनाए रखने की कसम खाए पॉलीथीन उत्पादकों और और कर्मठ उपभोक्ताओ का क्या होगा? आदि -आदि। कितने लोग बेरोजगार हो जाएंगे?

देश वैसे ही बेरोजगारी से त्राहिमाम कर रहा है। अब ये और बात है कि इसीलिए प्रदूषणासुर और उसके भाई-बहन मान न मान मै तेरा मेहमान की तर्ज पर अपनी भारतभूमि पर ही रोहंगिया की तरह निवास करने की जिद ठाने हैं? राम जी की गंगा इतनी मैली हो चुकी है कि प्रदूषण के सेंसेक्स का उच्चतम बिन्दु फलांग चुकी है। जबकि हम लोग हर साल पर्यावरण देवता की खुशहाली के लिए होने वाले सरकारी यज्ञ में अरबों मुद्राएं स्वाहा किए जा रहे हैं। किन्तु बेचारे पर्यावरण का चेहरा दिनबदिन हैप्पीलेस होना बदस्तूर जारी है।

ये पर्यावरण दिवस की जयन्ती है या मखौल उडन्ती। जैसे किसी महापुरुष की जयन्ती या निर्वाण दिवस पर हम उन्हें याद करके कृतार्थ हो लेते हैं और स्वर्गीय फलाने भी अपने को धन्य ही मान लेते होंगे कि चलो अभी भी हमारे महापुरुष होने का स्टेटस तो बरकरार है। आज फैशनस्वरूप कितने पर्यावरण हितैषी महारथियों ने वृक्षारोपण करते हुए सेल्फी का स्टेटस लगाकर श्रीमान मोबाइल महोदय की गलियां एक दिन के लिए चकाचक कर डाली हैं। चलो कम से कम पर्यावरण प्रेम के लिए इतनी विकट आस्था के दुर्लभ दर्शन तो हुए। पिछले साल की तरह फिर एक बार पर्यावरण की गिरती सेहत के सम्बंध में टीवी चैनलों पर कॉंव- कांव कुछ जाने-माने महानुभावों के प्रवचन,बाइट्स में जिम्मेदारों के घड़ियाली आंसू और अखबारों के सम्पादकीय पेज राष्ट्रीय चिन्ता से ग्रस्त तो हुए। अरे जब हम अपने माता पिता का ख़याल नहीं रखते तो इनका क्यो करें? ऐसा भी नहीं है कि वृक्षारोपण होता ही नहीं है,ये झूठ बोलने का पाप कम से कम मैं नहीं कर सकता। करोड़ों पौधे लगाने की औपचारिक रस्म निभाई जाती है। मीडिया बुलाई जाती है। बिल्कुल उत्सव जैसा ही तो है सबकुछ। एक पौधा पकड़े आठ लोग फोटो खिंचाते हैं जिनमें से उसकी परवाह करने वाला एक भी नहीं? इस नशे की जवानी फोटोसेशन के बाद रात बारह बजे तक ही रहती या अगले दिन शराबियों की तरह रात गयी और बात गयी। बाक़ायदा गा-बजा के ,बाज़ीगरी दिखाकर करोड़ों के वारे-न्यारे करने का उत्सव। फिर हफ्ता-पंद्रह दिन में ये लापरवाह सदाचारी इन भूखे दृ प्यासों को बकरियाँ के हवाले कर देते हैं जो कि चर के पर्यावरण दिवस को फिर अपर्यावरण दिवस में बदल डालती हैं। अरे!जब हम इतने सालों से नहीं सुधरे तो अब क्या सुधरेंगे?

माननीय पर्यावरण महोदय की सेहत सुधर तो जाए लेकिन ऐसा चाहता कौन है? यदि गंगा निर्मल हो गयी, तालाब अमृत सरोवर हो गये, त्तो फिर हर साल ये महोत्सव मनाने का क्या मतलब रह जायेगा? अतः उनके लिए ऐसे आवरण की सुव्यवस्था की जाती है जिसकी उम्र ज्यादा से ज्यादा एक सप्ताह हो। अपने निकम्मेपन की कसम सब्जी और राशन पालीथीन में ही लेकर आएँगे, मूतने भी बाइक से ही जाएँगे, लॉट साहिबी जिंदाबाद रहे इसलिए अंजुरी बाँध के तेल पीने वाले वाहन ही चलाएँगे,क्योकि बीमारियों को जिन्दा रहना ही चाहिए। यदि वे नहीं होंगी तो आपदा जीवी डॉक्टरों का क्या होगा? उनके बच्चों को ब्रेड-बटर कहाँ से आएगा। अतः उन्हें ऑक्सीजन देने का दिखावा भी तो ज़रूरी है न! भले ही भविष्य में पानी की बोतलों की तरह ऑक्सीजन क्यों न खरीदने पड़े?

राम भोले शर्मा
संडीला, हरदोई

बेरोजगारी में राह–माइक्रोफाइनेंस

आज के समय में जब बेरोजगार और बेरोजगारी चुनावी शब्द बन कर रहे गये हो। इनकी याद शासन-प्रशासन को केवल चुनाव में आती हो। बेरोजगार आर्थिक समस्या से, मार्गदर्शन के आभाव में, टीम वर्क की कमी से जूझते हुए जब अपनी जिन्दगी से परेशान और हताश हो जाता है। ऐसे में उसे माइक्रोफाइनेंस डूबते को सहारे के रूप में प्रकट होता है। माइक्रोफाइनेंस, या लघु वित्त, वित्तीय सेवाओं की वह प्रक्रिया है जिसमें गरीब और निम्न-आय वाले व्यक्तियों को छोटे-छोटे ऋण, बचत खाते, बीमा, और अन्य वित्तीय सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उन लोगों को वित्तीय समर्थन प्रदान करना है जो पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर हैं और जिन्हें आमतौर पर बैंकों द्वारा ऋण प्राप्त करना मुश्किल होता है। इक्रोफाइनेंस की भूमिका सामाजिक, आर्थिक और वित्तीय दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ माइक्रोफाइनेंस की भूमिका को विभिन्न पहलुओं से समझाया गया है। माइक्रोफाइनेंस छोटे उद्यमों और स्वरोजगार को प्रोत्साहित करता है, जिससे आर्थिक विकास में योगदान होता है। जब लोग छोटे-छोटे ऋण प्राप्त करते हैं, तो वे छोटे व्यवसाय शुरू कर सकते हैं या अपने मौजूदा व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होती है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न होते हैं, जिससे गरीबी कम करने में मदद मिलती है।गरीबी उन्मूलन में माइक्रोफाइनेंस की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह उन लोगों को वित्तीय संसाधन प्रदान करता है जो पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं का उपयोग नहीं कर सकते। छोटे-छोटे ऋण, जिन्हें माइक्रोक्रेडिट कहा जाता है, गरीब परिवारों को अपनी आय बढ़ाने, अपने जीवन स्तर को सुधारने और अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

माइक्रोफाइनेंस विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता और व्यवसायिक अवसर प्रदान करके, माइक्रोफाइनेंस उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है। यह देखा गया है कि जब महिलाएं वित्तीय निर्णयों में शामिल होती हैं, तो वे परिवार और समुदाय के कल्याण के लिए बेहतर निर्णय लेती हैं।माइक्रोफाइनेंस सामाजिक न्याय और समावेशन को बढ़ावा देता है। यह उन लोगों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है जो समाज के हाशिए पर हैं और जिनके पास पारंपरिक वित्तीय संस्थानों तक पहुंच नहीं है। इससे आर्थिक असमानता को कम करने में मदद मिलती है और समाज में अधिक समावेशी विकास को प्रोत्साहन मिलता है।माइक्रोफाइनेंस द्वारा प्रदान किए गए संसाधन गरीब परिवारों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा का लाभ उठाने में सक्षम बनाते हैं। जब परिवारों को वित्तीय स्थिरता मिलती है, तो वे स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक खर्च कर सकते हैं, जिससे उनकी संपूर्ण जीवन गुणवत्ता में सुधार होता है। इसी तरह, माता-पिता अपनी आय का एक हिस्सा बच्चों की शिक्षा पर खर्च कर सकते हैं, जिससे अगली पीढ़ी को बेहतर अवसर मिलते हैं।माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से स्थानीय समुदायों में निवेश बढ़ता है, जिससे सामुदायिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है। स्थानीय व्यवसायों को समर्थन मिलना, व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि और आर्थिक संबल प्रदान करना, ये सभी कारक समुदायों को अधिक समृद्ध और स्वावलंबी बनाते हैं।

माइक्रोफाइनेंस संस्थान अपने ग्राहकों को वित्तीय शिक्षा और जागरूकता भी प्रदान करते हैं। यह ग्राहकों को वित्तीय निर्णय लेने में मदद करता है और उन्हें अपने आर्थिक संसाधनों का प्रबंधन करने की समझ विकसित करता है। वित्तीय शिक्षा से न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक वित्तीय सुरक्षा में भी सुधार होता है।माइक्रोफाइनेंस संस्थान तेजी से नई तकनीकों और डिजिटल साधनों का

उपयोग कर रहे हैं ताकि अपनी सेवाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा सकें। मोबाइल बैंकिंग, डिजिटल भुगतान और अहनलाइन ऋण आवेदन जैसी तकनीकें वित्तीय सेवाओं को सुलभ और सस्ता बनाती हैं, जिससे गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन बढ़ता है।माइक्रोफाइनेंस वित्तीय संस्थानों के लिए नवाचार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। ये संस्थान लगातार नए उत्पाद और सेवाएं विकसित कर रहे हैं ताकि गरीबों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इन नवाचारों में कृषि ऋण, लघु व्यवसाय ऋण, और आपातकालीन ऋण शामिल हैं, जो वित्तीय सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करते हैं।

कुछ माइक्रोफाइनेंस संस्थान पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम भी चलाते हैं। ये संस्थान पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करते हैं, जैसे सौर ऊर्जा, जल संरक्षण, और जैविक खेती। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक विकास भी होता है।माइक्रोफाइनेंस की भूमिका बहुआयामी है और यह न केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर बल्कि सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यह वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करता है, गरीबी उन्मूलन में सहायता करता है, महिलाओं को सशक्त बनाता है और समग्र आर्थिक विकास में योगदान देता है।माइक्रोफाइनेंस का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह पारंपरिक वित्तीय प्रणालियों की सीमाओं को पार करते हुए समाज के उन वर्गों तक पहुंचता है, जो अन्यथा वित्तीय सेवाओं से वंचित रह जाते। इस प्रकार, माइक्रोफाइनेंस एक शक्तिशाली उपकरण है जो न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक परिवर्तन भी ला सकता है, और इसे प्रभावी रूप से लागू करने से समाज में समग्र समृद्धि और स्थिरता लाई जा सकती है।

"लेखक एक माइक्रो फाइनेंस कम्पनी में उच्च पद पर तैनात हैं और 20 सालो का इस क्षेत्र में अनुभव रखते हैं।

मेरा गांव

आइए मेरे गाँव में,
अजी बैठिए छांव में,
प्रकृति के नजारे को,
समीप से देखिए।
समृद्ध खलिहान है,
मेहनती किसान हैं,
ताजे-ताजे उपज का,
आंनद तो लीजिए।
कोलाहल से दूर है,
सुकून भरपूर है,
शीतल ठंडी हवा का,
सेवन तो कीजिए।
सबसे अच्छी बात है,
दादी नानी का साथ है,
मीठे ताल-तलैया का,
अजी जल पीजिए।।
लोग यहाँ के अच्छे हैं,
दिल के बड़े सच्चे हैं,
झूठ और फरेब से,
होते कोसों दूर हैं।
सुबह उठ जाते हैं,
भ्रमण कर आते हैं,
अंखियों में इनके तो,
नूर भरपूर है।
सबको आशियाना है,
नहीं कोई बेगाना है,
अपने ही आमोद में,
रहते ये चूर हैं।
सादगी इन्हें भाता है,
दिखावा नहीं आता है,
अपनी धरती माँ पे,
करते गुरुर हैं।।

कुमकुम काव्याकृति
मुँगेंर, बिहार

त्रिपुरा बिन पर्यटन अधूरा

पूर्वोत्तर के सभी राज्य हमेशा से मेरे लिए आकर्षण का केंद्र रहे हैं। वहां के अनछुए ऊँचे -ऊँचे पहाड़, अलग-अलग तरह की वनस्पति, पहाड़ों से गिरते झरने, चट्टानों को काटकर बनाई हुई गुफाएं, इन सब के अलावा कल-कल कर बहती हुई नदियाँ जिनमें किसी भी तरह की गंदगी या प्रदूषण नहीं है। वहां की नदियों या झीलों के साफ़ पानी में नौका विहार करना और चारों तरफ पहाड़ और हरे भरे किनारों को देखना मन को आह्लादित कर जाता है । मेघालय में स्थित चेरापूंजी की मावम्लूह गुफाएं हों या वहां का हाथी झरना हो, उमीयम झील हो या खासी हिल में स्थित लैटलम ग्रैंड कैन्यन हो या दावकी नदी जहाँ का पानी बहुत ही साफ़ है बिल्कुल आईने की तरह । शिलांग में आना एक अच्छा अनुभव रहा था । शिलांग की खूबसूरत वादियों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा सुना हुआ था । रूबरू देखने से वो सब सच भी लगा स्वर्ग सा सुन्दर। उसके बाद अगरतला आने का एक अलग मकसद था ।

वहां के लोगों से खासकर जनजातीय लोगों को जानना और उनकी संस्कृति को पहचानना उनके रहन-सहन के बारे में जानने की अलग तरह की जिज्ञासा थी। अगरतला पहुँचने के बाद उस छोटे से शहर में घूमना बड़ा सुखदायी लगा । अगर आप अगरतला गए हैं और वहां के जयंतिया पैलेस को नहीं देखा शायद आपने बहुत कुछ खो दिया है । अपनी खूबसूरती के साथ-साथ वो अपनी महान संस्कृति को समेटे हुए है जो आप का मन मोह लेगा । राजमहल की विशालता और सुन्दरता को देखने पर उस समय के राजाओं के बारे में भी बहुत कुछ पता लगता है ।

इस राजमहल में १६०६ से लेकर १६४७ तक के सभी हिंदू राजाओं की तस्वीरें लगी हुई हैं अब इस जगह को संग्रहालय का रुप दे दिया गया है वहाँ जाकर मुझे अगरतला की प्राचीन संस्कृति को जानने देखने का मौका मिला । इस संग्रहालय में मछुआरों द्वारा प्रयोग में लाई गई प्राचीन वस्तुओं को दिखाया गया है । खेती करने के प्राचीन औजारों और साधनों को , अनाज को साफ करने की विभिन्न तकनीकों को दर्शाया गया है । इसके अलावा उस समय में औरतों द्वारा पहने जाने वाले गहनों के साथ- साथ , प्राचीन हिंदू संस्कृति को, प्राचीन दैवीय मूर्तियों को , प्राचीन गुफाओं को भी बड़ी खूबसूरती से दर्शाया गया है। कुछ फोटोज भी दीवारों पर लगे हुए मिले जो स्थानीय लोगों के साथ अंग्रेजों ने खिचवायें हुए है जो दिखाती है कि किस तरह से अंग्रेज आए और धीरे- धीरे सारी संस्कृति को , मान्यताओं को , विरासत और धरोहर को कैसे विनाशकारी मोड़ पर छोड़कर चले गए ।

एक ऐसा राज्य जो हिन्दू संस्कृति को समेटे हुए था अंग्रेजों के आने के बाद उस पर इसाई संस्कृति का प्रभाव बढ़ने लगा । बहुत अच्छा लगा यह सब देखकर कि लुप्त प्राय होती संस्कृति को इतने अद्‌भुत और सलीके से सहेजा गया है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां इस संस्कृति को देख सके , परख सके और यह जान सके कि किसी भी राज्य को विकसित अवस्था में लाने के लिए लोगों के द्वारा कितना कुछ किया गया है और किस तरह से उन्होंने उन सब बातों को सहेज कर भी रखा है। यह भी एक बड़ा प्रशंसनीय कदम है । जिसके लिए त्रिपुरा के उन सभी लोगों को मेरा हार्दिक सलाम है। त्रिपुरा के बारे में और ज्यादा जानने के लिए और उसकी जो प्रकृति है उसको और अच्छे से समझने के लिए अगरतला से मैंने टैक्सी ली झम्पोई हिल्स के लिए सुंदर सफर था । प्रकृति अपने पुरे शबाब पर थी ,अहा ! क्या अद्‌भुत नजारा था, बहुत सुंदर खिले हुए फूल अपनी सौन्दर्य छटा को बिखेर रहे थे । पेड़ पौधों , सुंदर फूलों की बिखरती छटा को देखना हो तो मुझे लगता है त्रिपुरा राज्य बहुत सुंदर है । वहां पर उदय होते सूरज को देखने के लिए लोग जाते हैं । किसी समय में वहां पर ट्रैकिंग होती थी जो किन्हीं कारणों से बंद कर दी गई है।

एक बात जो दूसरे राज्यों से अलग देखने को मिली वो है अगरतला में स्थित हैरिटेज पार्क । इस में पुरे त्रिपुरा राज्य के सभी जिलों का नक्शा दिखाया गया है , वहाँ के दर्शनीय स्थलों और स्मारकों के माडल को दिखाया गया है और वहाँ पर पंहुचने के सभी मार्गों और साधनों को भी दर्शाया गया है । अगर आप त्रिपुरा के सभी जिलों में नहीं पहुँच सकते तो वहां पर बनाये हुए माडल को देखकर बहुत कुछ जान सकते हैं । यहाँ आकर सुकून मिला की त्रिपुरा भ्रमण के दौरान जो छुट गया था उसे एक माडल के रूप में देखने का मौका मिल गया ।

त्रिपुरा के सिपाहीजाला जिले में बना हुआ नीर महल अगरतला से ५३ किलोमीटर दूर रुद्रसागर झील में स्थित है । यह भारत का सबसे बड़ा जल महल भी है जिसे देखने के लिए नौका के द्वारा जाना पड़ता है । चारों तरफ पानी से घिरा लाल और सफ़ेद रंग से बना हुआ महल किसी का भी मन मोह लेगा । इसे हिन्दू राजा के द्वारा बनवाया गया है परन्तु यह हिन्दू और मुस्लिम स्थापत्य कला का एक बेहतरीन नमूना है । आश्चर्यजनक लगता है कि उस ज़माने में भी ,सीमित साधनों से ऐसी इमारत बनाई गई जो आज भी अपनी उत्कृष्टता को संजोये हुए है ।

उनाकोटी नाम तो सुना ही होगा ना आपने ? त्रिपुरा

राज्य के उनाकोटी जिले के कैलाशहर में स्थित एक ऐतिहासिक व पुरातत्विक हिन्दू तीर्थस्थल है यहाँ भगवान् शिव और उनके परिवार को समर्पित मूर्तियाँ है जिन्हें देखने पर ऐसा लगता है कि चट्टानों को काटकर मूर्तियाँ उकेरी गई हैं । इनका निर्माण ६वीं और ८वीं शताब्दी में किया गया है । यह मूर्तियाँ बहुत ज्यादा ऊंचाई पर बनाई गई है जिनको देखने पर हैरत होती है कि आखिर इतने सीमित साधनों में इतनी ऊंचाई पर इतने सधे हाथों से और खूबसूरती से बनी हुई है कि आँख और नाक के आकार कहीं से भी थोड़ी सी भी बिगड़ी हुई नहीं लगती । मूर्तियों में इतनी विलक्षणता,सजीवता और सुन्दरता को देखकर लगता है मूर्तियाँ बनाने वाले लोगों में कितना संयम और सामर्थ्य होगा । होता है ना अचरज सोचकर ! अब बात करते हैं अगरतला के रेलवे स्टेशन की जो बहुत ही साफ सुथरा और छोटा सा बहुत अच्छा बना हुआ है। उदयपुर जाने के लिए वहां से मैंने ट्रेन पकड़ी हालाँकि उसमें बहुत ज्यादा भीड़ थी लेकिन बहुत सारी मशकत करनी पड़ी और आखिरकार १५ मिनट के सफर के बाद ही मुझे खिड़की वाली सीट मिल गई जहां से मैं बड़ी आसानी से बाहर के सारे दृश्यों को देख सकते थी। यहाँ की पेड़ पौधों की विभिन्नता देखते ही बनती थी द्य ऊँचे ऊँचे देवदार के वृक्ष, सुपारी के पेड़ , साल, चामल, गरजन आदि के पेड़ बहुतायत में पाए जाते हैं द्य मै महसूस कर रही थी अगर ट्रेन की स्पीड कम हो जाए तो इन भागते हुए पेड़ों को आराम से निहार लूँ उन्हें अच्छे से आँखों में बसा लूँ द्य

उदयपुर पहुंचकर वहां से टैक्सी ली डम्बूर सागर लेक के लिए । कुछ जगह तो सड़क अच्छी थी कहीं बिल्कुल कच्चा रास्ता था । वीरान सा सफर था ऐसा लग रहा था यहाँ बहुत ही कम पर्यटक आते है । डेढ़ घंटे के सफर के बाद डम्बूर लेक पहुँच गई । टैक्सी से उतरकर देखा वहां ना तो कोई बड़ी दूकान थी ना ही खाने का कोई इंतजाम । एक बार तो लगा कहीं गलत जगह तो नहीं आ गई । इतने में मेरी नजर पड़ी एक छोटी सी टपरी पर जिसके पास चाय थी वो भी बकरी के दूध से बनी हुई द्य दो तीन तरह के बिस्कुट और चिप्स के पैकेट । खैर चाय पीकर कच्ची सी सीढियों से नीचे की ओर डरते डरते उतरी तो देखा ४१ वर्ग किलोमीटर का एक विशाल और लुभावना जल निकाय द्य चारों ओर शानदार हरी वनस्पतियों की अंतहीन जादुई और आकर्षक रेखा । मै मंत्रमुग्ध सी अपनी सारी थकान भूल गई।

हाथ से चलाने वाली नौका थी और मोटर से चलने वाली भी । मुझे बहुत देर इन्तजार करना पड़ा कुछ लोग ओर आए फिर नौका पर बैठ चले पानी पर सैर करने । पूरी झील पर ४८ छोटे छोटे द्वीप है। प्रवासी पक्षी और जल क्रीड़ायें नौका विहार के आकर्षण को और भी बढ़ा रही थी । झील के पास एक हाइडल परियोजना है जहाँ से गोमती नदी का उद्गम होता है । करीब आधा घंटा की नौका विहार के बाद एक द्वीप पर उतरे जहाँ सरकार द्वारा बहुत ही आलिशान रेस्टोरेंट बना हुआ था जहाँ दोपहर का खाना खाया द्य वहां पर रात को रुकने के लिए कह्टेज भी बने हुए थे और फलों के पेड़ भी लगे हुए थे । वहां से वापिस आने का मन नहीं हो रहा था लेकिन आना ही पड़ा । टैक्सी से वापिस आते हुए रास्ते में बारामुडा वह्टरफह्लल देखा द्य इतनी ऊंचाई से गिरता हुआ पानी अपने तेज शोर के साथ मन को भी अपनी और खींचे जा रहा था ।

अगले दिन का मेरा प्रोग्राम था त्रिपुरा के गोमती जिला में जाना जो गोमती नदी के किनारे पर स्थित है और जिसकी प्रसिद्धी को विश्व में पहुँचाया है वहां की छाबिमुडा की गुफाओं ने । गोमती नदी के किनारों पर इसके दोनों तरफ की पहाड़ की चोटी पर बहुत बड़ी बड़ी शिव, विष्णु ,कार्तिक, महिषासुर, दुर्गा आदि की छवि बनी हुई थी जो चट्टानों पर उकेरी गई हैं । इसके अलावा पहाडों को काटकर बड़ी बड़ी गुफाएं बनाई हुई है जिनके अंदर मूर्तियाँ रखी हुई है ।उन गुफाओं को देखकर आप सोचने पर मजबूर हो जाते हो कि मानव ने इतनी ऊंचाई और इतने पानी के अंदर वो आकृतियाँ कैसे उकेरी होंगी ओर इतने सौ सालों के बाद भी वो वैसी ही दिख रही हैं द्य मनुष्य की कला का एक ओर उत्कृष्ट नमूना जो किसी को भी दांतों तले ऊँगली दबाने के लिए काफी है ।

त्रिपुरा राज्य की मेरी ये यात्रा बहुत ही खुबसूरत रही । अगर आप प्रकृति प्रेमी है और प्रकृति के सानिध्य में अपने कुछ दिन बिताना चाहते है तो अगरतला और उसके आसपास की जगहें आप को आनन्दित कर देंगी । ये हसीं वादियाँ आपको परम सुख, परम सुकून और आत्मिक शांति से लबरेज कर देंगी। बहुत कम पर्यटक यहाँ आते है तो आप अनछुई पगडंडियों ,वनस्पतियों पहाड़ों चट्टानों को देखकर ख़ुशी महसूस कर सकते हो । लेकिन यह ओर बात है कि आपको सुविधाएँ कम मिलेंगी । पर्यटकों को आकर्षित करने और पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होने में अभी इसको बहुत समय लगेगा ।

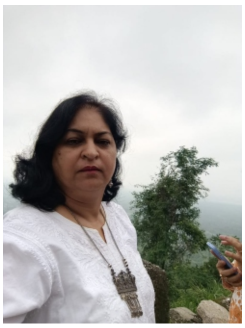

नीलम नारंग
ग्रेटर मोहाली (पंजाब)
मोबाइल 9034422845

लीक ही लीक

सुना है फिर से कोई पेपर लीक हुआ है । अरे! हुआ होगा, इसमें आश्चर्य कैसा ? पिछले दो वर्षों में देश के हर कोने से, हर तरह की परीक्षाओं के पेपर लीक होने के इतने मामले सामने आ चुके हैं कि अब यदि दो-चार दिनों तक पेपर लीक होने का समाचार न दिखे तो हैरत होती है। पेपर लीक होने के मामले में हम दुनिया में नंबर वन हैं। हमें गर्व है कि दुनिया में इस फील्ड के बेताज बादशाह हमीं हैं । दुनिया का कोई देश इस मामले में हमारे सामने नहीं टिक सकता । हर बार हमारा मुकाबला केवल और केवल हमसे होता है । हम हर अगली परीक्षा में पेपर लीक करके अपना रिकॉर्ड और सुधार लेते हैं ।

पेपर लीक होने की आवृत्ति देखकर क्रिकेट की तरह परीक्षा लीक के आँकड़े जमा किए जाने लगे हैं । किस राज्य में, किस परीक्षा के, कब-कब और कितने पेपर लीक हुए, सब आँकड़े आज उपलब्ध हैं । क्रिकेट के आँकड़ेबाज, आँकड़ों को रोचक बनाने की रेसेपी जानते हैं । जिस तरह टी २० और टेस्ट मैचों के आँकड़े एक कॉलम में नहीं रखे जाते वैसे ही पेपर लीक के सभी आँकड़े एक साथ नहीं रखे जा सकते । यही कारण है कि पेपर लीक होने के मामले भी केंद्रवार, राज्यवार, विभागवार, परीक्षावार, कक्षावार, विषयवार व वर्षवार आदि-आदि कह्लम में सहेजना जरूरी हो गया है ।

हमारे मित्र बटुक जी जब भी पेपर लीक होने का समाचार सुनते हैं उदास हो जाते हैं । एक तो उनके जमाने में पेपर लीक होते नहीं थे और दूसरा उनका खुद का अनुभव भी जुदा था । अतीत में खोकर अक्सर कहते हैं कि हमने तो वर्षों छोटे-छोटे बच्चों के हाथों सैकड़ों प्रेमपत्र बिना लिफाफे के अपनी माशूकाओं को भेजे हैं पर मजाल है कभी कोई पत्र लीक हुआ हो । इतनी जल्दी-जल्दी तो आजकल सार्वजनिक स्थानों पर लगी नगर निगम की पानी की टोंटियाँ तक लीक नहीं होतीं जितनी रफ्तार से तमाम सरकारी व्यवस्था और चौकसी के बावजूद पेपर लीक हो जाते हैं । बच्चों की हालत तो वैसी ही हो जाती है जैसे कोई भक्त सूर्य को अर्ध्य देने गंगा में कमर तक डूबा खड़ा हो और मंत्रोच्चार से पहले ही अंजुली में लिया गंगाजल उँगलियों के बीच से समूचा लीक हो जाए और बेचारा भक्त तमाम कोशिश के बावजूद सूर्य की कृपा पाने से वंचित रह जाए ।

लीक को लेकर बटुक जी की संवेदनशीलता सर्वविदित है । भले ही उनके प्रेमपत्र लीक नहीं हुए लेकिन लीक से उनका गहरा नाता है । यूनियन कार्बाइड से मिक गैस लीक होने के दूसरे दिन उनके सिर से पिता का साया उठ गया था तभी से लीक शब्द जब भी उनके सामने आता है वह बेचैन हो जाते हैं । चेहरे पर गहरा विषाद दिखाई देने लगता है ।

पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने जब-जब विशाखापटनम, गोदावरी, भिलाई, प्रयागराज आदि में पेट्रोलियम लीक, केमिकल लीक, अमोनिया लीक के हादसे पढ़े हैं वह कई-कई दिनों तक उदास बने रहे । यह लीक शब्द का ही असर है कि पिछले दिनों पनामा पेपर लीक होने पर भी वह हफ्तों सदमें में रहे थे जबकि उनका इससे कुछ लेना देना नहीं था । उन्हें उदास देखकर कुछ लोग चटखारे लेते पाए गए थे 'अपने बटुक जी बहुत छुपे रुस्तम हैं .. बड्डे-बड्डे लोगों के साथ उनका नाम भी, लगता है पनामा पेपर में दर्ज है '। उनकी चिंता दरअसल दूसरी थी । वह जानते हैं कि लीक होने के पीछे जो कारण होते हैं वे कभी सामने नहीं आते और न ही दोषी कभी पकड़ाई में आते हैं । उन्हें तो भाग निकलने का सेफ पैसेज तक मुहैया करा दिया जाता है । गैस कांड से लेकर कितने ही उदाहरण उनके जेहन में उस समय घूम रहे थे ।

शुभचिंतक उन्हें समझाते हैं । लीक होना इस देश में सहज स्वीकार्य है । लीक होना कोई लीक से हटकर घटना नहीं है । आदिकाल से देश में लीक होने की प्रथा चली आ रही है । समुद्र मंथन के बाद अमृत पीने के लिए सुरों की क़तार मे जा विराजे असुर स्वरभानू की पहिचान सूर्य व चंद्र ने मोहिनी रूपधारी विष्णु के सामने लीक कर दी थी । विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर उड़ा दिया । तभी से सूर्य और चंद्र पर ग्रहण लगने लगा । लोग उनसे कहते हैं कि आप लीक से हटकर सोचना बंद कीजिए और खुश रहिए ।

आजकल तो चुनाव-घोषणा से पहले तारीख तक लीक हो जाती है । कितने नेताओं के भ्रष्टाचार और रिश्वत से लेकर अंतरंग पलों के वीडियो लीक होते हैं पर कभी कोई चुनाव नहीं हारता । कुछ लोग तो अच्छे-अच्छे पद भी पा जाते हैं । बटुक जी फिर भी चिंतित हैं । कहते हैं मैं उस दिन को लेकर फिक्रमंद हूँ जब परीक्षा होने से पहले मेरिट लिस्ट लीक हो जाएगी, एयरपोर्ट बनने से पहले उसकी तस्वीरें लीक हो जाया करेंगी, सुनवाई से पहले ही सजा की मियाद लीक हो जाएगी, जाँच से पहले जाँच रिपोर्ट सामने आ जाएगी और वोट पड़ने से पहले परिणाम लीक होने लगेगा ? किसी ने समझाइश दी - 'फिकर नॉट यार! जब ऐसा होगा तब तक मंगल ग्रह आबाद हो जाएगा, अपुन वहीं चलेंगे रहने ।'

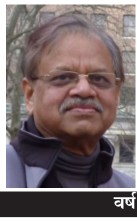

अरुण अर्णव खरे
दानिश नगर, भोपाल
मो0 : 9893007744

01 जुलाई से लागू होगा नया कानून

ब्रिटिश कालीन भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम को निरस्त करते हुए भारतीय गृह मंत्रालय ने हाल ही में तीन नए आपराधिक कानूनों, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, २०२३, भारतीय न्याय संहिता, २०२३ और भारतीय साक्ष्य अधिनियम, २०२३ को लागू करने की घोषणा की, जो १ जुलाई, २०२४ से प्रभावी होंगे।

सरकार द्वारा नया आपराधिक कानून लागू करने के इसके बाद पुरानी धाराएं खत्म हो जाएंगी। नई धाराएं लागू हो जाएंगी। आप पुलिस कर्मचारी या अधिवक्ता भले ही न हो लेकिन भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की ३०२, ३०७, ३७६ जैसी धाराओं का मतलब अच्छी तरह से जानते होंगे। हत्या, हत्या का प्रयास, दुष्कर्म की प्रचलित ये धाराएं अब एक जुलाई से खत्म हो जाएंगी। सरकार नया कानून लागू करने जा रही है। एक जुलाई से भारतीय दंड संहिता (आईपीसी), भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) खत्म हो जाएगी। इसके बदले भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) लागू हो जाएगी।थानों से लेकर अदालतों में अभी तक हम अंग्रेजों द्वारा वर्ष १८६० में बनाए गए कानून आईपीसी को ढो रहे थे। हमारी सारी कानून व्यवस्था इसी के आधार पर चलती थी , इसी के तहत रिपोर्ट दर्ज होती थी और अदालतों में सुनवाई होती थी। किसी भी एफआईआर को देखे तो उसमें सबसे पहले भारतीय दंड संहिता १८६० ही लिखा होता था। एक जुलाई से इसकी जगह एफआईआर में भारतीय न्याय संहिता लिखा मिलेगा। जो भारतीयों के लिए बहुत ही गौरव का पल होगा। ७६ साल से भारत आजादी के बाद भी ब्रिटिश कानून के आधार पर कार्य कर रहा था।

आईपीसी में ५११ धाराएं थीं, जबकि बीएनएस में ३५८ धाराएं हैं। नए कानून के आने से अधिवक्ता भी नए कानून की किताबें पढ़ रहे हैं। हत्या के लिए अभी तक धारा ३०२ के तहत रिपोर्ट दर्ज होती थी, लेकिन एक जुलाई से धारा १०३ के तहत रिपोर्ट दर्ज होगी। दुष्कर्म की धारा ३७६ की जगह मामला अब धारा ६३ में दर्ज होगा। छेड़खानी की धारा ३५४ अब मानहानि की धारा होगी। पहले मानहानि की धारा ४६६ हुआ करती थी।डकैती की धारा ३६५ की जगह ३१० (२) होगी। हत्या के प्रयास में अभी तक धारा ३०७ लगती थी, लेकिन अब १०६ के तहत रिपोर्ट दर्ज होगी। धोखाधड़ी के मामले धारा ४२० की जगह ३१६ में लिखे जाएंगे। इसी तरह से सभी अपराध की धाराएं परिवर्तित कर दी गई हैं। अब पुलिसकर्मी इसे पढ़ रहे हैं। नए कानून के तहत सात साल से ज्यादा सजा वाले मामलों में फहरेंसिंक रिपोर्ट अनिवार्य होगी। इसके साथ ही अभी तक आरोपियों के हाथों में हथकड़ी लगाने का प्रावधान नहीं था। अब सात साल से ज्यादा सजा के मामले में पुलिस हथकड़ी का इस्तेमाल कर सकेगी।

एक जुलाई से नया कानून लागू होने पर अधिवक्ताओं को भी तमाम कठिनाइयों को सामना करना पड़ेगा। अधिवक्ताओं के सामने दिक्कत यह है कि पुराने मुकदमों की सुनवाई पुरानी धाराओं के तहत होगी। सजा का भी प्रावधान पहले वाला होगा। ऐसे में अधिवक्ताओं की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा बढ़ गई है। अधिवक्ताओं को नए कानून के तहत जानकारी देने के लिए कार्यशाला की जरूरत होगी।भारत के आपराधिक न्याय प्रक्रिया में नया कानून दंड प्रक्रिया से न्याय प्रक्रिया की ओर एक नयी शुरुआत है, जो पूर्णतया भारतीय है. नए कानूनों को ध्यान से पढ़ने पर पता चलेगा कि इनमें न्याय के भारतीय दर्शन को स्थान दिया गया है. हमारे संविधान निर्माताओं ने भी राजनीतिक न्याय, आर्थिक न्याय और सामाजिक न्याय को बरकरार रखने की गारंटी दी है. संविधान की यह गारंटी १४० करोड़ के देश को यह तीनों विधेयक देते हैं. पहली बार भारत द्वारा, भारत के लिए और भारतीय संसद से बनाए गए कानून से हमारी आपराधिक न्याय प्रक्रिया चलेगी. इसमें भारतीय मिट्टी की सुगंध है. यह हम भारतीयों के लिए गौरव की बात है।

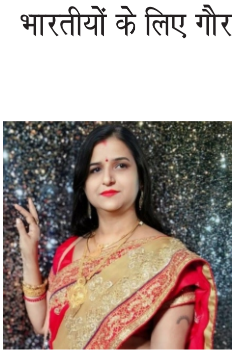

डॉ शीला शर्मा
बिलासपुर
95895 91992

फिट रहें, हिट रहें।

लोगों को आलस्य इतना घेर लिया है कि अपनी दिनचर्या में शामिल होने वाली गलत वस्तुओ का प्रयोग करके अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने लगे हैं।बढ़ता वज़न ७० प्रतिशत रोगों को खुला आमंत्रण दे रहा है। मगर लोग आधुनिकता के आड़ में इसे आम समस्या मान कर अपनी फिटनेस को दरकिनार कर नए रोगों को निमन्त्रण दे रहे हैं। समय की कमी कहें या आधुनिकता का तकाजा, मुँह में लगे इस स्वाद का अंदाज बच्चे तो बच्चे बड़े लोग भी बर्गर, पिज़्ज़ा, पास्ता जैसे स्वाद के दीवाने हो गए हैं। कभी-कभी इस प्रकार के भोजन में कोई बुराई नहीं होती है पर अति से ज्यादा इसका प्रयोग करना खतरे की घंटी होती है। स्वास्थ्य के दृष्टि से बनाएं गए यह सभी प्रकार के खाना पोषण की दृष्टि से उचित नहीं है, इसमें ट्रांसफैट ज्यादा होता है। जिसके कारण कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है और मैदे से बनी होने के कारण इसमें फाइबर की मात्रा ना के बराबर होती है इससे कब्ज जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें कृत्रिम रंगों की मिलावट होती है जिसकी वजह से एलर्जी वगैरह भी हो सकती है इसमें अजीनोमोटो, सोडियम ग्लूटामैट जैसे तत्व होते हैं जो ग्रोथ के लिए नुकसानदायक होते हैं।

दूसरी गलत आदत चुइंगम और चॉकलेट होते हैं। यह गलत नहीं है लेकिन इन से दांतों में सड़न होने लगती है। शुगर फ्री चुइंगम से नुकसान नहीं होता बल्कि यह क्लींजर का काम करते हैं लेकिन इसके ज्यादा सेवन से मस्क्यूलर की समस्या हो सकती है साथ ही इसकी वजह से दाँत के एनामेल नष्ट हो जाते हैं।

आमतौर पर हम सांस लेते वक्त निचले फेफड़े का इस्तेमाल करते हैं और हमारा डायग्राम ऊपर नीचे मूव करता है। यदि कमर की बेल्ट बहुत ज्यादा टाइट होती है तो ऊपर फेफड़ों द्वारा साँस लेनी पड़ती है ।इसे साँस लेने में कठिनाई सिर दर्द या चक्कर आने की स्थिति आ सकती है। टाइट जींस व ट्राउजर्स महिलाओं की मांसपेशियों में गंभीर दर्द का कारण बन सकते हैं और जांघों में झनझनाहट या जलन हो सकती है, अतः इस तरह के कपड़े सेहत की दृष्टि से उचित नहीं है। टाइट जींस से पाचन क्रिया प्रभावित हो सकती है त्वचा पर खिंचाव हो सकता है जिससे इंफेक्शन की संभावना बढ़ जाती है टाइट जींस पहनने से पुरुषों में नपुसंकता का भी खतरा अधिक होता है। ऊंची हील की सैंडल आजकल स्टाइल का हिस्सा बन गई है। इससे पूरी पर्सनैलिटी का लुक बदल जाता है लेकिन इसकी आदत या हमेशा इसे पहनना सेहत की दृष्टि से हानिकारक होता है। इससे कमर और पंजों पर अनुचित दबाव पड़ता है और दर्द होता है लंबे समय तक इसका प्रयोग करने से रीढ़ की हड्डी भी प्रभावित होने लगती है। आजकल लोग मोबाइल अधिक प्रयोग करते हैं और रोजाना फ्री में घंटो बातें करते हैं लेकिन हर वक्त मोबाइल पर चिपके रहना भी स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं इसमे रेडिएशन का खतरा होता है। जिसकी वजह से सिर दर्द की संभावना बढ़ती है।

बहुत सी महिलायें पेन किलर यानी दर्द निवारक गोलियों का सेवन करती हैं किंतु इन गोलियों की आदत स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित नहीं है लंबे इस्तेमाल के बाद इसके दुष्प्रभाव सामने आने लगते हैं साथ ही यह कुदरती दर्द निवारक क्षमता को भी पूर्ण रूप से खत्म कर देती है। कंप्यूटर का अधिक प्रयोग करना भी स्वास्थ्य की दृष्टि से सही नहीं होता इसका अधिक प्रयोग विजन सिंड्रोम का कारण बन सकता है लैपटह्रप का अधिक प्रयोग करना प्रजनन अंगों पर अनुचित प्रभाव डाल सकता है क्योंकि लैपटह्रप को अक्सर पैरों पर रखकर प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक पीढ़ी प्यास लगने पर पानी की जगह कोल्ड ड्रिंक्स लेना पसंद करती है। कोल्ड ड्रिंक्स हमारी हड्डियों के लिए स्वास्थ्य प्रति नहीं होते यह हड्डियों में कैल्शियम की मात्रा के अवशोषण में अवरोध पैदा करती है । ड्रिंक्स दांतों की सेहत के लिए हानिकारक होती है और इसमें अत्यधिक मात्रा में शुगर होती है जिसे दांतों पर कोटिंग हो जाती है और फिर बैक्टीरिया उत्पन्न होते हैं इसे दांतों व मसूड़ों में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। आजकल सप्लीमेंट के रूप में रोजाना विटामिन पिल्स लेने का चलन बढ़ गया है पर इसे अत्यधिक मात्रा में इस्तेमाल करना सुरक्षित नहीं माना गया है सामान्य मल्टी विटामिन सुरक्षित होते हैं और कोई भी विटामिन की दवाइयां लेने से पहले डह्रक्टर की सलाह अवश्य लें। कई बार मोबाइल पर लोग गाने सुनते हैं ईयर फोन लगाकर जिसकी तेज आवाज की वजह से श्रवण शक्ति पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है कान के पर्दे भी क्षतिग्रस्त हो सकते हैं और कई तरह की

बीमारियाँ भी जन्म ले सकती है इनसे बचने का प्रयास करें।
"फिट रहने के उपायः संतुलित फिटनेस रूटीन होना जीवन में कई महत्वपूर्ण कारणों से ज़रूरी होता है। यह आपके स्वास्थ्य और कुशलता को सुधारने में मदद करता है और आपको शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुलित रखता है।अच्छा संगीत जरूर सुने। मन को शांत रखे। कुछ समय अपने शरीर को दीजिए और अच्छे स्वास्थ्य के लिए निम्न उपायों को जरूर अपनाए। शारीरिक स्वास्थ्यः संतुलित फिटनेस रूटीन आपके शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करता है। यह आपकी शारीरिक क्षमता, स्थायित्व, और सुचारू रूप से काम करने की क्षमता को बढ़ाता है। नियमित व्यायाम, सही आहार, और प्रशिक्षण संबंधी गतिविधियाँ आपके शारीरिक शक्ति, दिमागी ताजगी, और ऊर्जा को बढ़ाती हैं। मानसिक स्वास्थ्यः नियमित व्यायाम और ध्यान आपके मानसिक स्वास्थ्य को सुधारते हैं। व्यायाम स्ट्रेस को कम करने, मन को शांत करने, और मनोवैज्ञानिक रोगों से बचाने में मदद करता है। ध्यान आपकी मनशक्ति, ध्यान, और स्थिरता को बढ़ाता है और आपको स्पष्टि, स्थिरता, और अच्छी नींद के लिए मदद करता है। भावनात्मक स्वास्थ्यः संतुलित फिटनेस रूटीन आपके भावनात्मक स्वास्थ्य को सुधारता है। व्यायाम और मानसिक आयाम करने से आपकी स्वाभाविक खुशी और संतुष्टि के स्तर में सुधार होता है। यह आपको स्वस्थ रिश्तों, सकारात्मक मानसिक स्थिति, और अच्छे मानसिक संतुलन की ओर प्रवृत्त करता है। संतुलित फिटनेस रूटीन आपकी दिनचर्या में एक महत्वपूर्ण अंश होना चाहिए ताकि आप स्वस्थ, सुखी, और समृद्ध जीवन जी सकें। यह आपके शरीर , मन, और आत्मा के लिए संतुष्टि और समानता का संरक्षण करने में मदद करेगा।

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर –उत्तर प्रदेश

गंगा

गंगा की आंखों में पानी की गहराती नदिया गंगा के निर्मल जल से भी स्वच्छ और निर्मल लग रही थी।गंगा के ओंठ खुले और थर्राते पत्ते की तरह कांपे फिर अचानक से भिचते चले गए भिंचे हुए मुख पर तीव्रता के वेग से एक ठहरी ओर गंभीर आवाज गूंजी,'अक्षम्य अपराध है।

यह तुमने मेरे तन की दहलीज पर पांव रखने के पहले सोचा तो होता कि गंगा की जिन लहरों से खेलने के लिए तुम आगे बढ़े हो उसका विनाशकारी स्वरूप बड़ा भयानक होता है। जिस अविरल बहती धारा के बीच तुमने गंगा का वही सौम्य रूप देख लिया जिसमें हर आने जाने वाला अपने अच्छे और गंदे दोनों ही तरह के हाथ धोता चलता है पर तुम शायद गंगा के उस रौद्र रूप को देखना भूल गए, जब अपने विकराल रूप में वह विनाश का तांडव करती है।

तुम शायद भूल गए कि अगर वह किनारे के पौधों को सींचना जानती है तो बड़े-बड़े दरख़्तों को गिराना भी जानती है!आज के बाद तुम हमेशा याद रखना सत्यम..'हर औरत चालू माल नहीं होती तुम्हारा धन, वैभव ,संपत्ति पद मुझे तुम्हारी तरफ तनिक भी आकर्षित नहीं करते' और तुम्हारी भुजंग जैसी यह दो आंखें हैं ।

ना इन्हें नीचा ही रखो और हां चलते चलते एक बात और कहना चाहूंगी आज के बाद अपने नागफनी जैसे हाथों पर सदा काबू ही रखना कहते हुए गंगा ने अपने खुले हुए जुड़े के बिखरे बालों को पुनः लपेटकर संवारते हुए क्लचर को जुड़े पर कस लिया फिर बड़ी ही लापरवाही से अपना पर्स उठा कर चल दी गंतव्य की ओर।

रेखा दुबे
विदिशा, म0प्र0

"पहला सुख निरोगी काया"
70% बिमारियों का कारण मोटापा होता है
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456
Jagruti Nutrition Club Of India 8004975834

गंगा आईसीयू में

यह भारत भूमि की एक बड़ी विशेषता है कि यहाँ के हरेक तीज-त्योहार, रीति-रिवाज,धार्मिक संस्कारों के पीछे एक लम्बा वैज्ञानिक इतिहास है। अगर हम तथाकथित आधुनिकता के चश्मे को किनारे रख, बिना पूर्वाग्रह ग्रसित हुए बिना देखें तो पायेंगे कि हमारे ऋषि-मुनियों और पूर्वजों ने लम्बे अध्ययन और शोध के बाद वैज्ञानिकता के साथ समाज को सही दिशा में बढ़ने के लिए कुछ धार्मिक,नैतिक,सांस्कृतिक, पर्यावरणीय तीज त्योहारों रिवाजों का प्रादुर्भाव किया ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी उस तीज त्योहार रीति रिवाज को निभाते हुए अपना और विश्व का कल्याण कर सके। नवरात्रि, दीवाली, होली,नव सम्वतसर, गंगा दशहरा सहित बहुत से पर्व ऐसे हैं जिनसे हमारी वर्तमान पीढ़ी के साथ साथ भावी पीढ़ी इन रस्मों, रीति-रिवाजों व अनुष्ठानों की महत्ता व वैज्ञानिकता के साथ इनके इतिहास से परिचित होती है।

गंगा मात्र नदी भर नहीं-विश्व भर में गंगा भारत की राष्ट्रीय पहचान है। विश्वभर के लोगों द्वारा भारत का नाम सम्मान के साथ उच्चारित करने के लिए इसे "गंगा का देश" कहा जाता है। दो अलग-अलग धर्मों का सांस्कृतिक रूप से समवेत आदर के लिए भारत को "गंगा-जमुनी" तहजीब का देश भी कहा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि गंगा भारत की जीवन रेखा होने के साथ साथ राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक और पहचान भी है। अगर हिमालय भारत का भाल है तो गंगा उस भाल से निकलती जल धार से सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांधे रखने का रक्षा सूत्र। क्योंकि सुदूर उत्तर से लेकर दक्षिण तक पूर्व से लेकर पश्चिम तक सम्पूर्ण देश की छोटी बड़ी नदी रूपी जलधाराएं मिलकर इसे पूर्णता प्रदान कर,बड़े गौरव से सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधित्व करते हुए किसी न किसी रूप में सेवा करती है।

क्यों कहा जाता है गंगा तेरा पानी अमृत-"गंगा तेरा पानी अमृत" की धारणा प्रत्येक भारतवासी के मन में रची बसी है। यह मान्यता या धारणा असत्य भी नहीं थी। क्योंकि हिमालय अपने आप में रत्नों का विशाल भण्डार है। इसकी तराई में अवस्थित बुग्याल और पहाड़ियाँ, जंगल अप्रतिम औषधीय पादपों, जड़ी बूटियों खनिजों के भण्डार हैं, इन्ही बुग्यालों, पहाड़ियों, जंगलों से गुजरने वाली गंगा जब इन्ही औषधीय पादपों, जड़ी बूटियों का सत्व लेकर मैदानों में उतरती है तो वह इन जड़ी बूटियों के असर से वास्तव में अमृत सा असर रखती थी। सदियों से यह कहावत प्रसिद्ध थी कि गंगा का जल एक सौ साल तक भी खराब नहीं होता। आज से सात दशक पूर्व भी जब विगत सौ सालों से बोतल में बंद गंगा जल का परीक्षण किया गया तो वैज्ञानिक भी आश्चर्यचकित रह गये कि उस गंगा जल में कोई भी खराबी या अशुद्धि नहीं पाई गई बल्कि वह विशुद्ध रूप से पीने लायक बना हुआ था।

वैज्ञानिक परीक्षणों से भी यह बात सत्य साबित हुई कि "बैक्ट्रिया फोस" नामक जीवाणु पानी के अंदर रासायनिक क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले अवांछनीय पदार्थो को खाता रहता है जिस कारण वर्षों तक जल की शुद्धता बनी रहती है।विदेशियों ने भी किये सत्यता के परीक्षण- देश दुनिया को गंगा की पवित्रता की इस सच्चाई का पता तब चला था जब आज से सवा सौ साल पहले आगरा में तैनात ब्रिटिश डह्क्टर एमई हहकिन ने वैज्ञानिक परीक्षण से सिद्ध किया था कि हैजे जैसा महामारी का बैक्टीरिया भी गंगा के पानी में डालने पर कुछ ही देर में मर जाता है। तब जाकर विदेशियों को गंगा की महत्ता का पता चला कि वास्तव में भारतीयों की यह धारणा सत्य है कि गंगा तेरा पानी अमृत।

वेद दृ पुराण, ग्रन्थ भरे पड़े हैं गंगा की महत्ता से-सनातन संस्कृति का कोई भी वेद, पुराण, स्मृति, ग्रन्थ ऐसा नहीं है जिसमें गंगा का उल्लेख न हो। किसी न किसी रूप में इन सभी में गंगा की महिमा का वर्णन है।

वराह पुराण में गंगा के उद्‌भव के बारे में वर्णित है कि
दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठ मासि कुजेहनि।
अवतीर्णा पतःस्वर्गात हस्तार्क्षे च सरिद्वरा ।।

अर्थात ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष दशमी तिथि मंगलवार हस्त नक्षत्र के शुभ योग में गंगा स्वर्ग से धरती पर उतरी।यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि कुछ विद्वानों ने हिमालयी क्षेत्र को ही स्वर्ग कहा है।छुद्र स्वार्थियों ने किया गंगा को अपवित्र-लेकिन बड़े दुःखी मन से कहना पड़ रहा है कि आज देश की यह पहचान अपने अस्तित्व और पवित्रता बचाने के लिए गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। धीरे धीरे बढ़ती भौतिकता और हमारी तथाकथित विदेशी भाषा में स्वयं को महर्डन कहने वाले भद्रजनों ने गंगा के उस पवित्र स्वरूप से खिलवाड़ शुरू कर उसमें कारखानों, घरों का अपशिष्ट बहाना अपना जन्मजात अधिकार समझा। कुछ विधर्मी लोगों को गंगा का मां वाला स्वरूप अच्छा नहीं लगा और उन्होने गंगा को साधारण नदी कहने-मानने की मानसिकता ने गंगा का बहुत अहित किया। कुछ विधर्मी आज भी रात के घटाटोप अंधकार में मरे अथवा काटे गये जानवरों के अपशिष्ट और अंश बहा देते हैं। हमारी जीवन शैली में समाहित था जल-पर्यावरण की पूजा-ः अगर आप आज से चार दशक पूर्व का समय याद करें, बुजुर्गों की बातों को ध्यान से सुने तो पायेंगे कि तार दशक पूर्व के हमारे बुजुर्ग पूर्वज पूर्णतः वैज्ञानिक नजरिया रखते हुए गंगा में प्रचलित सिल्वर के सिक्के भी उसकी पवित्रता (प्रदूषित होने से बचाये रखने के लिए) बनाये रखने के लिए नहीं फेंकते थे। गंगा के घाटों पर लोग स्नान तो करते थे लेकिन साबुन (डिटर्जेंट) का प्रयोग नहीं करते थे। गंगा में थूकना, गंदगी करना, कूड़ा फेंकना महापाप समझते थे। आज भी सनातन संस्कृति के लोग नव विवाहिता के हाथों पहले ही दिन उसके ससुराल में जल श्रोत की पूजा करवाते हैं ताकि वह उस श्रोत को शुद्ध साफ स्वच्छ रखने की भावना मन में पहले ही दिन से रखे।इसी क्रम में वृक्ष व पौधों का संरक्षण करने का संकल्प नव दम्पति सप्तपदी की वेदी से ही लेते आया है।

काले अंग्रेजों व काली मानसिकता ने किया गंगा का अहित-ः लेकिन पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने वाली हमारी वर्तमान पीढ़ी के कुछ मुट्ठी भर लोगों के लिए गंगा के प्रति मां का नजरिया केवल उन्हें एक दकियानूसी सोच ही लगती रही है । जिसका फल ये हुआ कि गंगा की पवित्रता धीरे-धीरे कम होती चली गई। आज स्थिति यह है कि मां गंगा के उद्‌गम स्थल गोमुख जैसे स्थलों से ही तथाकथित उच्च शिक्षित मानुष प्लास्टिक व अन्य कूड़े के ढेर प्रकृति भ्रमण या शोध यात्रा के नाम पर छोड़ते आ रहे हैं। यही हाल पिंडारी ग्लेशियर, खाँम, मनणी, केदारनाथ, मधू गंगा, बद्रीनाथ जैसे स्थलों पर भी है। कुछ कुत्सित विचार धारा और मानसिकता के महापापियों ने तो अपने शौचालयों के पाइप सीधे ही गंगा में छोड़ रखे हैं। मानव की खाल में छुपे कुछ नर रूपी भेड़ियों ने तो अपने मल टैंक गंगा के किनारे इस ढंग से निर्मित किये हैं कि हर बरसात में गंगा का जल स्तर बढ़ने पर वे गंगा की वेगवती धारा में स्वयं ही साफ हो जांय और वे धड़कते व धिक्कारते हुए छुपे मन की धड़कनों के बीच गंगा की स्वच्छता पर लम्बे लम्बे भाषण देकर,मंचों पर सम्मानित होते रहते हैं। भले ही रात भर करवट बदलते बदलते उनका मन उन्हें धिक्कार रहा होता है।

की शुद्धता के लिए व्यक्ति व परिवार के रूप में हमारा कर्तव्य-ःआज परम आवश्यकता इस बात की है कि समाज के एक अंग (व्यक्ति) के रूप में हमारा ध्यान गंगा की पवित्रता बनाये रखने के लिए उसको प्रदूषण से मुक्त रखने की हो। समाज की इकाई परिवार के रूप में हमारा एक काम यह देखना होना चाहिए कि मेरे परिवार के किसी भी व्यक्ति /महिला /बच्चे द्वारा गंगा प्रदूषित करने वाला कोई कृत्य न हो। हम बालपन में ही बच्चों के दिल दिमाग में पानी की महत्ता, जल ही जीवन है, गंगा तेरा पानी अमृत जैसे भाव स्थापित करते हुए, सम्मान करना सिखा दें। हम गंगा के किनारे फलदार, छायादार चौड़ी पत्ती वाले पौधों का रोपण करें और इसे एक परम्परा के रूप में आगे बढ़ाने के प्रयास करें करते रहें। हम यह ध्यान रखें कि हमारे बच्चे हमारे भाषणों व किताबों से जादा हमारे आचरण और अनुकरण से सीखते हैं। अतः हमें ध्यान रखना होगा कि हमारा आचरण भी गंगा की पवित्रता बनाये व बचाने वाला

हो। गंगा के प्रति राज्य (शासन) के कर्तव्य-: गंगा के प्रति राज्य का कर्त्तव्य सर्वप्रथम यह हो कि राज्य अथवा शासन गंगा का सम्मान करता हो। इसके इतिहास व भूगोल का प्रचार-प्रसार करे ताकि लोग इसकी प्राचीनता व महत्ता को समझते हुए इसे मात्र जल का प्रवाह या नदी मात्र ही न समझें, बल्कि इसकी उपयोगिता व उपादेयता को गहराई से महसूस भी करें। राज्य का एक प्रमुख व महत्वपूर्ण कर्तव्य यह भी हो कि वह गंगा की महत्ता व उपयोगिता को राज्य के नौनिहालों भावी पीढ़ी को बताने/समझाने के लिए इसे अपने पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दे। राज्य अथवा शासन का प्रयास हो कि वह अपने प्रिंट व इलेक्ट्रहनिक मीडिया के माध्यम से गंगा की उपयोगिता को देश व विदेशियों को बताने के साथ इसे प्रदूषण मुक्त रखने, स्वच्छ बनाये रखने की अपील भी करे। शासन का यह भी प्रयास हो कि गंगा की पवित्रता को भंग करने वालों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई करते हुए दण्ड का प्रावधान भी हो । इसके तटों को गंदा करने वालों को बाध्य किया जाय कि वे इसकी सफाई भी करें अथवा उनसे सफाई का खर्च लेकर सफाई की व्यवस्था करे। राज्य ऐसी संस्कृति को विकसित करने का प्रयास करे कि हमारा युवा, भावी पीढ़ी जापानी लोगों जैसे देशभक्त बनें जो अपने देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान तो दें ही, साथ ही विश्वभर में देश की साख भी बढ़ायें। पर्यावरण, जल, -जमीन-जंगल, पशु- पक्षी,जैव विविधता की महत्ता जन सामान्य को समझाने के प्रयास यदि सफल होते हैं तो वह दिन दूर नहीं कि हम पुनः ”गंगा तेरा पानी अमृत“ प्रयोगशाला परीक्षणों में भी साबित कर डंके की चोट पर कह सकेंगे कि गंगा जल पुनः १०० साल पहले जैसा पवित्र है। जय गंगा मय्या-जल है तो जीवन है।

हेमंत चौकियाल
रूद्रप्रयाग (उत्तराखंड)

गंगा मॉ

गंगा की व्यथा’
मानो मैं गंगा मॉ हूँ
सुन लो मेरी पुकार
मेरी विवश व्यथा को
कोई समझ न पाया
युगों-युगों से बह रही हूँ
दुख अनंत सह रही हूँ
पीड़ा न कोई समझा
कैसे मैं जी रहीं हूँ
मानो मैं गंगा मॉ हूं
सुन लो मेरी पुकार
लाऐ थे भागीरथ मुझे
तुम्हारे पाप धोने
धरा पर आई थी मैं
नहीं स्वयं को खोने
मानो मैं गंगा मॉ हूँ
सुन लो मेरी पुकार
निर्मल था जल ये मेरा
मुझको मलीन करो न
टूटी क्यूं मेरी धारा
कहती मैं बार बार
मानो मैं गंगा मॉ हूँ
सुन लो मेरी पुकार
इतिहास मेरा अमर है
नहीं तुमको ये फिकर है
कल भी सवारों मेरा
अब लो शपथ सभी मिल
कर दो मेरा उद्धार
मानो मैं गंगा मॉ हूँ
सुन लो मेरी पुकार।

नीता चतुर्वेदी
विदिषा, मध्यप्रदेश

पर्यावरण दिवस पुरस्कृत चित्र पर कहानी

समर्थ लगातार चलता ही जा रहा था२ पसीने से लथपथ , उसकी गाड़ी चलते-चलते अचानक रूक गई थी। उसने बोनट खोल कर देखा तो उसमें से धुआँ निकल रहा था । दूर-दूर तक पानी का नामो-निशान नहीं था , चारों तरफ सूखी जमीन पर इक्के -दुक्के कंटीले झाड़ ही नजर आ रहे थे । उसके पास चलने के सिवाय कोई चारा न था । इस उम्मीद में कि कहीं कोई मदद मिल जाए । दूर से ही उसे धुएँ के गुबार नज़र आ रहे थे। जो कि वहाँ पर लगी फैक्ट्रियों से निकल रहे थे। जमीन मानो राख का मैदान बन चुकी थी । सम्पूर्ण दृश्य को देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो कोई विकराल दैत्य उसे अपनी गिरफ्त में लेने को है। नजदीक पहुंचने पर उसने देखा कि एक नन्हा बालक रेत पर पाँव पसारे अपने सामने रखी बाल्टी में अपने कोमल हाथों से उस रेत को भरने का प्रयास कर रहा है। थोड़ा आगे चलने पर उसे बहुमंजिला इमारतें दिखाई दीं। उसके कदम और तेज हो चल थे। नजदीक पहुंचने पर उसने देखा कि कुछ मशीननुमा मानव इधर- उधर घूम रहे हैं। उसने एक व्यक्ति से पूछा, "यहाँ कहीं पानी मिलेगा क्या "? समर्थ हैरान था कि कोई उसे उत्तर क्यों नहीं दे रहा?

"मेरा गला सूख रहा है .. मुझे पानी चाहिए," उसने अन्य व्यक्ति से दोबारा कहा । ये सब क्या है ? इतने असंवेदनशील इंसान । यह सोचते-सोचते वह एकाएक बेहोश हो गया । जब उसे होश आया तो उसने स्वयं को आधुनिक मशीनों से घिरे हुए एक हह्लनुमा कमरे में पाया । उसके सामने श्वेत वस्त्र धारी एक बुजुर्ग खड़े मुस्कुरा रहे थे । आप कौन हैं ? मैं यहाँ कैसे आया? ये कौन सी जगह है? समर्थ ने एक साथ कई प्रश्न कर डाले।

मैं एक वैज्ञानिक हूँ और मेरी उम्र लगभग २०० वर्ष है । ये जो तुम मशीनें देख रहे हो न, वो पानी के कैप्सूल बनाने की मशीनें हैं ।पानी के कैप्सूल ! समर्थ को मानो विश्वास नहीं हो रहा था । तुम मानो या ना मानो यही सत्य है,वैज्ञानिक ने कहा। अब धरती पर पानी लगभग समाप्ति के कगार पर है । कहीं-कहीं खोजने पर ही काफी गहराई में जाकर पानी मिल पाता है । जल के अभाव में अधिकतर कीट,जीव-जन्तु, वनस्पति दम तोड़ चुके हैं । पर्यावरण असंतुलन के कारण प्रकृति अपना विकराल रूप धारण कर चुकी है । सूखा, अकाल, बाढ़, जैविक महामारी, विषाणु संक्रमण, अनगिनत रोगों का प्रकोप धीरे-धीरे मानव जाति को लील चुका है । जो मानव शेष भी हैं तो वो इतने शिथिल हो चुके हैं कि कार्य करने में असमर्थ हैं। औषधि प्रयोग के कारण बस निर्जीव के समान जीवन यातना को झेल रहे हैं । ये जो मशीनी मानव देख रहे हो न, यही सम्पूर्ण व्यवस्था को सँभाले हुए हैं । यदि जल नहीं है, वनस्पति नहीं है तो फिर शेष जीवित प्राणी क्या खाकर जीवित हैं ! समर्थ के आश्चर्य की सीमा बढ़ती जा रही थी।

जिस प्रकार पानी के कैप्सूल बनाए गए हैं, वैसे ही भोजन की तृप्ति के लिए भी कैप्सूल बनाए जाते हैं जो शारीरिक जरूरतों को पूर्ण करते हैं । उनसे केवल क्षुधा को ही शान्त किया जा सकता है, शारीरिक चुस्ती, स्फूर्ति और बुद्धि को विकसित नहीं किया जा सकता द्य (बुजुर्ग व्यक्ति ने जवाब दिया) और वो बच्चा जो रेत पर बैठा हुआ था २ वो कौन था और क्या कर रहा था ? समर्थ ने वैज्ञानिक से पूछा। वो ! वो तो भविष्य है बेचारा ! पानी की खोज में लगा है इस उम्मीद के साथ कि कोई तो उसकी ओर ध्यान दे,उसका साथ दे।

काश ! मानव ने लापरवाही ना बरती होती, प्रकृति की अवहेलना नहीं की होती, अपने स्वार्थ के लिये उसका दुरूपयोग ना किया होता तो आज परिस्थितियाँ प्रतिकूल नहीं होतीं । (समर्थ मन ही मन सोचने लगा)

"ये लड़का भी न,नींद में न जाने क्या बड़बड़ाता रहता है ? सूरज सिर पर चढ़ आया है, उठना नहीं है क्या ?"

माँ की आवाज से समर्थ की नींद टूट जाती है और वह सोचता है कि शुक्र है, ये केवल सपना ही था ।र जरा सोचो, यदि यह हकीकत होता तो !

किरण बाला

चंडीगढ़ 98035 64330

दिनकर जो भुलाये न भूलें

हमारे देश में एक से बढ़कर एक साहित्यकारों का जन्म हुआ। सभी अपने समय के अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली लेखक थे, जिनका योगदान हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। उन्हीं में एक नाम आता है । रामधारी सिंह 'दिनकर' का। हिंदी साहित्य के महान कवि और निबंधकार, जिन्हें राष्ट्रकवि के रूप में जाना जाता है। जिनका जन्म २३ सितंबर १६०८ को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम रवि सिंह और माता का नाम मनरूप देवी था। उनका परिवार आर्थिक रूप से कमजोर था, लेकिन उनकी माता ने उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। दिनकर ने प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की और बाद में पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

दिनकर जी ने अपने साहित्यिक यात्रा की शुरुआत कविताओं से की। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना की भावना प्रमुख थी। उनका पहला काव्य संग्रह 'रेणुका' था, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति और राष्ट्रप्रेम को प्रमुखता दी। इसके बाद 'हुंकार', 'रसवंती', और 'कुरुक्षेत्र' जैसे काव्य संग्रह प्रकाशित हुए, जो उन्हें हिंदी साहित्य के प्रमुख कवियों में स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुए। दिनकर जी की कविताओं में राष्ट्रवाद, वीरता, और सामाजिक न्याय की गहरी झलक मिलती है। उनकी रचनाओं में महाभारत और रामायण जैसे पौराणिक ग्रंथों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। 'कुरुक्षेत्र' महाकाव्य में उन्होंने महाभारत के युद्ध की त्रासदी और उसके नैतिक एवं सामाजिक पहलुओं का विस्तृत वर्णन किया है।

राष्ट्रीय कवि और सामाजिक चिंतक-दिनकर जी को 'राष्ट्रकवि' के रूप में जाना जाता है। उनकी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम की भावना और भारतीय संस्कृति की महिमा का बखान मिलता है। 'हुंकार' और 'रश्मिरथी' उनकी ऐसी ही कृतियाँ हैं जो राष्ट्रीय चेतना को प्रकट करती हैं। 'रश्मिरथी' में उन्होंने महाभारत के कर्ण के जीवन को आधार बनाकर समाज में व्याप्त विषमताओं और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई है।दिनकर की कविताओं में न केवल राष्ट्रप्रेम है, बल्कि सामाजिक विषमताओं और शोषण के खिलाफ भी तीखा प्रतिरोध है। 'संस्कृति के चार अध्याय' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' जैसी रचनाओं में उन्होंने भारतीय संस्कृति, समाज और राजनीति पर गहन चिंतन किया है।

सम्मान और पुरस्कार-रामधारी सिंह दिनकर जी को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें १६५६ में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। उनकी कृति 'उर्वशी' के लिए १६७२ में उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ, जो हिंदी साहित्य का सर्वोच्च्व सम्मान है।

राजनीतिक और सामाजिक योगदान-: दिनकर जी न केवल एक कवि थे, बल्कि वे एक सक्रिय समाजसेवी और राजनेता भी थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं से प्रभावित हुए और उनके विचारों का समर्थन किया। स्वतंत्रता के बाद,वे राज्यसभा के सदस्य बने और वहां अपनी साहित्यिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को साझा किया।

साहित्यिक शैली और विशेषताएं -: रामधारी सिंह दिनकर जी की साहित्यिक शैली बहुआयामी थी। उनकी रचनाओं में छायावादी, प्रगतिवादी और रहस्यवादी प्रवृतियों का समावेश देखने को मिलता है। छायावादी कवियों की तरह उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति गहरी संवेदना और रहस्य का भाव भी विद्यमान है। लेकिन दिनकर ने अपनी कविताओं में

इनसे परे जाकर यथार्थवादी और प्रगतिवादी दृष्टिकोण को भी अपनाया। उनकी भाषा सरल, प्रभावपूर्ण और प्रभावी है। दिनकर ने अपनी कविताओं में प्राचीन भारतीय पौराणिक कथाओं और धार्मिक ग्रंथों का संदर्भ लिया लेकिन उन्हें समकालीन समाज के संदर्भ में प्रस्तुत किया। उनकी कविताओं में शौर्य वीरता और मानवीय मूल्यों की गूंज सुनाई देती है।

दिनकर जी की काव्य रचनाओं में विविध विषयों का समावेश है। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'हुंकार', 'रश्मिरथी', 'कुरुक्षेत्र', 'परशुराम की प्रतीक्षा', और 'उर्वशी' शामिल हैं।

१.हुंकारः इस काव्य संग्रह में स्वतंत्रता संग्राम की ध्वनि और राष्ट्रप्रेम का स्पष्ट आभास होता है। यहाँ पर दिनकर ने भारतीय जनमानस में जोश और उत्साह भरने का प्रयास किया है।

२.रश्मिरथीः यह महाकाव्य कर्ण के जीवन पर आधारित है और इसमें समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और अन्याय के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाई गई है।

३.कुरुक्षेत्रः महाभारत के युद्ध को केंद्र में रखकर लिखी गई इस काव्य में युद्ध की विभीषिका और उसकी नैतिकता पर गहरा विचार किया गया है।

४.परशुराम की प्रतीक्षाः इसमें भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं और संघर्षों का चित्रण किया गया है।

५.उर्वशीः यह एक प्रेम काव्य है, जिसमें मानव और दिव्य प्रेम के बीच के द्वंद्व को खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है।

दिनकर जी की कविताएँ उनकी भावनाओं, विचारों और सामाजिक चिंताओं का जीवंत चित्रण हैं। कुछ प्रमुख कविताएँ जैसे 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है', 'वसंत का आगमन', और 'रोटी और स्वाधीनता' में उनकी सामाजिक और राजनीतिक प्रतिबद्धता साफ झलकती है। उनकी कविताओं में राष्ट्रवाद और समाजवाद की भावना, मानवतावाद और समतावाद की झलक मिलती है। उत्तराधिकारी और प्रभाव रामधारी सिंह दिनकर जी का प्रभाव न केवल साहित्यिक जगत में रहा, बल्कि वे भारतीय समाज और राजनीति में भी एक महत्वपूर्ण हस्ती थे। उनकी कविताएँ और रचनाएँ आज भी नई पीढ़ी को प्रेरित करती हैं। उनकी रचनाओं ने कई अन्य साहित्यकारों को भी प्रेरित किया। दिनकर जी की लेखनी ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और उनकी रचनाएँ आज भी साहित्यिक सम्मेलनों, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ी और चर्चा की जाती हैं।

रामधारी सिंह दिनकर जी भारतीय साहित्य के एक अमूल्य रत्न है। उनकी कविताओं में भारतीय समाज की वास्तविकता, उसकी समस्याएँ और उनके समाधान की गहरी दृष्टि मिलती है। उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी। रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्यिक और सामाजिक योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि भारतीय समाज की समस्याओं को भी मुखरता से उठाया। दिनकर का जीवन और कृतित्व हमें सिखाता है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने का एक सशक्त माध्यम भी है। उनकी रचनाएँ आज भी हमें समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराती हैं और हमें समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का अहसास दिलाती हैं। इनका निधन २४ अप्रैल १९७४ को हुआ। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी रचनाएँ और विचार समाज को प्रेरित करते रहे हैं। उनकी कविताएं आज भी छात्रों और विद्वानों के बीच लोकप्रिय है और उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

सीमा रानी
शास्त्रीनगर
पटना – 800023

लघुकथा दिवस पर सम्मानित लघुकथाएं

मंजू की लघुकथा हक

'पिछत्तर वर्षीय गुलाब चंद ने अचानक अपनी चालीस वर्षीय पोलियोग्रस्त नौकरानी बबली से विवाह कर लिया। यह खबर, कॉलोनी में आग की तरह फैल गई।'कुछ ही समय पूर्व तो उन्हे ज़बरदस्त हार्ट अटैक पड़ा था और अब यह विवाह..।,मस्तिष्क में शंका थी।"यह सब क्या..विवाह इस उम्र में..तुम्हे शर्म नहीं आती..जानते हो कितनी बदनामी हो रही है तुम्हारी",मैंने अपने मित्र गुलाब के सामने जाते ही प्रश्न पर प्रश्न दागे तो, वह गम्भीर होकर बोला।"तू जानता है पत्नी के मरने के बाद से मैं अकेला हूँ। बेटे बहू विदेश में मस्त हैं..एक अनाथ अनपढ़ बबली है जो एक बीस वर्ष से जी जान से मेरी सेवा करती है। पर मेरी मृत्यु के बाद उसका कोई सहारा नहीं होगा। पोलियोग्रस्त होने के कारण उसे जल्दी नौकरी भी नहीं मिलेगी। मेरे पास भी पैंशन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है जिससे मैं उसकी मदद कर सकूँ। तो.."?"मेरी मृत्यु के बाद बबली का विधवा पैंशन से गुज़ारा तो हो जायेगा "मतलब तू सरकार को चूना लगा रहा है"? "नहीं..बल्कि सरकार से एक बेसहारा को सम्मान से जीने का हक़ दिलवा रहा हूँ तू बता क्या मैं ग़लत हूँ",?

मंजू सक्सेना लखनऊ मो.9335444332

रेणु की लघुकथा मिट्टी या सोना?

चराग! चिराग! अपनी माँ को छोड़ कर तू कहाँ चला गया बेटा?" स्थानीय मेडिकल कॉलेज के युवा प्रोफ़ेसर चिराग की एक भीषण सड़क दुर्घटना में मृत्यु के उपरांत उसकी माँ उसके मृत शरीर पर पछाड़ें मार-मार करुण क्रंदन कर रही थी।बेटे का नाम बुदबुदाते हुए वह न जाने कितनी बार अचेत हुई।तभी चिराग के बड़े भाई ने तनिक संयत होते हुए भाई के मेडिकल कहलेज को जल्दी से देहदान के लिए उसका शरीर ले जाने के लिए कहा।बेटे की कॉलेज वालों से बातचीत सुनकर माँ पर जैसे वज्रपात हुआ। वह सिसकते हुए बेटे को अपने आँचल से ढाँप चीख उठी,"क्या! देहदान? नहीं! नहीं! मेरे लाल को यहाँ से कोई नहीं ले जाएगा! उसके शरीर पर चीर-फ़ाड़ करेंगे सब। बहुत बेक़दरी होगी उसकी।""माँ! उसका शरीर तो अब मिट्टी है। चिराग का मृत शरीर चिकित्सा जगत के लिए बेशकीमती होगा, क्योंकि यह मात्र चिकित्सा शिक्षा ही नहीं, वरन रिसर्च के काम भी आ सकता है। कई बार दिग्गज सर्जन मृत शरीर पर प्रैक्टिकल कर जटिल से जटिल शारीरिक समस्या का निदान ऑपरेशन द्वारा करने का अभ्यास करते हैं। सोचो माँ, इससे हज़ारों लोगों की जिन्दगीयाँ बच जाती हैं। तो यह पुण्य का काम हुआ या नहीं?" "पर बेटा! बिना क्रिया-कर्म के उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी।""अरे माँ! अपने यहाँ भी तो महर्षि दधीचि ने अपनी हड्डियाँ दान में दी थीं। अगर देहदान धर्म विरुद्ध होता तो क्या महर्षि दधीचि यह करते? माँ! अनगिनत ज़िंदगियाँ बचाने से और पुण्य का काम क्या होगा? इस से तो सच्चे मायनों में उसकी आत्मा को शांति मिलेगी। अब आप ही बताओ, इस नेक काम से चिराग की मिट्टी सोना बन जायेगी या नहीं?"

रेणु गुप्ता 90245 79762

रंजना माथुर की लघुकथा ख़ामियाज़ा

उन्हें अपने ओहदे व दौलत का नशा था या अपनी प्रसिद्धि का गुरूर। साथी डहक्टर्स हमेशा इंसानियत की दुहाई देकर उन्हें समझाते और कहते - "यार हमारा प्रोफेशन मानवता की सेवा भावना से जुड़ा है। थोड़ा उसका भी ध्यान रखो। हमें हृदय में दया भाव रखना चाहिए मित्र " मगर वे हमेशा अपनी स्पेशियलिटी के घमंड में फूले-फूले घूमते थे। आप्रेशन के लिए नियत समय से अति विलंब से पहुंचना वे अपनी खासियत मानते और समय पर पहुंचना अपनी तौहीन समझते। उनके इस बर्ताव से अनेक बार कई मरीजों को ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ता था। पब्लिक में रोष था परन्तु बीमार तो हमेशा बेबस होता है।आज भी वही पुनरावृत्ति हुई। हाईवे से आ रहे कुछ युवकों में से एक की अनियंत्रित बाइक सामने आ रहे ट्रोले से जा भिड़ी। ज्ञात हुआ युवक नशे में था। २० फीट दूर जा उछला।

बाइक चकनाचूर व ट्रोला चालक फरार। युवक मरणासन्न अवस्था में भारत हास्पिटल में लाया गया ।युवक के साथी दूसरे स्टेट के थे। दोस्त के परिवार या अन्य किसी से पहचान न थी। स्टाफ द्वारा डह्र अभय को स्पेशल कॉल कर तुरंत आने की रिक्वेस्ट की गई। डह्र का असिस्टेंट भी नया था। उसी ने अटेंड किया। पेशेंट की हालत अति गंभीर थी। काफी ब्लड बह चुका था। बार-बार आग्रह के बाद भी आदत से मजबूर ४० मिनट विलम्ब से डॉ अभय आप्रेशन थियेटर में पहुंचे मगर तब तक देर हो चुकी थी। युवक के प्राणपखेरू उड़ चुके थे। डह्र अभय ने मृतक की चादर हटा कर देखा तो होश उड़ गये। वह और कोई नहीं उनका अपना लाड़ला बेटा अभिनव था जो कल अपने बाहर से आए दोस्तों के साथ नाइट आउट पर गया था। आज का खामियाजा खुद डॉ अभय के नाम था ।

रंजना माथुर ,अजमेर ,94615 94804

सुषमा की लघुकथा अनपढ़

पहली बार आज मुकेश बाबू को अपनी माँ के अनपढ़ होने पर खुशी हो रही थी। बचपन में दोस्तों के मुंह से उनकी मां की शिक्षा और डिग्री के बारे में जानकर उनके मन में बड़ा कोफ्त और शर्म महसूस होता था। मां ,गांव की सुंदर- सुशील गृह कार्य में निपुण बहुत ही भोली महिला थी। उन्हें याद है, जब कभी भी वह मां पर नाराज होकर कहते "अंगूठा छाप "ही रहोगी क्या? इस पर भइया भी उसकी बात का समर्थन करते हुए कह्ते हाँ माँ ! मुकेश ठीक ही तो कह रहा है। चलो अब पढ़ो। मां दोनों बेटों को दुलार करती हुई कहने लगती-- अरे बेटा! तुम दोनों पढ़- लिखकर बड़ा आदमी बन जा , समझो मैं पढ़ ली। इसी तरह से समय बीतता गया । भैया की नौकरी विदेश में हो गई। धीरे-धीरे कर मुकेश बाबू का भी परिवार बढ़ने लगा । सब कुछ बदल गया। पिता जी भी नहीं रहे। मुकेश बाबू और उनकी पत्नी आज बेहद खुश थे। यदि मां अनपढ़ ना होती ,तो दोनों अचानक से ना तो करोड़पति बनते ,ना ही भैया का हक, अपने नाम कर पाते।

सुषमा सिन्हा वाराणसी

+91 93699 98405

क्यों अपने हुए पराए

क्यों अपने हुए पराए,
क्यों रूठा हुआ जमाना।
ए राही तुम ठहरो जरा,
तेरा कोई नही ठिकाना।।

अब राह में शूल कौन बिछाए,
कौन बिछाए फूल!
ये कैसी नादानी तेरी,
ये कैसी तेरी भूल!!

जाना है बड़ी दूर तुझे,
पर बाट है अंजाना!
ए राही तुम ठहरो जरा,
तेरा को नही ठिकाना!!

ये मंजिल उसी की
ये दुनिया उसी का,
ये सब संसार पराया है!
क्या है तेरी मनोकामना,
और ये कैसी तेरी काया है!

सबकुछ देकर आज भी तू,
बना है आज बेगाना!
ए राही तुम ठहरो जरा,
तेरा को नही ठिकाना।

अमित पाठक"उन्मुक्त"
खड्डा-कुशीनगर

सुबह की हवा

अपने घर की शैव संस्कृति के कारण मेरा कभी अन्य संस्कृति के लोगों से ज्यादा मिलना जुलना नहीं हो पाया। पिताजी हिंदी के प्राध्यापक होने के कारण अपने क्षेत्र के पहले निशुल्क हिंदी की शिक्षा देने वाले गुरु जी के रूप में विख्यात थे । दूर-दूर से हिंदी की समस्याओं का समाधान करवाने छात्र-छात्राएं आते और संतुष्ट होकर चले जाते । मेरा बचपन इसी माहौल में बीता। यौवन की दहलीज पर पैर रखते ही नई संस्कृति नए परिवेश नए लोग और पहनावा की तरफ मन अपने आप ही आकर्षित होने लगा ।

एक दिन मेरे घर एक लड़की काला बुर्का पहने आई ।हम तीनों भाई बहन उसे आश्चर्य से देखने लगे क्योंकि हमारे घर इससे पहले कभी कोई इस तरह की वेशभूषा पहने नहीं आया था। मेरे घर में आते ही उसे लड़की ने अपना बुर्का उतारा गौर वर्ण बड़ी-बड़ी आंखें ,आंखों में काजल लंबे काले बाल ,कानों में लंबे से झुमके, हाथ में सुंदर सी अंगूठी और पीले चटक रंग का सलवार कुर्ता पहने एक सुंदर सी लड़की खड़ी थी उसे देखकर मुझे ऐसा लगा शायद सौंदर्य को किसी की नजर ना लगे इसलिए ही यह लोग ऊपर से काला बुर्का डाल लेती है। पिताजी ने उससे कहा आओ बैठो बेटा क्या नाम है तुम्हारा ?

क्या पूछने आई हो ?सबा नाम है मेरा गुरुजी, हिंदी पढ़ने आए हैं। कुछ समझ में नहीं आ रहा । मुझे अपने पास खड़ा देखकर बोली अपूर्व पानी पिला दो बहुत प्यास लगी है । अच्छा इन्हें तो मेरा नाम भी पता है मैं यह सोचते हुए उनके सौंदर्य से अभिभूत पानी लेने चली गई अब तो रोज सबादीदी हमारे घर आई और हिंदी पढ़ कर चली जाती ।

मेरे बाबा जी ६० वर्ष के बुजुर्ग थे उनकी एक आदत थी कि वह मेरे घर आने वाले हर व्यक्ति से कहते थे राम-राम। अब तो सबा दीदी रोज बाबा से राम-राम करती और सलाम भी ।मुझे उनकी यहआदत बहुत अच्छी लगती ।उनके कपड़े जेवर मुझे रोज नए सौंदर्य के दर्शन कराते मैं सबा दीदी के इसी सौंदर्य को देखने के लिए कभी पानी देने के बहाने ,कभी कोई किताब लेने के लिए उनके आसपास ही घूमती रहती। वह मुझे देखकर कहती अपूर्वा तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है ?अच्छी चल रही है दीदी मैं उत्तर देती ।

एक दिन मैंने दीदी से पूछा दीदी आपका नाम का अर्थ क्या है सुबह ।की हवा वह मुस्कुराते हुए बोली मैंने कहा हां दीदी आप तो सच में सुबह की ताजी हवा ही है ।एक दिन मुझे पता चला की सबा दीदी को शेरो शायरी का भी शौक है वह अपनी कह्पी के पीछे के पन्नों पर शेर लिखती और कभी-कभी मुझे सुनाती जब मुझे उर्दू के शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता तो वह बताती ऐसे ही मैं कभी उनसे पूछती?दीदी आपका कुर्ता तो बहुत अच्छा सिला है आपका ये दुपट्टा कहां का है बहुत सुंदर लग रहा है ।वह कहती यह जंफर हमारी अम्मी ने सिला है और यह दुपट्टा अब्बू पाकिस्तान से लाए हैं और फिर मैं अपने साधारण सिले हुए कपड़ों की तुलना उनके जंपर सलवार से करने लगती। वह कहती मैं तुम्हारे लिए जंपर बनवा दूं अम्मी से लेंकिन तुम पहनो गी नहीं ,हमारा तुम्हारा पहनावा अलग है अपूर्वा । हां दीदी हम ऐसा नहीं पहन सकते पर आप तो बहुत सुंदर लगती है दीदी इन कपड़ो में ।इस तरह धीरे-धीरे दिन बीते गए साल के अंत का पता चला की सबा दीदी का निकाह हो गया और वह सऊदी चली गई। फिर तो मेरा उनका कभी मिलना नहीं हुआ मैं भी एम ए करने के बाद अपनी रिसर्च में लग गई इसी बीच पता चला की सबा दीदी के पति की मृत्यु हो गई और उनके बेटा भी है उनके पति को ब्रेन ट्यूमर था। मुझे बड़ा अफसोस हुआ लेकिन मेरा उनसे मिलना नहीं हो पाया।

विवाह के बाद मेरे भी दो बच्चे हो गए और मैं भी अपनी गृहस्थी में लगी रही ।एक दिन शाम को फोन पर एक नंबर आया उधर से आवाज सबा दीदी की थी हेलो अपूर्वा में सबा बोल रही हूं सब खैरियत तो है तुम कैसी हो ?अरे सबा दीदी आपको मेरा नंबर कहां से मिला आप तो बाहर थी कब आई मैंने कई प्रश्न एक साथ कर दिए ।हां मैं यहीं लखनऊ में हूं तुम्हारी मदद चाहिए अपूर्वा ।हां दीदी बताइए। मेरा बेटा इस बार दसवीं कक्षा में है उसे हिंदी में कुछ पूछना है तुम बता दोगी ना उसको जैसे गुरु जी हमको बताते थे अब तुम बता दो हां दीदी क्यों नहीं ,आप रविवार को घर आ जाइए बेटे को लेकर मैंने कहा। मेरा मन सबा दीदी का वही सौंदर्य देखने के लिए मचल रहा था। उन्होंने फोन काट दियात्र?

क्या सबा दीदी अभी भी वैसी होंगी उनका बेटा तो बहुत बड़ा हो गया है यही सोचते सोचते कब नींद आ

गई पता ही नहीं चला रविवार को सुबह से ही हलुआ और कचौड़ी बनाकर मैं उनका इंतजार करने लगी करीब ११:०० बजे सबा दीदी मेरे सामने खड़ी थी ।इतने दिनों बाद उनको देखकर मैं असमंजस में पड़ गई । उन्होंने आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया पीछे देखा एक सांवला सा पै स्मार्ट सा लड़का खड़ा था ।आंटी नमस्ते मैं माजिद हूं वह बोला अंदर आओ बेटा मैंने कहा नाश्ता लगा कर । मैं सबा दीदी को गौर से देखा हो तो साधारण कपड़े का सूट पहने, सफेद दुपट्टा ओढ़े कोई भी जेवर उनके शरीर पर नहीं था । वह मुझे आज सुबह की ताजी हवा नहीं बल्कि शाम का ढलता हुआ सूरज लग रही थी शायद जिंदगी की जिम्मेदारियां के थपेड़ों ने उन्हें ऐसा बना दिया था ।

माजिद के सवालों को बताने के बाद मैं दीदी के पास बैठ गई वह बोली आज तो मैं इसके लिए आई थी फिर किसी दिन बैठकर बात करेंगे । मुझे उनका बदला हुआ रूप बिल्कुल अच्छा नहीं लगा कितनी सुंदर थी वह लेकिन आज उनके गोरे रंग पर कितने काले धब्बे पड़ गए थे।अब तो अक्सर दीदी से बात होती वह बताती उनकी अम्मी अब्बू भाई सब उनकी मदद करते हैं यह लखनऊ में भी अपने भाई के पास रह रही है बेटे की पढ़ाई के लिए बेटा पढ़ाई में अच्छा है अगर कहीं निकल गया उनकी जिंदगी कट जाएगी मेरा क्या है आधी उम्र तो कट गई बस अब क्या करना है ।

एक दिन मैंने धीरे से पूछा दीदी आपने दोबारा शादी नहीं कि वे मुस्कुरा कर के बोली मेरे नसीब में सुख नहीं है अपूर्वा ।मैं चुप हो गई उनकी दर्द भरी आवाज सुनकर और कुछ कहने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी ।

माजीद का रिजल्ट आ गया ६४ पास हो गया दीदी ने बताया कि माजिद के लिए उन्होंने कोचिंग लगा दी है वह अनवर साहब उसे बहुत ध्यान से पढ़ाते हैं और अपने बेटे की तरह उसकी देखभाल करते हैं। इसी बीच पता चला की सबा दीदी की अम्मी उनके पास आई और गिरने के कारण उनके पैर में फ्रैक्चर हो गया और दीदी उनकी देखभाल कर रही है उसे समय मुझे उनका सुनाया हुआ शेर याद आया लोग बेटों से ही रखते हैं तवक्को,लेकिन बेटियां अपने बुरे वक्त में काम आती है।

फिर एक साल ऐसे ही निकल गया कभी-कभी दीदी का फोन करके हाल-चाल पूछ लेती ।

एक दिन शाम को चाय बनाने जा रही थी कि दरवाजे की घंटी बजी मैंने दरवाजा खोला तो सबा दीदी खड़ी मुस्कुरा रही थी मैंने कहा अरे दीदी आप अचानक कैसे? बताते हैं अंदर तो आने दो। आज मैंने देखा की सबादीदी कुछ अलग सी लग रही है उन्होंने हल्का गुलाबी रंग का सुंदर सा कुर्ता पहना था कानों में छोटे झुमके गले में पतला सा नेकलेस और आंखों में काजल लगाई प्यारी सी लग रही थी मेरे मुंह से निकल ही गया दीदी आज आप बहुत प्यारी लग रही हो ऐसे ही रहा करिए ना। वे हंसने लगी हां तुम्हारी दुआ लगी है मुझे देखो मेरा निकाह हो गया अपूर्वा मैं आश्चर्य देखने लगी, कहां दीदी आपने बताया नहीं हां अपूर्वासब कुछ अचानक ही हुआ तुम्हें तो पता है कि मेरे पहले शौहर के इंतकाल के बाद मुझे कई लोगों ने कहा कि दोबारा शादी कर लो पर मैं नहीं की क्योंकि माजिद उस समय बहुत छोटा था यदि मैं उसे समय शादी कर लेती तो वह उपेक्षित हो जाता, शायद मेरे और भी बच्चे हो जाते तो मैं उसे उतना ध्यान नहीं दे पाती। पर अब मुझे ऐसा व्यक्ति मिला है जो मुझे इस उम्र में माजिद के साथ अपनाना चाहता है तो मैं मना नहीं कर पायी।

अच्छा तो कौन है मेरे जीजा जी जो हमारे हवा को ले गए मैंने हंसते हुए पूछा ? अनवर साहब मैंने तुम्हें बताया था की माजिद को कोचिंग में भेजा था वही अनवर साहब एक दिन मुझे पता चला कि वह बहुत बीमार हैउनके पास कोई नहीं है तो मैं तो मैं माजिद को साथ लेकर उनके घर गई डहक्टर को बुलाया उन्हें चाय जूस पिलाया ऐसे ही हमारी मुलाकात आगे बढी मेरी अम्मी जब मेरे पास थी और गिर गई थी तब भी अनवर साहब ने मेरी बहुत मदद की फिर रोज हमारे घर आते और एक दिन मम्मी के सामने ही उन्होंने निकाह का प्रस्ताव रखा वह बोले खुदा ने ही मेरी तनहाई पर तरस खा कर ,फलक से मेरे लिए आपको उतारा है। बस उसके बाद मै इंकार नहीं कर पाए मैंने दीदी से पूछा? दीदी अब आप जीजा जी से पूरी तरह खुश है? तो सबा दीदी ने मेरा हाथ दबाते हुए कहा हर एक को गिला है।मुझे बहुत कम मिला है। अपने आसपास देख जरा, क्या इतना भी औरों को मिला है।। और हम दोनों खिल खिलाकर हंस दिए।

डा अपूर्वा अवस्थी
लखनऊ

Fitness केवल वज़न कम या अधिक करने अथवा मोटा या पतला होने को नहीं कहते

Fitness means

F resh

I ntelligent

T ension free

N onegativity

E nergetic

S tylish

S ocial

F itness means

E njoy colorful life

Jagruti Nutrition Club Of India * 8004975834 *

“पहला सुख निरोगी काया”

70% बिमारियों का कारण मोटापा होता है

स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज

JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

साहित्य सरोज पत्रिका का प्रतिभा निखार की दिशा में एक नया कदम

यदि आप की रूचि शार्ट फिल्म, मॉडलिंग, फैंशन-शो, रैंप वाक,गायन, लोकनृत्य एंकरिंग, कहानी या न्यूज वाचन में है। और आपको अनुभव हेतु कार्य या आनलाइन प्रशिक्षण की जरूरत है तो आप हमारे साहित्य सरोज शार्ट-फिल्म समूह से जुड़े।

9451647845

हमें भी पहचानें।

साहित्य सरोज प्रतिभा परिचय कार्यक्रम एवं शार्ट फिल्म, मॉडलिंग समूह से जुड़े और पाये प्रशिक्षण और अनुभव दे अपनी प्रतिभा को नई पहचान

9451647845

आवश्कता है, कम्पनीयों के विज्ञापन एवं सर्वे कार्यक्रम के लिए योग्य महिला की मेल करें

bababazarindia@gmail.com